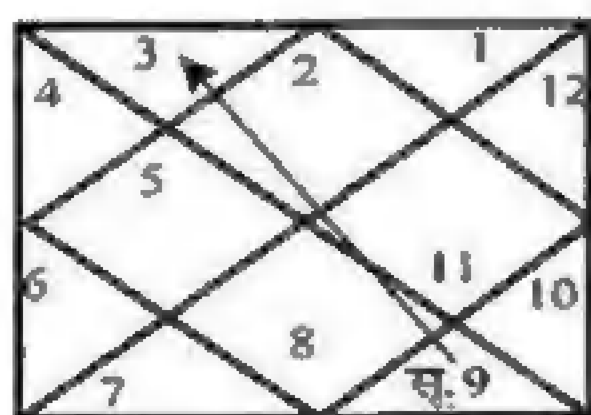
मारकेश होते हुए भी जातक की उन्नति में सहायक होकर उसके व्यापार एवं पराक्रम को बढ़ायेगा।

7. **सूर्य + राहु**—राहु सूर्य के तेज को नष्ट करता है। वृश्चिक राहु की शत्रु राशि है। यहां पर यह युति जीवन साथी से वैमनस्य करायेगी तथा कई बार तलाक (बिछोह) की स्थिति भी आ सकती है।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में



वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। यहां सूर्य खड्डे (अष्टम घर) में होने से '**सुखभंग योग**' की सृष्टि कर रहा है। अष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि धन भाव पर विद्यमान है। यद्यपि सूर्य अपनी राशि से पंचम स्थान एवं अपने मित्र (बृहस्पति) के घर में है। तथापि सूर्य अष्टम जाने में अपना शुभ फल खो देता है। अष्टम भाव दुष्ट स्थान है। यहां सूर्य से प्राप्त होने वाले शुभ फलों की आशा धूमिल हो जाती है।

विशेष—जातक के स्वयं के भाग्य का हाल पापी ग्रहों की अच्छी या बुरी हालत पर निर्भर रहेगा। फिर भी जातक उजड़े मकानों को बसाने वाला धनवान दौलतमन्द होगा।

दशा—सूर्य की दशा अन्तर्दशा में चन्दन, केसर का दान, पीले पुष्प शिव मन्दिर पर चढ़ाने से दशा अच्छी होगी।

निशानी—जातक प्रारम्भ में किराये के मकान में रहता है। स्वगृह निर्माण में बाधा आती है मगर सन्तान पर ध्यान न दे तो वह आवारा हो जाती है।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। अष्टम भाव में 'धनु राशिगत' यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। सूर्य आठवें होने से 'सुखभंग योग' तथा बुध आठवें हो जाने से 'धन हीनयोग' एवं 'सन्ततिहीन योग' की क्रमशः सृष्टि होती है। फलतः यहां, इस स्थान पर यह योग ज्यादा सार्थक नहीं है। ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु, सुख ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। माता की सम्पत्ति सम्भवतः इसे न मिले, फिर भी योग के कारण अन्तिम सफलता जातक को मिलेगी। जातक एक सफल व्यक्तित्व का धनी होगा।

2. **सूर्य + चन्द्र**—ऐसे जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या सांय सूर्यास्त के पहले पांच बजे के आस-पास होता है। जातक को जीवन में परिजनों का सहयोग नहीं मिल पाता।

3. **सूर्य + शनि**—धन हानि, मान हानि जैसी घटना हो सकती है। कारागार जाने की नौबत आ सकती है परन्तु पिता की मृत्यु के बाद भाग्योदय होगा।

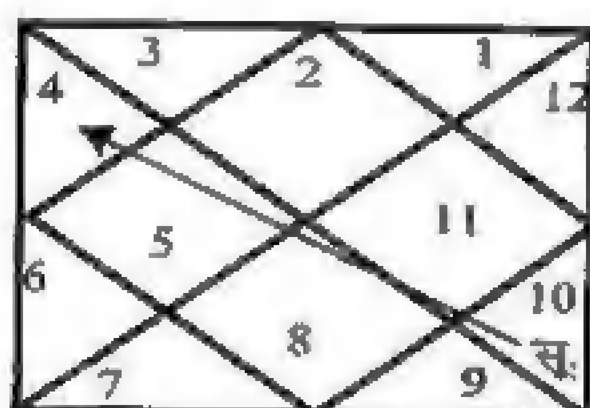
4. **सूर्य + शुक्र**—लग्नेश शुक्र का आठवें जाना बहुत अशुभ है। षष्टेश के आठवें जाने से '**हर्ष योग**' बना। इस कारण शुक्र का अशुभत्व नष्ट हो गया परन्तु परस्पर शुभ ग्रहों की युति सुख व पराक्रम में बाधक है।

6. **सूर्य + शुक्र**—आगे उन्नति होने की सम्भावना बनी रहती है पत्नी रोग ग्रस्त एवं कलहकारिणी होती है।

5. **सूर्य + बृहस्पति**—सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश की युति अष्टम स्थान में कष्टायक है परन्तु अष्टमेश अष्टम में स्वग्रही होने से 'सरल योग' बना फलतः जातक को दीर्घायु प्राप्त होगी तथा दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा।

6. **सूर्य + राहु**—राहु सूर्य के तेज को नष्ट करता है। अष्टमस्थ राहु सूर्य के साथ होने से पिता की आयु कम होती है।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में



वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। यहां सूर्य शत्रुक्षेत्री होकर भाग्य भवन में बैठा है एवं पराक्रम स्थान में कर्क राशि को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। सूर्य अपनी राशि सिंह में छठे स्थान पर परम शत्रु की राशि मकर में बैठा उद्विग्न है। नवम भाव पिता का है और सूर्य पिता का प्रतिनिधि है। अतः पिता की प्रतिष्ठा और पिता का जीवन स्वस्थ नहीं रखता। पिता-पुत्र के सम्बन्ध भी स्वस्थ नहीं होते। केन्द्राधिपति त्रिकोण में कारक स्थान में होने से जातक महान पराक्रमी होगा तथा शत्रुओं की नींद उड़ा देगा, पर षड्यन्त्र का शिकार होगा।

निशानी—जातक की किस्मत 34 वर्ष की आयु के बाद चमकेगी।

उपाय—पीतल या तांबे के बर्तन पनिहारे पर रखें। रोज चमकायें तो किस्मत चमकेगी।

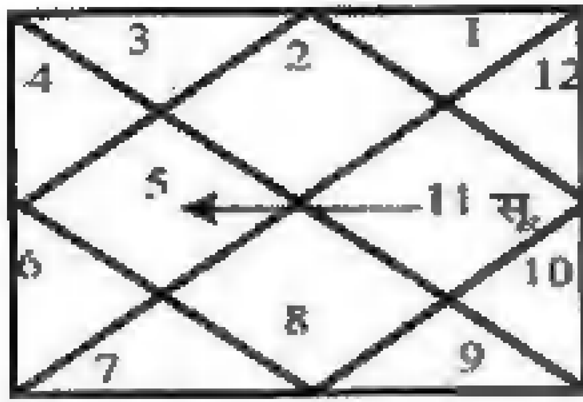
दशा—सूर्य की दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध :

1. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। नवम स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि पराक्रम स्थान पर होगी। जातक बुद्धिमान एवं पराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय 24 वर्ष की आयु में हो जाएगा। जातक धनवान होगा पर सूर्य यहां शत्रु क्षेत्री होने से हल्का संघर्ष होगा। जातक की उन्नति में माता एवं सभी की मदद बराबर बनी रहेगी।
2. **सूर्य + शनि**–स्वगृही भाग्येश के साथ सुखेश सूर्य की युति उन्नति कारक है। जातक व्यापारी होगा। परस्पर शुभ ग्रहों की युति के कारण व्यापार-व्यवसाय में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे।
3. **सूर्य + शुक्र**–लग्नेश भाग्य स्थान में सुखेश सूर्य के साथ होने से जातक भाग्यशाली होगा। उसे अल्प प्रयत्न का ज्यादा लाभ मिलेगा। परस्पर शत्रु ग्रहों के युति के कारण थोड़ा संघर्ष रहेगा।
4. **सूर्य + मंगल**–सुखेश सूर्य के साथ सप्तमेश, खर्चेश मंगल उच्च का भाग्य स्थान में होने से जातक का भाग्य विवाह के बाद चमकेगा। जातक महान पराक्रमी होगा।
5. **सूर्य + चन्द्र**–ऐसे जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को दोपहर तीन बजे के आस-पास होता है। जातक को माता-पिता का सुख मिलता है।
6. **सूर्य + बृहस्पति**–सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति की युति नवम स्थान में होगी। यहां बृहस्पति नीच का होगा। यह युति व्यापार-सुख में वृद्धि कारक साबित होगी।
7. **सूर्य + राहु**–राहु सूर्य के तेज को नष्ट करता है। यहां समराशि में होने से यह इतना हानिकारक नहीं है। फिर भी भाग्योदय काफी दिक्कतों के बाद देरी से कराता है।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में

वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। यहां सूर्य केन्द्रवर्ती होकर शत्रु क्षेत्री है तथा अपने ही घर चतुर्थ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। सूर्य यहां दिग्बली है। सिंह राशि में सप्तम स्थान पर है। चतुर्थेश सूर्य की दशम भाव में स्थिति चतुर्थ व दशम दोनों भाव को बलवान करती है।



फलतः ऐसे जातक में असीम शक्ति होती है। ऐसे जातक प्रखर वक्ता होते हैं। ऐसे जातक राजनैतिक व धार्मिक संगठनों के प्रमुख होते हैं। इनके भाषणों में, सभाओं में भीड़ का समुद्र होता है। ऐसा जातक अच्छे सेहत, अच्छा सम्मान एवं उत्तम धन-सम्पत्ति का स्वामी होता है।

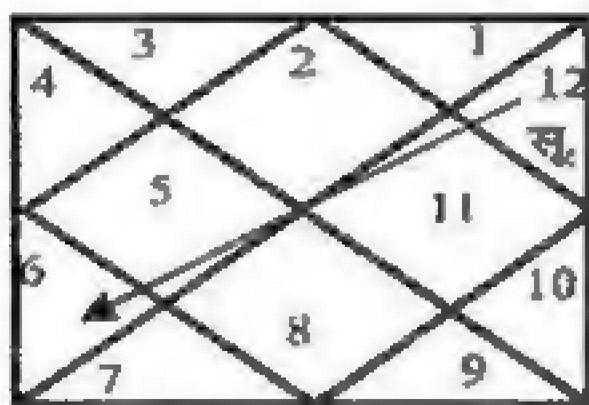
दशा–सूर्य की दशा उत्तम फल देगी।

उपाय–सिर पर पगड़ी, साफा या टोपी पहने तो भाग्योदय जल्दी होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध :

1. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। दशम स्थान में 'कुम्भ राशिगत' यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। यहां सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रह केन्द्रवर्ती होंगे तथा 'कुलदीपक योग' की सृष्टि करेंगे। दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ भाव पर होगी। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। जातक धनवान होगा। जातक को पैतृक/मातृक सम्पत्ति मिलेगी। खुद का उत्तम मकान खुद बनायेगा। वाहन सुख भी उत्तम होगा। जातक जीवन में विभिन्न संसाधनों से सम्पन्न एक सफल व्यक्ति होगा।
2. **सूर्य + शनि**–सुखेश सूर्य के साथ शनि स्वग्रही 'शशयोग' करता हुआ जातक को राजा के समान ऐश्वर्यशाली व प्रतापी बनायेगा। जातक को माता-पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
3. **सूर्य + शुक्र**–लग्नेश शुक्र केन्द्र में 'कुलदीपक योग' के साथ जातक को सौभाग्यशाली बनाता है। जातक ऐश्वर्यवान व प्रतापी होगा।
4. **सूर्य + चन्द्र**–ऐसे जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को दिन के बारह बजे के आस-पास होगा। जातक को माता-पिता दोनों की सम्पत्ति मिलेगी।
5. **सूर्य + मंगल**–सुखेश सूर्य के साथ सप्तमेश, खर्चेश मंगल की युति अशुभ होते हुए भी शुभफलदायक है क्योंकि जातक उत्तम भू-सम्पत्ति एवं भवन का स्वामी होगा।
6. **सूर्य + बृहस्पति**–सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति की युति यद्यपि निष्फल है तथापि व्यापार वृद्धि की द्योतक है। जातक के पिता की समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रहेगी।
7. **सूर्य + राहु**–सूर्य राहु के तेज को नष्ट करता है। यहां राहु राज्य पक्ष से दण्ड दिला सकता है।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में



वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रुभाव रखता है। यहां सूर्य लाभ स्थान में बैठा हुआ पंचम भाव (कन्या राशि) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। सूर्य अपनी राशि से अष्टम स्थान में है परन्तु मित्र ग्रह (बृहस्पति) की मीन राशि में है। यह भाव लाभ व उपचय स्थान है यहां पर आकर सभी ग्रह शुभ फल देते हैं।

ऐसा जातक पराक्रमी, धार्मिक, ज्योतिष व यन्त्र-तन्त्र विद्या का ज्ञाता होता है।

निशानी–जातक पूर्ण धर्मी होगा परन्तु अपनी पसन्द व जिद् को पूरा करने हेतु अधर्म आचरण भी कर सकता है।

दशा–सूर्य की दशा उत्तम फल देगी।

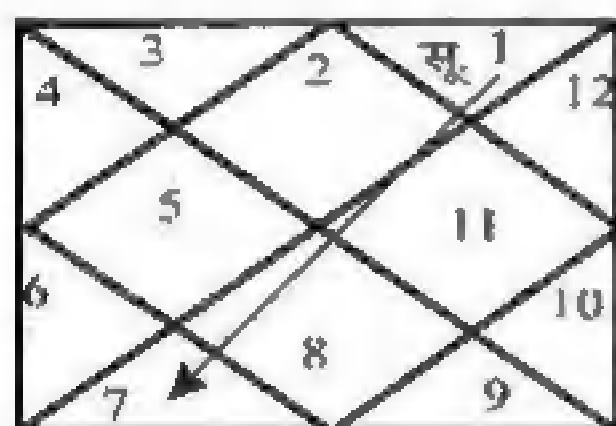
उपाय–मूली, गाजर, रात को सिरहाने के नीचे रखकर प्रातः काल धर्म स्थान में देने से सूर्य शुभ फल देगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। एकादश स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। यहां जिस घर में बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव पर होगी जो बुध का निजी भवन है। फलतः जातक बुद्धिमान गुप्त विद्याओं मन्त्र-तन्त्र ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता होगा, शिक्षित होगा। उसकी सन्तति भी शिक्षित होगी। जातक व्यापार के माध्यम से तरक्की प्राप्त करेगा। घर का मान एवं सभी भौतिक सुख उसे सहज में प्राप्त होंगे।
2. **सूर्य + बृहस्पति**–जातक को पुत्र सन्तति अवश्य होगी। दो पुत्रों का लाभ होगा ही बृहस्पति स्वगृही होगा। जातक आध्यत्मिक व्यक्ति होगा।
3. **सूर्य + चन्द्र**–ऐसे जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय के पूर्व प्रातः चार बजे के आस-पास होता है।
4. **सूर्य + शुक्र**–यहां शुक्र उच्च का होगा। लग्नेश उच्च का होने से जातक प्रतिभाशाली, धनी, मानी व अभिमानी व्यक्ति होगा।
5. **सूर्य + शनि**–सुखेश सूर्य के साथ भाग्येश, दशमेश शनि की युति लाभ स्थान में शुभ फलदायक है। जातक उद्योगपति होगा।

6. **सूर्य + मंगल**–सुखेश सूर्य के साथ, सप्तमेश खर्चेश मंगल की युति लाभ स्थान में शुभ है। जातक को तीन पुत्र होने की सम्भावना रहती है।
7. **सूर्य + राहु**–राहु सूर्य के तेज को नष्ट करता है। ऐसे जातक के लाभ में, व्यापार-व्यवसाय में कुछ न कुछ न्यूनता बनी रहती है।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में



वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। यहां सूर्य उच्च का होकर बारहवें स्थान पर जाने से 'सुखभंग योग' बना रहा है। सूर्य की सम्पूर्ण दृष्टि षष्ट्म भाव (तुला राशि) पर है सूर्य यहां सिंह राशि से नवम स्थान में होकर उच्च का है।

ऐसे जातक भौतिकवादी, हठी एवं निर्भीक होते हैं। किसी से डरते नहीं।

निशानी–वैसे ऐसा जातक पूर्ण सुखी होता है हरी-भरी फुलवाड़ी का स्वामी होता है, परन्तु पराई पंचायती में अपनी रातों की नींद खराब करेगा। अपने परिवार की सुख-शान्ति को नष्ट करेगा।

दशा–सूर्य की दशा मिश्रित फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

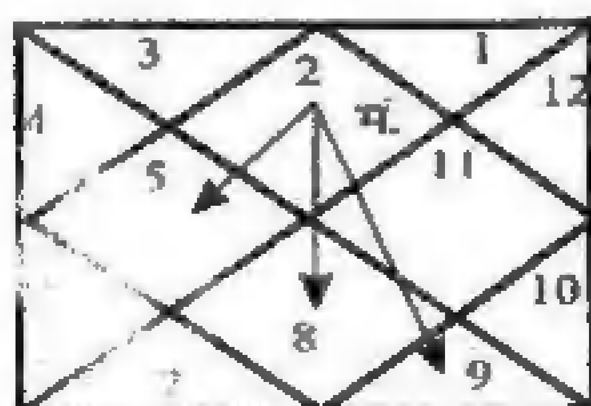
1. **सूर्य + बुध**– 'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। द्वादश स्थान में सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहां उच्च का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि छठे भाव पर होगी। फलतः जातक बुद्धिमान एवं तेजस्वी होगा। यात्राओं में कमायेगा। विदेश जायेगा। पर पैसा पास में टिकेगा नहीं। शत्रु व रोग का समूल नाश करने में पूर्ण समर्थ होगा। जातक जीवन में कामयाब एवं सफल व्यक्तियों की श्रेणी में अग्रण्य होगा।
2. **सूर्य + चन्द्र**–जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को होगा। माता-पिता एवं परिजनों के सहयोग की कमी जीवन पर्यन्त बनी रहेगी।
3. **सूर्य + शुक्र**–शैय्या सुख का नाश
4. **सूर्य + मंगल**–जातक को अत्यधिक कामी एवं एवं विलासी बना देगा।
5. **सूर्य + राहु**–जातक की नींद उड़ा देगा। शैय्या सुख नहीं।

6. **सूर्य + शनि**–जातक के पिता सुख शैय्या सुख में कमी करेगा। सूर्य का शनि नीच का होने में **'नीचभंग राजयोग'** बना। फलतः जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य भोगेगा परन्तु भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य + बृहस्पति**–सुखेश सूर्य के साथ लाभेश व अष्टमेश बृहस्पति व्यय भाव 'सरल योग' की सृष्टि करता है। जातक दीर्घायु प्राप्त करेगा तथा ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होगा।

❑❑❑

वृषलग्न में मंगल की स्थिति

वृषलग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में



वृषलग्न में मंगल सप्तमेश व खर्चेश है। मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने से अशुभ फलदाता है। वृष राशि में लग्नस्थ मंगल व्यक्ति को विलासी बनाता है। ऐसा जातक भोग और ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु उचित और अनुचित दोनों प्रकार के प्रयास करता है। मंगल लग्न में होने से कुण्डली मांगलिक [illegible] ऐसा व्यक्ति महत्वकांक्षी होता है।

[illegible]–द्वादशेश मंगल में भोग विलास का दोष अधिक होता है। लग्न में बैठे वृष [illegible] मंगल की दृष्टि चतुर्थ भाव (सिंह राशि) सप्तम भाव (वृश्चिक राशि) एवं अष्टम भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसा जातक निर्भीक होगा। दीर्घ आयु वाला होगा। जातक माता का भक्त होगा। कामुकता के कारण पत्नी का दीवाना होगा।

निशानी–ऐसा जातक अपनी किस्मत आप चमकायेगा।

दशा–मंगल की दशा मिश्रित फल देगी परन्तु जातक को तेजगति के वाहन से बचना चाहिए।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चन्द्र**–लग्न में चन्द्र+मंगल की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की सप्तदेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी जहां चंद्रमा उच्च का वृष राशि में होगा। फलतः यह 'महालक्ष्मी योग' बनायेगा। लग्न स्थित इन दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ स्थान (सिंह राशि) पर, सप्तम स्थान (वृश्चिक राशि) एवं अष्टम स्थान (धनु राशि) पर होगी। मंगल अपने ही घर को देखेगा। फलतः जातक

का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। देशाटन व यात्राओं के द्वारा जातक का पराक्रम बढ़ेगा।

2. **मंगल + शनि**—भाग्येश, दशमेश शनि का मंगल के साथ लग्न स्थान में होना शुभ फलदायक है। जातक धनी होगा। उद्यमी होगा। पर बहुत हठी होगा। क्रोधी भी होगा।

3. **मंगल + शुक्र**—के कारण जातक स्त्री भोग सुख हेतु बलात्कारी भी हो सकता है। अत्यधिक वीर्य क्षरण के कारण निस्तेज, होकर बीमार भी हो सकता है। परन्तु **'मालव्य योग'** के कारण जातक धनी होकर राजा तुल्य ऐश्वर्य भोगेगा।

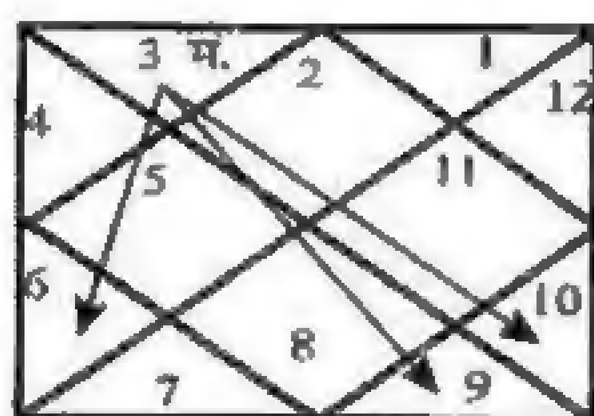
4. **मंगल + बृहस्पति**—सप्तमेश मंगल की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति के साथ लग्न में युति दो मारकेश ग्रहों की लग्न में युति कहलायेगी। परन्तु बृहस्पति की दृष्टि पंचम, सप्तम एवं नवम पर होने से गृहस्थ, सन्तान व भाग्य सुख के लिए उत्तम है।

5. **मंगल + सूर्य**—सुखेश सुर्य की युति लग्नस्थ मंगल के साथ चोट, दुर्घटना का भय देता है।

6. **मंगल + बुध**—धनेश, पंचमेश बुध लग्न में मंगल के साथ होने से जातक को धन-ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी।

7. **मंगल + राहु**—मंगल के साथ राहु या केतु हो तो जातक धोखेबाजी, स्मगलिंग, उग्रवाद एवं बलात्कार की प्रेरणा में प्रेरित रहेगा।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में



वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एवं व्ययेश है। मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने के कारण अशुभ फलदाता है। यहां धन भाव में मिथुन राशिगत मंगल व्यक्ति को विनम्र, सहिष्णु, पुत्र-मित्र कुटुम्बीजनों का हितचिन्तक बनाता है।

दृष्टि—द्वितीय स्थान में मिथुन राशिगत मंगल पंचम भाव (कन्या राशि) अष्टम भाव एवं नवम भाव (मकर राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: ऐसा जातक पुत्र सन्तति से युक्त, दीर्घायु वाला एवं प्रबल भाग्य का स्वामी होता है।

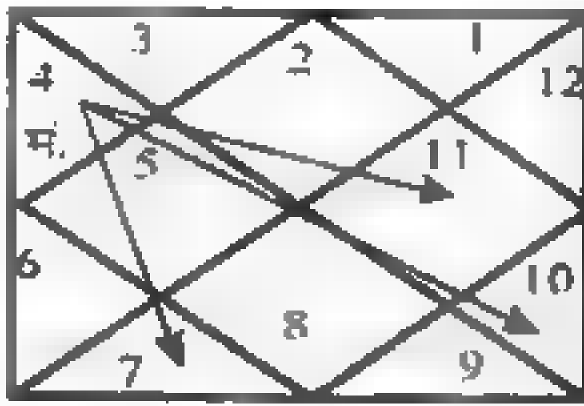
निशानी—जातक ज्योतिष-तन्त्र एवं गुप्त विद्याओं का जानकार होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध :

1. **मंगल + चन्द्र**—धन स्थान में चन्द्र+मंगल की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी जहां चंद्रमा शत्रुक्षेत्री (मिथुन राशि) होगा। फलतः यहां लक्ष्मी योग की सृष्टि होती है। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम स्थान (कन्या राशि) अष्टम स्थान (धनु राशि) एवं भाग्य स्थान (मकर राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः विवाह के बाद जातक का पराक्रम बढ़ेगा। जातक धनवान होगा। धन का संकलन चिरस्थाई रह पायेगा या नहीं इसका निर्णय धनेश बुध ग्रह की स्थिति पर निर्भर करता है।
2. **मंगल + बुध**—यद्यपि बुध मंगल का शत्रु है। तथापि बुध यहां त्रिकोण का स्वामी होने में बहुत शुभ फलकारी है। यह युति जातक का धन-ऐश्वर्य बढ़ाती है। बुध यहां स्वगृही होने में जातक कुशल वक्ता एवं अति धनी व्यक्ति होगा।
3. **मंगल + शुक्र**—ऐसा जातक अभिनय, कला, संगीत के क्षेत्र में प्रतिपल कुछ न कुछ नया करने के लिए उत्साहित रहता है। भृगुसूत्र के अनुसार ऐसे जातक के नेत्रों में विकार होता है।
4. **मंगल + बृहस्पति**—ऐसा जातक धार्मिक होता है। ज्योतिषी होता है। अध्यात्म व धर्म के क्षेत्र में कुछ न कुछ नया करने की प्रवृति रहती है। जातक तकनीकी कार्य एवं व्यापार के द्वारा यथेष्ट धन कमायेगा।
5. **मंगल + शनि**—मंगल+शनि की युति वाणी में अहंकार एव धूर्तता को बताती है अथवा नेत्र विकार भी सम्भव है। भाग्येश, दशमेश के धन स्थान में जाने में जातक लॉटरी, सट्टा या अनैतिक कार्यों से फटाफट धनवान होना चाहेगा।
6. **मंगल + सूर्य**—सुखेश सूर्य का धन स्थान में मंगल के साथ होना वाणी में अधैर्यता, उतावलापन लायेगा। जातक सुख प्राप्ति हेतु उत्साहित रहेगा एवं नये-नये तरीकों का इस्तेमाल करेगा।
7. **मंगल + राहु**—वाणी में स्खलन होगा। जातक झूठ ज्यादा बोलेगा। जातक नेत्र रोगी होगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा तथा अत्यधिक फिजूल खर्ची के कारण कई बार जातक परेशानी या कर्ज में उलझ जायेगा।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में

वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एवं व्ययेश है। मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने से अशुभ फलदाता है। यहां तृतीयस्थ मंगल कर्क राशि का होगा। कर्क मंगल की नीच राशि है। यहां पर 28 अंशों पर होने से मंगल परम नीच का हो जाता है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार उपचय स्थानों में पाप ग्रह शुभ फलदायक हो जाते हैं



इसलिए तृतीयभाव में मंगल की यह अवस्था हानिरहित है। फिर तृतीयस्थ यह मंगल मेष राशि में चौथे एवं वृश्चिक राशि में नवमें स्थान पर होने से धन-पद-प्रतिष्ठा व यश को देने वाला कहा गया है। ऐसा जातक परिश्रमी, पराक्रमी युद्ध प्रिय, सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टि से सम्पन्न होता है।

दृष्टि—तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि षष्टम भाव (तुला राशि) नवम भाव (मकर राशि) एवं दशम भाव (कुंम्भ राशि) पर होगी। फलतः ऐसा जातक रोग, ऋण व शत्रुओं का नाश करन में सक्षम, भाग्यशाली एवं उद्योगपति (यथेष्ट धन का स्वामी) होता है।

निशानी—जातक आप अकेला भाई नहीं होगा।

दशा—मंगल की दशा जातक का पराक्रम बढ़ाने में सहायक होगी। जातक का भाग्योदय करायेगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

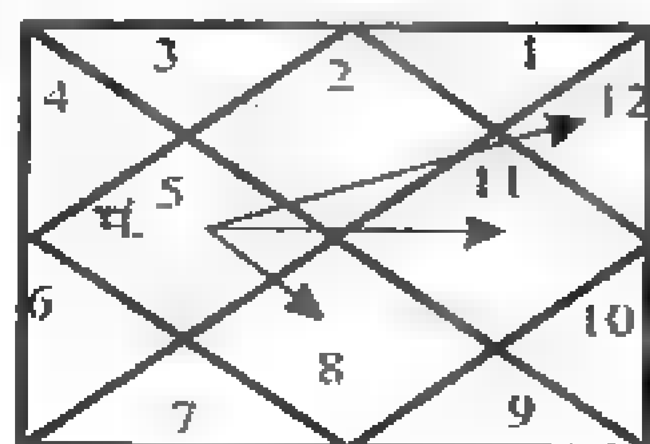
1. **मंगल + चन्द्र**—तृतीय स्थान में चन्द्र+मंगल की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी। यहां चंद्रमा स्वगृही होगा। फलतः यहां 'महालक्ष्मी योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे स्थान (तुला राशि) भाग्य भवन (मकर राशि) एवं दशम स्थान (कुम्भ राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। ऐसे जातक का भाग्योदय विवाह के बाद अथवा प्रथम भाई-बहिन के जन्म के बाद त्वरित गति से होगा। चंद्रमा स्वगृही एवं मंगल नीच का होगा फलतः 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। फलतः जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी एवं धनवान होगा।
2. **मंगल + सूर्य**—सुखेश सूर्य तृतीय में होने से जातक आप अकेला भाई न होगा। बड़े भाई की मृत्यु सम्भव है। जातक के दायें हाथ पर चोट, दुर्घटना का भय रहेगा।
3. **मंगल + शुक्र**—लग्नेश शुक्र के तृतीयस्थ मंगल के साथ जाने से जातक महान् पराक्रमी होगा। उसे भाई बहन दोनों का सुख होगा। उसे मित्रों का लाभ मिलता रहेगा।
4. **मंगल + बृहस्पति**—मंगल बृहस्पति की युति से यहां **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। फलतः दोनों ग्रह शुभ फलदाई ज्यादा हो जायेंगे। जातक महान पराक्रमी, तेजस्वी होकर राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

5. **मंगल + शनि**—दशमेश, नवमेश शनि की तृतीयस्थ नीच के मंगल के साथ युति होने से जातक के छोटे भाई की मृत्यु हो जायेगी। जातक अपने परिजनों से द्वेष रखेगा। मित्र मददगार होंगे पर पीठ पीछे बुराई करेंगे।

6. **मंगल + बुध**—धनेश व पंचमेश होकर योगकारक बुध की युति तृतीयस्थ मंगल के साथ धन वृद्धि कारक है। बुध यहां शत्रु क्षेत्री होने से जातक अपनी बहनों में वैमनस्य रखेगा।

7. **मंगल + राहु**—राहु यहां चंद्रमा का शत्रु है राहु चन्द्र तेज को नष्ट करने वाला है। कर्कस्थ राहु मंगल के साथ होने से भाईयों में विद्रोह की स्थिति अथवा परिजनों में विवाह करायेगा। यहां तक की जातक के मित्रों का आचरण संदिग्ध रहेगा।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में



वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एवं व्ययेश है। मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने से अशुभ फलदाता है। यहां चतुर्थस्थ मंगल सिंह राशि का होगा। मंगल यहां दिक्बली है। यह स्थिति कुण्डली को 'मांगलिक' भी बनाती है। जातक धीर-वीर व साहसी होने के साथ साथ उत्तम भूमि व भवन का स्वामी होता है।

दृष्टि—सिंह राशिगत मंगल की दृष्टि सप्तम भाव (वृश्चिक राशि), दसम भाव (कुम्भ राशि), एकादश भाव (मीन राशि) पर होगी। यह मंगल व्यवसाय व नौकरी में उन्नति प्रदान करता है।

दशा—मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक नई भूमि, जमीन-जायदाद खरीद सकता है।

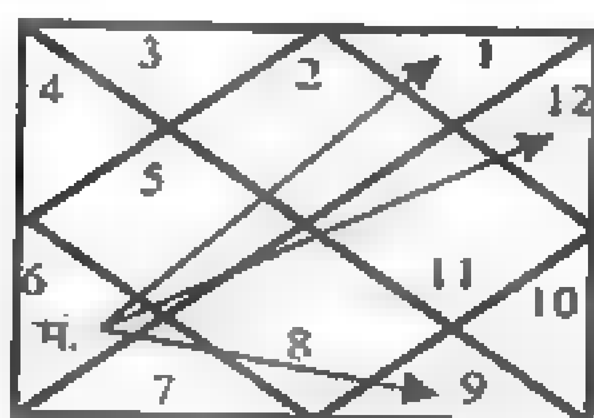
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल + चन्द्र**—चतुर्थ स्थान में चन्द्र+मंगल की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी। यहां चंद्रमा अग्नि राशि में जाकर उद्विग्न होगा। एवं मंगल दिक्बल को प्राप्त करेगा। फलतः 'महालक्ष्मी योग' बनेगा। दोनों ग्रह केन्द्र में बैठकर सप्तम भाव (वृश्चिक राशि) दशम भाव (कुम्भ राशि) एवं एकादश भाव (मीन राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। खेती की भूमि, कृषि से लाभ

होगा। उत्तम वाहन, उत्तम मकान व नौकरी का सुख मिलेगा। जातक समाज का धनी व्यक्ति होगा।

2. **मंगल + सूर्य**–मंगल की सूर्य के लाभ युति यहां 'रविकृत राजयोग' की पुष्टि करता है। जातक को उत्तम नौकरी-व्यवसाय की प्राप्ति होगी।
3. **मंगल + बुध**–मंगल के साथ योगकारक बुध की युति से धन की प्राप्ति तेज होगी। व्यक्ति व्यापार के माध्यम से कमायेगा।
4. **मंगल + शनि**–भाग्येश, दशमेश शनि की युति चतुर्थ भाव में मंगल के साथ होने से शनि अपने घर (कुम्भ राशि) एवं लग्न (वृष राशि) को देखेगा फलतः जातक उद्योगपति या बड़ा व्यापारी होगा।
5. **मंगल + शुक्र**–मंगल शुक्र की युति केन्द्र में श्रेष्ठ फलदायक है। यहां **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि होगी। जातक धनी होगा।
6. **मंगल + बृहस्पति**–बृहस्पति मंगल के साथ केन्द्रस्थ होकर **'केसरी योग'** बनायेगा तथा जातक की आयु एवं धन में वृद्धि करेगा।
7. **मंगल + राहु**–राहु मंगल का शत्रु है। यह माता, भवन एवं वाहन के सुख में हानि पहुंचायेगा। मंगल की दशा में नवीन कार्य सोच-समझ कर करें।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में



वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एवं व्ययेश है। मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने से अशुभ फलदाता है। यहां पंचमस्थ मंगल कन्या राशि का होगा। मंगल बुध की राशि में उत्तम फल देगा। जातक बुद्धिबल से यथेष्ट धन अर्जित करेगा। जातक को अन्नदान प्रिय होगा।

दृष्टि–कन्या राशिगत पंचमस्थ मंगल की दृष्टि अष्टम भाव (धनु राशि), लाभ भाव (मीन राशि) एवं व्यय भाव (मेष राशि) पर होगी। ऐसा जातक ऋण, रोग और शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–कन्या राशि में मंगल वाला जातक स्त्री और शत्रु से डरेगा। जातक को नर सन्तान का सुख मिलेगा।

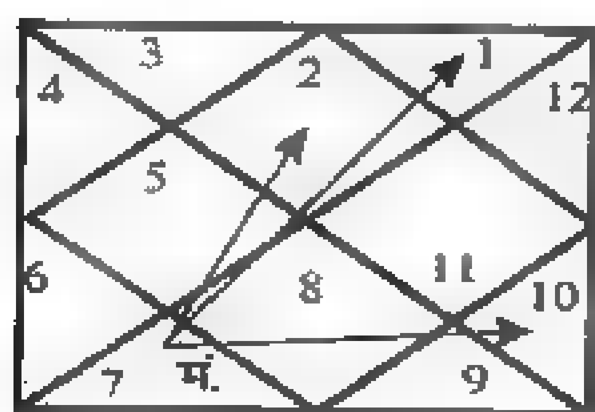
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चन्द्र**–पंचम स्थान में चन्द्र+मंगल युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी। यह 'लक्ष्मी योग' बनायेगी। चंद्रमा

यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (धनु राशि), सप्तम भाव (मीन राशि) एवं द्वादश भाव (मेष राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक धनी होगा। उत्तम सन्तति पुत्र-पुत्री दोनों से युक्त होगा। जातक की सन्तान भी धनवान होगी। जातक की आयु दीर्घ होगी। प्रथम सन्तति के बाद ही जातक का भाग्योदय तीव्र गति से होगा।

2. **मंगल + बुध**—बुध यहां उच्च का होगा। जातक अपनी स्वयं की मेहनत और सन्तान के कारण काफी धन कमायेगा। जातक प्रज्ञावान होगा।
3. **मंगल + सूर्य**—सुखेश सूर्य का त्रिकोण से सम्बन्ध होना उत्तम बात है। जातक को तेजस्वी नर सन्तति की प्राप्ति होगी। स्वयं शिक्षित होगा एवं सन्तान भी शिक्षित होगी।
4. **मंगल + शुक्र**—शुक्र यहां नीच राशि में होगा पर केन्द्र अधिपति का त्रिकोण से सम्बन्ध पाराशर ऋषि ने शुभ माना है। जातक परम भाग्यशाली, परिश्रमी एवं अपने प्रयत्न से आगे बढ़ने वाला व्यक्ति होगा।
5. **मंगल + शनि**—मंगल, शनि की युति पुनः केन्द्र+त्रिकोण सम्बन्धों पर आधारित एवं उत्तम युति होगी। यहां पर जातक चालाक एवं स्वार्थी बुद्धि से युक्त होकर यथेष्ट धन अर्जित करेगा।
6. **मंगल + बृहस्पति**—अष्टमेश का त्रिकोण में जाना शुभ है। परन्तु जातक को विद्या में रुकावट देगा एवं प्रथम सन्तति शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) द्वारा दिलायेगा।
7. **मंगल + राहु**—कन्या राशि राहु का मित्र स्थान है पर मंगल शत्रु है। राहु सन्तति में बाधक का कार्य करेगा। एक-दो मिस डिलीवरी करायेगा। विद्या में भी यथेष्ट लाभ नहीं होने देगा।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति षष्ट्म स्थान में



वृषलग्न में मंगल सप्तमेश व व्ययेश है। मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने से अशुभ फलदाता है। यहां छठे स्थान में मंगल तुला राशि का होगा। सप्तमेश का छठे स्थान में जाने में **'विवाहभंग योग'** एवं **'यात्राभंग योग'** बनता है। ऐसा जातक कामातुर स्वभाव का होगा एवं अपनी शारीरिक ऊर्जा (वीर्य) का अपव्यय करेगा। इसके पत्नी के साथ वैवाहिक सम्बन्ध बिगड़ेंगे।

ज्योतिष सिद्धांत के अनुसार व्ययेश के छठे जाने से **'विमल योग'** बनेगा। दु:स्थान का स्वामी दु:स्थान में हो तो उसका अशुभत्व नष्ट हो जाता है। फलतः व्यक्ति निर्धन कुल में जन्म लेकर भी समाज में प्रतिष्ठा अर्जित करेगा।

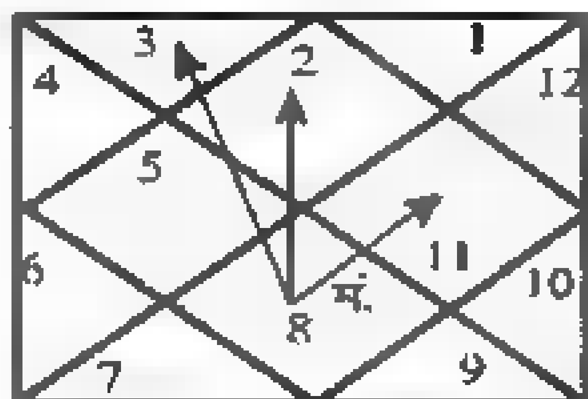
दृष्टि—तुला राशिगत छठे स्थान में विराजित मंगल की दृष्टि भाग्य भवन जहां उसकी उच्च राशि मकर है, व्यय स्थान जहां उसके स्वयं का घर मेष राशि है तथा लग्न स्थान (वृष राशि) को देखेगा। मंगल की ये दृष्टियां जातक को सकारात्मक ऊर्जा से ओत-प्रोत करेगी। जातक भाग्यशाली, खर्चीले स्वभाव का, परोपकारी एवं मेहनती होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल + चन्द्र**—षष्टम स्थान में चन्द्र+मंगल युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी। फलतः 'लक्ष्मी योग' बनेगा। पर लक्ष्मी योग के साथ-साथ तृतीयेश छठे होने से 'पराक्रम भंगयोग' एवं सप्तमेश छठे होने से 'विवाहभंग योग' बनता है। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान (मकर राशि) व्यय स्थान (मेष राशि) एवं लग्न स्थान (वृष राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः भाग्योदय संघर्ष के साथ 28 वर्ष की आयु के बाद होगा। जातक में रोग व शत्रु का समूल नाश करने की शक्ति होगी। जातक समाज का धनी व्यक्ति होगा परन्तु युवावस्था 36 वर्ष की आयु के बाद।
2. **मंगल + सूर्य**—सूर्य यहां नीच का होगा एवं मंगल के साथ आने से 'सुखभंग योग' बनेगा। फलतः सुख प्राप्ति हेतु जातक को बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **मंगल + बुध**—बुध के छठे स्थान में मंगल के साथ होने पर 'सन्तान भंग योग' विद्याभंग योग एवं धनहीन योग की सृष्टि होगी। फलतः जातक को धनार्जन हेतु शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
4. **मंगल + शुक्र**—शुक्र छठे जाने से **'लग्नभंग योग'** बनेगा। शुक्र यहां स्वगृही होगा तथा षष्टेश का षष्टम भाव में होने से **'हर्ष योग'** बनेगा। जातक अति कामुक होगा तथा व्यभिचारी होगा।
5. **मंगल + शनि**—शनि छठे जाने से **'भाग्यभंग योग'** व **'राजयभंग योग'** की सृष्टि होगी। शनि यहां उच्च का होगा। मंगल शनि की युति व्यक्ति को दुष्ट, असामाजिक व गलत कार्य करने की प्रेरणा देगी। जिससे जातक को नुकसान होगा।
6. **मंगल + बृहस्पति**—बृहस्पति के छठे जाने से **'लाभभंग योग'** बनेगा परन्तु अष्टमेश का छठे जाने से **'सरल योग'** की सृष्टि होगी। बृहस्पति+मंगल की युति धार्मिक यात्राओं में चोरी होने का संकेत देती है।

7. **मंगल + राहु**–राहु का छठे जाना राजयोग कारक माना गया है फिर तुला राशि राहु की मित्र राशि है, जहां वह हर्षित रहता है। ऐसा जातक गुप्त एवं रहस्यमय शक्ति का स्वामी होगा।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में



वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एवं व्ययेश है। मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने में अशुभफलदाता है। यहां सप्तम स्थान में मंगल स्वगृही वृश्चिक राशि का होकर **'रुचक योग'** की सृष्टि करेगा। कुण्डली **'मांगलिक'** भी होगी। जातक राजा तुल्य पराक्रमी, प्रतापवान एवं ऐश्वर्य शाली होता है। व्यवसाय, नौकरी, धन हेतु यह मंगल शुभ है परन्तु वैवाहिक सुख में बाधक है। ऐसे जातक का ससुराल धनवान होता है अथवा पत्नी पढ़ी-लिखी व नौकरी करने वाली होती है। फलतः परस्पर अहम् भाव का टकराव होता रहता है। जीवन साथी के व्यवहार से जातक असंतुष्ट रहता है।

दृष्टि–सप्तमावस्था स्वगृही मंगल की दृष्टि दशम भाव (कुम्भ राशि), लग्न भाव (वृष राशि) एवं धनभाव (मिथुन राशि) पर होगी। मंगल की ये दृष्टियां जातक के व्यक्तिगत जीवन में धनलाभ, राज्यलाभ, नौकरी व उन्नति की प्राप्ति हेतु अमृत तुल्य उपादेय है।

निशानी–विष्णु की तरह सबका पालक रोते हुए को हंसाने वाला।

दशा–मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। नौकरी लगेगी। जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चन्द्र**–सप्तम स्थान में चन्द्र+मंगल युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी। मंगल यहां स्वगृही होकर लग्न को देखेगा। फलतः 'महालक्ष्मी योग' की सृष्टि होगी। यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक है। क्योंकि चंद्रमा अपनी उच्च राशि को देखेगा। ये दोनों ग्रह दशम भाव (कुम्भ राशि), लग्न स्थान (वृष राशि) एवं धन स्थान (मिथुन राशि) को पूर्ण दृष्टि से प्रभावित करेंगे। फलतः जातक समाज का धनी, प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली व्यक्ति होगा। पत्नी सुन्दर व ससुराल धनवान होगा। 28 वर्ष अथवा विवाह के तत्काल बाद जातक की किस्मत चमकेगी।

2. **मंगल + सूर्य**–सुखेश सूर्य की युति सप्तमेश के साथ जातक को उत्तम भवन, वाहन व ऐश्वर्य भाग में वृद्धि करेगी। परन्तु जीवन साथी के साथ विवाद को बढ़ायेगी।

3. **मंगल + बुध**–धनेश व पचंमेश का युति स्वगृही मंगल के साथ होने से पत्नी (ससुराल) से धन मिलेगा। जातक का विशेष भाग्योदय प्रथम सन्तति के बाद होगा।

4. **मंगल + शुक्र**–मंगल+शुक्र की युति भाग्योदय में सहायक है। लग्नेश लग्न को देखने से 'लग्नाधिपति' योग बनेगा। यहां **'भगचुम्बन योग'** के कारण जातक स्त्री का गुलाम होगा।

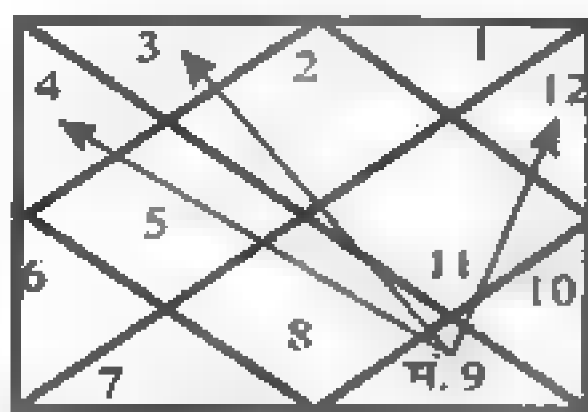
5. **मंगल + बृहस्पति**–लाभेश का केन्द्रगत होना **'केसरी योग'** बनायेगा। बृहस्पति अपने घर (मीन राशि) लग्न एवं अपनी उच्च राशि (कर्क) को देखेगा। जातक को व्यापार में लाभ दिलाता हुआ अतुल पराक्रम का स्वामी बनायेगा। परन्तु गुप्तरोग के कारण शल्य चिकित्सा (आपरेशन) होगी।

6. **मंगल + शनि**–भाग्येश, दशमेश शनि का केन्द्रस्थ होकर मंगल से युत होना शुभ है। भाग्योदय में सहायक है, परन्तु जातक की पत्नी हठी, जिद्दी व अंहकारी होगी।

7. **मंगल + राहु**–यहां राहु अपनी शत्रु राशि में होगा। फलत: गृहस्थ सुख में बाधक है। पत्नी से मनोमलिन्यता में वृद्धि कर तलाक दिलवा सकता है।

8. **मंगल + केतु**–भृगुसूत्र के अनुसार–केतुयुते रजस्वला स्त्री सम्भोगी।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में



वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एवं व्ययेश है। मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने से अशुभ फलदाता है। यहां अष्टमस्थ मंगल धनु राशि का होगा। कुण्डली 'मांगलिक' भी होगी। धनु राशि मंगल की मित्र राशि है। गर्ग ऋषि के अनुसार ऐसे जातक की मृत्यु शस्त्र, कोढ़, देह व्रण, अंग के सड़ने-जलने से होती है। मंगल अष्टम में क्रमश: **'विवाहभंग योग'** एवं **'यात्राभंग योग'** की सृष्टि करता है परन्तु व्ययेश का आठवें जाना, दु:स्थान के स्वामी का दु:स्थान में जाना **'विमल योग'** बनाकर मंगल का अशुभत्व नष्ट करता है। जातक शत्रुओं को घटाने वाला प्रबल पराक्रमी होता है।

दृष्टि–धनु राशिगत अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि लाभ स्थान (मीन राशि) धन भाव (मिथुन राशि) एवं पराक्रम भाव (कर्क राशि) पर होगी। मंगल की ये दृष्टियां धन की बढ़ोत्तरी, लाभ की बढ़ोत्तरी एवं पराक्रम की बढ़ोत्तरी में सहायक हैं।

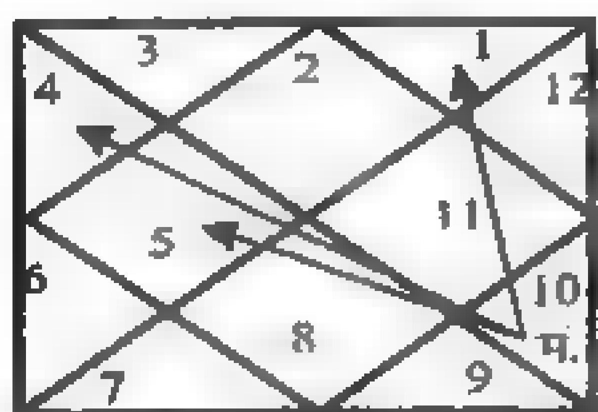
निशानी–जातक का छोटा भाई आठ वर्ष के अन्तर से पैदा होगा। जातक की भाइयों से नहीं बनेगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चन्द्र**–अष्टम स्थान में चन्द्र+मंगल युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी। अष्टम स्थान में चन्द्र+मंगल की युति धनु राशि में होगी। 'लक्ष्मी योग' तो बनेगा पर लक्ष्मी योग के साथ-साथ तृतीयेश चन्द्र आठवें होने से 'पराक्रमभंग योग' तथा सप्तमेश मंगल आठवें होने से कुण्डली मांगलिक होने के साथ 'विवाहभंग योग' भी बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह (कर्क राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक परम पराक्रमी होगा पर शत्रु जीवन पर्यन्त बने रहेंगे। जातक धनवान होगा परन्तु चिरस्थायी धन की स्थिति का निर्णय धनेश बुध की स्थिति से निर्णय होगा।
2. **मंगल + सूर्य**–सूर्य अष्टम में जाने से निर्बल हो जायेगा। फलतः 'सुखभंग योग' की सृष्टि करेगा। जातक को सुख (भौतिक उपलब्धियों) की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **मंगल + बुध**–बुध के आठवें जाने से 'सन्तानभंग योग', 'विद्याभंग योग' एवं 'धनहीन योग' की सृष्टि होगी। फलतः जातक को धनार्जन हेतु, शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
4. **मंगल + शुक्र**–शुक्र के आठवें जाने में 'लग्नभंग योग' बनेगा। परन्तु षष्टेश का आठवें जाने से 'हर्ष योग' बनेगा। जातक कामुक एवं व्यभिचारी होगा।
5. **मंगल + बृहस्पति**–बृहस्पति के आठवें जाने से 'लाभभंग योग' बनेगा। परन्तु अष्टमेश अष्टम में स्वगृही होने से 'सरल योग' बृहस्पति के अशुभ फल को नष्ट करेगा। यह युति व्यक्ति को धार्मिक बनायेगी। जातक बड़े भाई का आदर करेगा।
6. **मंगल + शनि**–शनि आठवें जाने से 'भाग्यभंग योग', 'राजभंग योग' परन्तु शनि यहां बृहस्पति के क्षेत्र में होने से ज्यादा गलत, असामाजिक कार्य नहीं करायेगा।

7. **मंगल + राहु**–राहु अष्टम स्थान में शत्रुक्षेत्री है। जातक को गुप्त रोग, गुप्त पीड़ा, कष्ट देगा।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में



वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एवं व्ययेश है। मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने से अशुभ फलदाता है। यहां दशमस्थ मंगल मकर राशि में होकर उच्च का होगा। मकर के 28 अंशों तक मंगल परमोच्च का होगा। जातक राजमन्य होगा। उन्नतिशील होगा। अपनी स्वार्थ सिद्धि हेतु शत्रु को मित्र एवं मित्र को शत्रु बना लेगा। नैतिकता व अन्याय का शब्द इनके लिए अर्थहीन है। येन-केन प्रकारेण सफलता प्राप्त करना इनके जीवन का लक्ष्य होता है।

दृष्टि–नवमस्थ मकर राशिगत मंगल की दृष्टि व्यय भाव (मेष राशि), पराक्रम भाव (कर्क राशि) एवं सुख भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का दानी, पराक्रमी, अभियानी एवं उत्तम सम्पत्ति का स्वामी होगा।

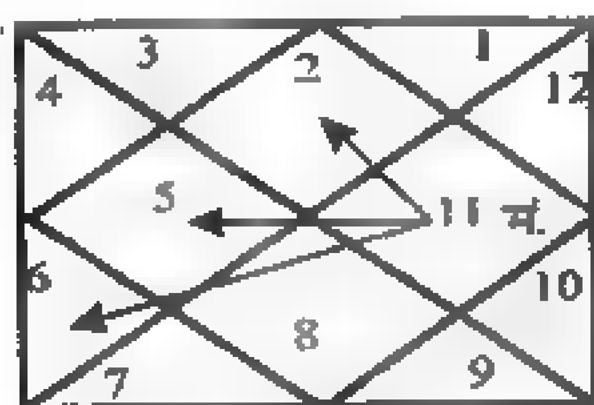
निशानी–खजाने का मालिक एवं जंगल में मंगल करने वाला व्यक्ति होगा। जातक का पिता रोगी या अल्पायु होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चन्द्र**–नवम स्थान में चन्द्र+मंगल की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी। मंगल उच्च का होगा फलतः 'महालक्ष्मी योग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (मेष राशि) पराक्रम स्थान (कर्क राशि), एवं सुख स्थान (सिंह राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक महाधनी (करोड़पति) होगा। परम पराक्रमी होगा क्योंकि चंद्रमा अपने घर को देखेगा। जातक परम परोपकारी, दयालु व अति खर्चीले स्वभाव का होगा एवं यशस्वी होगा।
2. **मंगल + सूर्य**–भाग्य भवन में सूर्य मंगल का साथ शत्रु क्षेत्री होगा। जातक क्रोधी एवं अति अहंकारी होगा।
3. **मंगल + बुध**–धनेश, पंचमेश बुध की भाग्य भवन में मंगल के साथ युति जातक को भाग्यशाली एवं परमधनी बनायेगी। प्रथम सन्तति के बाद भाग्योदय होगा।

4. **मंगल + शुक्र**—लग्नेश का त्रिकोण में जाने केन्द्र–त्रिकोण सम्बन्ध से व्यक्ति परम सौभाग्यशाली होगा। जातक उत्तम वाहन, तीन मंजिल की कोठी का स्वामी होगा।
5. **मंगल + बृहस्पति**—लाभेश का भाग्य में होना 'नीचभंगराज योग' बनायेगा क्योंकि बृहस्पति नीच का एवं मंगल उच्च का होगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी एवं ऐश्वर्यवान होगा। जातक की वृद्धि धार्मिक एवं परोपकारी होगी।
6. **मंगल + शनि**—शनि स्वगृही एवं मंगल उच्च का होने से 'किम्बहुना योग' बनेगा। भृगुसूत्र के अनुसार 'उच्चस्वक्षेत्रे गुरुदारगः' जातक गुप्त पत्नी, वृद्ध मित्र की पत्नी से गमन करेगा। जातक व्यभिचारी एवं निरंकुश होगा।
7. **मंगल + राहु**—राहु यहां मित्र राशि में शत्रु के साथ होने से उद्विग्न रहेगा। जातक अनिश्चित निर्णय वाला, क्षण–प्रतिक्षण स्वभाव में गिरगिट की तरह रंग बदलने वाला अविश्वासी होगा।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में



वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एवं व्ययेश होने से द्वितीय मारकेश है। फलतः अशुभ फलदायक है। यहां दसमस्थ मंगल कुम्भ राशि का होकर 'दिग्बली' होगा। दशमस्थ मंगल कुलदीपक योग बनता है। ऐसे जातक के जन्म से घर में धनवृद्धि होगी। जातक शारीरिक बल से युक्त, यशस्वी, प्रतापी, पराक्रमी साहसी, धनवान एवं ऊर्जावान् होता है।

दृष्टि—कुम्भ राशिगत दसमस्थ मंगल की दृष्टि लग्न स्थान (वृष राशि), चतुर्थ स्थान (सिंह राशि), एवं पंचम भाव (कन्या) राशि पर होगी। इससे लग्न को अतिरिक्त ऊर्जा मिलती है। जातक को माता की सम्पत्ति मिलती है। जातक की सन्तान तेजस्वी होती है पर गर्भपात, रक्तसुख का भय रहता है।

निशानी—मंगल की दशा–अन्तर्दशा में जातक की विशेष उन्नति होगी। जातक को नौकरी मिलेगी या व्यापार में तरक्की होगी।

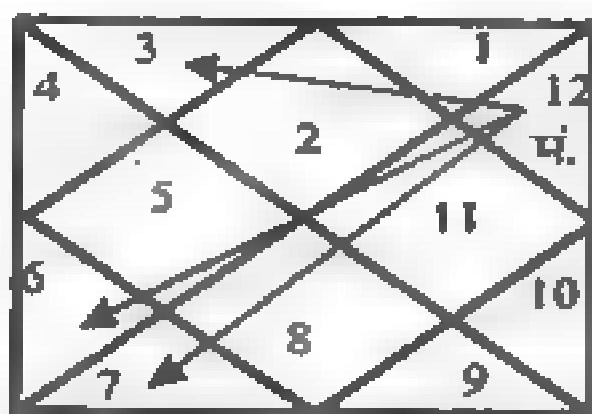
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चन्द्र**—दशम स्थान में चन्द्र+मंगल युति चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ होगी। मंगल यहां केन्द्रवर्ती एवं दिक्बली होगा फलतः 'महालक्ष्मी योग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान (वृष राशि), सुख

भाव (सिंह राशि) एवं पंचम भाव (कन्या राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक महाधनी व उद्योगपति होगा। उसे पैतृक सम्पत्ति मिलेगी। राजपक्ष में उसका प्रभाव रहेगा। राजनीति में उसे लाभ रहेगा। जातक की किस्मत 28 व 32 वर्ष के मध्य चमकेगी। भाई की दीर्घायु होगी।

2. **मंगल + सूर्य**—सुखेश सूर्य की स्थिति दशमस्थ मंगल के साथ होने से जातक सभी प्रकार के सुखों को सहज में प्राप्त कर लेगा। जातक सरकार में प्रभावशाली व्यक्ति होगा। राजनीति में प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।
3. **मंगल + बुध**—भृगुसूत्र के अनुसार बुध में युत होने पर 'अष्टादशवर्षे द्रव्यार्जन समर्थः' 18 वर्ष की लघु आयु में भी जातक धनोपार्जन में समर्थ हो जाता है।
4. **मंगल + शुक्र**—लग्नेश शुक्र की युति में जातक छोटी आयु में ही धन कमाने में समर्थ हो जाता है। जातक कुटुम्ब-जाति व समाज का गौरव होगा।
5. **मंगल + बृहस्पति**—भृगुसूत्र के अनुसार यह युति 'गजान्तैश्वर्यवान्' जातक हाथी जैसे बड़े वाहन से युत ऐश्वर्यवान् होता है।
6. **मंगल + शनि**—भृगुसूत्र के अनुसार भाग्येश शनि की युति से 'राज्यपट्टाभिषेकवान्' जातक राजनीति के उच्च पद को शीघ्र प्राप्त कर जाता है। शनि यहां मूलत्रिकोण राशि में स्वगृही होकर 'शश योग' एवं 'पद्मसिंहासन योग' बनायेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य भोगेगा।
7. **मंगल + राहु**—जातक राजनीति में माहिर अत्यधिक चालाक एवं नकारात्मक शक्ति से युक्त ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होगा।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में



वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एवं व्ययेश है। मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने से अशुभ फलदायक है। यहां एकादशस्थ मंगल मीन राशि का होगा। यहां मंगल अपने मित्र गृह की राशि में है। जलसंज्ञक राशि में है। फलतः व्यक्ति धैर्यवान्, सोच-समझकर निर्णय लेने वाला, ठंडे दिमाग का जातक होगा। जातक अपनी किस्मत आप बनाने वाला होता है। परन्तु सन्तान और विद्या के पक्ष में थोड़ा असंतोष रहता है।

दृष्टि—एकादशस्थ मीन राशिगत मंगल की दृष्टि धन भाव (मिथुन राशि), पंचम भाव (कन्या राशि) एवं षष्टम भाव (तुला राशि) पर होगी। फलतः जातक धनवान, पुत्रवान एवं रोग व शत्रुओं का सर्वनाश करने में समर्थ होगा।

निशानी–जातक के पुत्र सन्तति जरूर होगी। गुप्त शत्रु अवश्य होंगे। पर सभी युद्ध में हारेंगे व पराभव को प्राप्त होंगे।

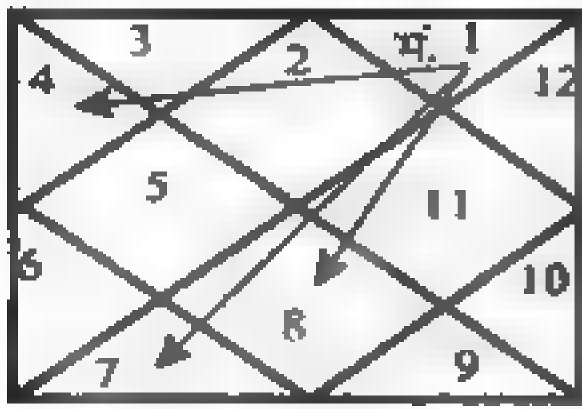
दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा में धन, पुत्र, पराक्रम वृद्धि के श्रेष्ठ फल देता है।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चन्द्र**–एकादश स्थान में चन्द्र+मंगल की युति वस्तुतः चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी। फलतः 'लक्ष्मी योग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन स्थान (मिथुन राशि) पंचम (कन्या राशि) एवं षष्ट्म भाव (तुला राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक धनवान होगा। विवाह के बाद अथवा प्रथम सन्तति उत्पन्न होने के बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्णतः सक्षम व समर्थ होगा।
2. **मंगल + सूर्य**–सुखेश सूर्य लाभ स्थान में मंगल के साथ होने में उच्चाभिलाषी होगा। फलतः जातक अत्यधिक महत्वाकांक्षी एवं ऊर्जावान होगा।
3. **मंगल + बुध**–बुध यहां नीच राशि में होकर अपने घर (कन्या राशि) को देखेगा। फलतः जातक के पुत्र व कन्या दोनों सन्तति होंगी। सुयोग्य होंगी, विद्यवान होगी। जातक में तार्किक शक्ति अच्छी होगी।
4. **मंगल + शुक्र**– शुक्र यहां उच्च का होगा। लग्नेश उच्च का होकर जब मंगल से युति करेगा तो जातक महान् भाग्यशाली होगा। भृगुसूत्र के अनुसार 'शुभद्वययुते महाराजाधिपत्ययोग' जातक राजनीति के उच्च पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।
5. **मंगल + बृहस्पति**–बृहस्पति यहां स्वगृही होगी। जातक व्यापार में यथेष्ट लाभ प्राप्त करेगा। जातक के भाई धनवान होंगे। विवाह के बाद किस्मत चमकेगी।
6. **मंगल + शनि**–भाग्येश, दशमेश शनि का लाभ स्थान में होना शुभ है। शनि मंगल के साथ बृहस्पति की राशि में होने से उद्विग्न रहेगा। जातक दीर्घायु प्राप्त करेगा एवं ऋण, रोग व शत्रुओं को समूल नष्ट करने में सक्षम होगा।
7. **मंगल + राहु**–लाभ स्थान में राहु योग कारक माना गया है। यह मंगल की सृजनात्मक ऊर्जा को बढ़ायेगा। जातक येन केन प्रकारेण लाभ प्राप्त करने में ही रुचि लेगा। भले ही उसमें दूसरे का भारी नुकसान हो जाए।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में

वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एवं व्ययेश है। मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने से अशुभ फलकारी है। यहां द्वादश मंगल मेष राशि का होकर स्वगृही होगा। साथ ही



यह कुण्डली 'मांगलिक' दोष से युक्त हो गई है। ऐसे जातक की अवाज बुलन्द होती है। जातक में अहम् प्रदर्शन की भावना विशेष रहती है। विवाह की शुरुआती जिन्दगी खटपट में परिपूर्ण रहती है। थोड़े समय बाद सब कुछ सामान्य हो जाता है। जातक बोली से कड़वा एवं हृदय में साफ दिल का होगा।

दृष्टि–द्वादश भाव में स्थित मेष राशिगत मंगल की दृष्टि पराक्रम स्थान (कर्क राशि), शत्रु स्थान (तुला राशि) एवं सप्तम स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक बड़े परिवार वाला होगा। अपनी समस्या स्वयं सुलझा लेगा तथा शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण समर्थ होगा। जातक शत्रुओं को कभी क्षमा नहीं करेगा।

निशानी–जातक अधैर्यशाली व क्रोधी होगा। जातक खोजी पत्रकारिता, ड्राईविंग या ट्रैवल कम्पनी चलाने में रुचि रखेगा।

दशा–मंगल की दशा अन्तर्दशा उत्तम फलदेगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चन्द्र**–द्वादश स्थान में चन्द्र+मंगल युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी। द्वादश स्थान में चन्द्र+मंगल की युति 'महालक्ष्मी योग' बनायेगी। क्योंकि मंगल यहां स्वगृही होगा पर साथ-साथ तृतीयेश चंद्रमा बारहवें होने से 'पराक्रमभंग योग' एवं मंगल बारहवें कुण्डली को मांगलिक बनाते हुए 'विवाहभंग योग' की सृष्टि करता है। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान (कर्क राशि), षष्ट्म स्थान (तुला राशि) एवं सप्तम स्थान (वृश्चिक राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक परम पराक्रमी एवं महाधनी व्यक्ति होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा।
2. **मंगल + सूर्य**–यहां सूर्य उच्च का होगा मंगल स्वगृही होने से 'किम्बहुना योग' बनेगा। यह योग राजनीति में प्रगतिदायक, उन्नतिदायक एवं श्रेष्ठ कहा गया है।
3. **मंगल + बुध**–बुध द्वादश में 'धनहीन योग' व 'संतानहीन योग' की सृष्टि करता है। जातक को प्रथम संतति विलम्ब से प्राप्त होगी।
4. **मंगल + शुक्र**–मंगल+शुक्र की युति व्यक्ति को कामांध करती है। जातक चरित्रहीन एवं षड्यंत्रकारी होता है। जातक परस्त्रीरत होता है। धन का अपव्यय करता है।

5. **मंगल + बृहस्पति**–बृहस्पति बारहवें स्थान में होने से '**सरल योग**' बना। ऐसा व्यक्ति परोपकारी, धार्मिक व तीर्थ यात्राओं में भाग लेने वाला साहसी जातक होता है।

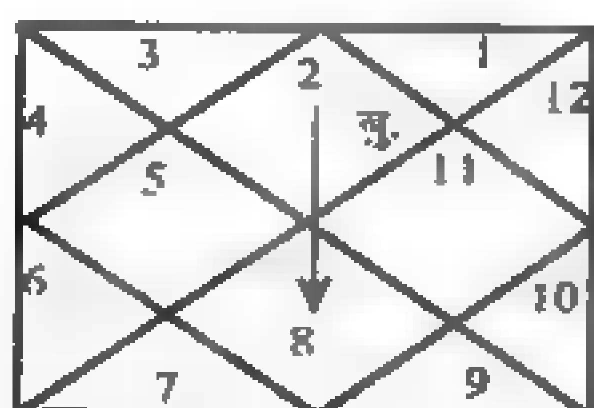
6. **मंगल + शनि**–शनि यहां नीच का होने से '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। जातक राजा के तुल्य पराक्रमी एवं यशस्वी होगा। खर्च अधिक करेगा।

7. **मंगल + राहु**–राहु यहां शत्रु के घर में है। ऐसा जातक, व्यभिचारी, आवारा एवं षड्यंत्रकारी होता है। भृगुसूत्र के अनुसार '**पापयुते दाम्भिक**' है। जातक अति घमण्डी होगा।

❑❑❑

वृषलग्न में बुध की स्थिति

वृषलग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में



वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। प्रथम स्थान में वृष राशिगत बुध अपने मित्र शुक्र की राशि में है। बुध यहां दिग्बली है एवं 'कुलदीपक योग' की सृष्टि भी कर रहा है। ऐसा व्यक्ति सुगठित एवं सुंदर शरीर वाला होता है। जातक विनोदी, व्यवहार कुशल, सुशिक्षित होता है तथा अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला कुल का दीपक होता है।

दृष्टि–लग्नस्थ बुध की दृष्टि सप्तम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक का गृहस्थ जीवन सुखमय होगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक आगे बढ़ेगा, उन्नति करेगा।

निशानी–जातक का जन्म दिन के समय होता है। जातक ज्योतिष विद्या, अध्यात्म-शास्त्र का जानकार होता है।

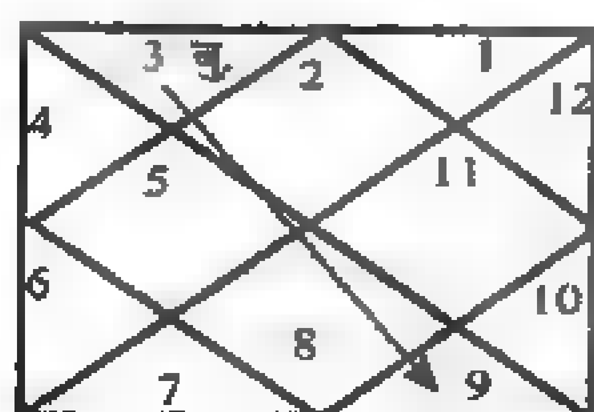
दशा–बुध की दशा उत्तम फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योग कारक है। प्रथम स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। लग्न में बुध स्वगृहाभिलाषी होगा तथा दोनों ग्रहों की दृष्टि सप्तम भाव पर होगी। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। जातक की पत्नी पढ़ी-लिखी एवं धनवान होगी। जातक को जीवन में सभी प्रकार के सुख-संसाधनों की प्राप्ति स्वयं के पुरुषार्थ से होगी।

2. **बुध + चन्द्र**—बुध चन्द्र की युति से जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। चंद्रमा उच्च का होने से '**स्वर्णकान्तिदेह—ज्योतिष शास्त्र पठितः**' जातक विद्वान् होगा।
3. **बुध + मंगल**—सप्तमेश, खर्चेश मंगल बुध के साथ होने से चतुर्थ भाव सप्तम भाव व अष्टम भाव को देखेगा। फलतः जातक को वैवाहिक सुख मिलेगा। माता का सुख मिलेगा एवं जातक की आयुष्य बढ़ेगी।
4. **बुध + बृहस्पति**—लाभेश बृहस्पति लग्न में बैठकर पंचम भाव, सप्तम भाव एवं भाग्य भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को पुत्र सन्तति, गृहस्थ सुख एवं भाग्य का लाभ होगा।
5. **बुध + शुक्र**—वृषलग्न में शुक्र+बुध की युति निष्फल मानी गई है। बुध की युति शुक्र के साथ होने से शुक्र की दशा रोग, ऋण एवं शत्रुओं की वृद्धि करने वाली होगी क्योंकि षष्ठेश शुक्र का पापत्व मारकेश बुध के साथ होने से बढ़ जाएगा।
6. **बुध + शनि**—भाग्येश, दशमेश शनि लग्न में बैठकर पराक्रम स्थान, सप्तम स्थान एवं दशम स्थान अपने घर (कुम्भ राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः जातक पराक्रमी होगा। गृहस्थ सुख से युक्त, राजनीति में हस्तक्षेप रखने वाला महत्त्वपूर्ण व्यक्ति होगा।
7. **बुध + राहु**—लग्न में वृष का राहु उच्च का होगा। बुध के साथ यह राजयोग देगा। जातक धनी होगा व राजनीति में प्रभावशाली व्यक्ति होगा।

वृषलग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में



वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। द्वितीय स्थान में बुध मिथुन राशिगत होने से स्वगृही है। वृषलग्न में द्वितीय स्थान में बुध मीठी व विनम्र वाणी देता है। जातक वाचाल एवं वाकचातुर्य से धन कमाता है। बुद्धिबल से, व्यापार से धन कमाता है। जातक हाजिर-जवाब होता है।

दृष्टि—द्वितीयस्थ बुध की दृष्टि अष्टम स्थान (धनु राशि) पर होगी। यह दृष्टि जातक को लम्बी उम्र प्रदान करती है।

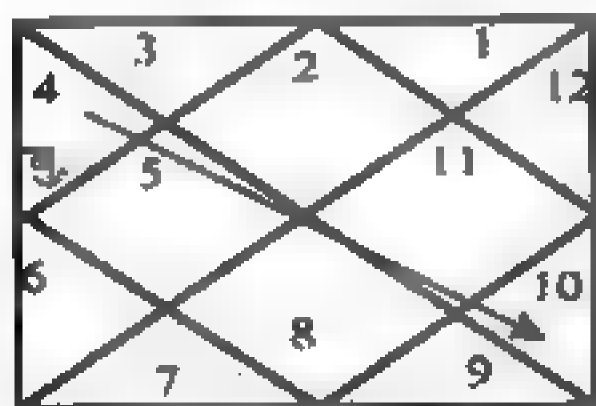
निशानी—अध्ययन-अध्यापन, कम्प्यूटर, वकालत, प्रकाशन और ज्योतिष का रुचिकर व्यवसाय होगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक धनवान होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। द्वितीय स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। यह युति यहां खिलती है। बुध यहां स्वगृही होगा। फलतः जातक धनवान होगा, बुद्धिमान होगा। बलवान धनेश की व चतुर्थेश की युति होने के कारण जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक को विद्याबल में रुपया मिलेगा। अष्टम भाव पर दोनों ग्रहों की दृष्टि होने से आयु लम्बी होगी। जातक को सभी प्रकार के भौतिक ऐश्वर्य व संसाधनों की प्राप्ति होती रहेगी।
2. **बुध + चन्द्र**–तृतीयेश चंद्रमा बुध के साथ होने पर व्यक्ति अपने पराक्रम से खूब धन कमाएगा। बलवान धनेश की पराक्रमेश के साथ युति होने से **'कलत्रमूल धनयोग'** बनेगा। जातक को परिजनों, मित्रों द्वारा धन की प्राप्ति होगी।
3. **बुध + मंगल**–सप्तमेश मंगल के बलवान धनेश से युति करने पर **'कलत्रमूल धनयोग'** बनेगा। जातक को पत्नी-ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होगी।
4. **बुध + शुक्र**–शुक्र की युति बुध के साथ होने से व्यक्ति धन तो बहुत कमाएगा पर शुक्र की दशा में शत्रु और बीमारी में वृद्धि होगी।
5. **बुध + बृहस्पति**–बलवान् धनेश की बृहस्पति के साथ युति होने से **'शत्रुमूल धनयोग'** बना। जातक अपने शत्रुओं से धन कमाएगा।
6. **बुध + शनि**–बलवान धनेश की भाग्येश के साथ युति होने से **'भाग्यमूल धनयोग'** बना। जातक के पुरुषार्थ के प्रत्येक कदम पर धन व भाग्य सहायता करते रहेंगे। जातक बहुत भाग्यशाली एवं धनी व्यक्ति होगा।
7. **बुध + राहु**–राहु धन के घड़े में छेद करेगा। धन की अच्छी आवक होते हुए भी धन की बरकत नहीं होगी।

वृषलग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में



वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। तृतीयस्थ बुध यहां अपनी शत्रु कर्क राशि में है। बुध तृतीय में होने से जातक अपने पुरुषार्थ, पराक्रम और साहस से धन कमाता है। जातक को भाई-बहन, कुटुम्ब, परिवार का सुख मिलता है। जातक की ज्योतिष, गणित, कम्प्यूटर इत्यादि में रुचि होती है।

दृष्टि—तृतीयस्थ बुध की दृष्टि भाग्य स्थान (मकर राशि) पर होगी। ऐसा जातक 18 वर्ष की छोटी आयु में ही सही भाग्योदय की ओर गतिशील हो जाता है।

निशानी—ऐसा जातक अपनी किस्मत आप जगाता है। जातक को यात्राओं से लाभ होता है।

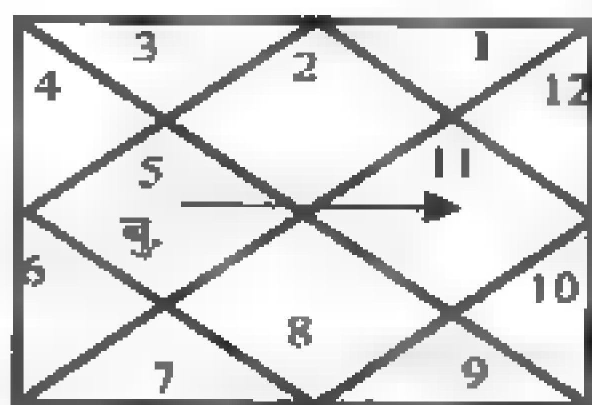
दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को अपेक्षित लाभ नहीं होगा। इसकी दशा में बौद्धिक व सामाजिक उन्नति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। तृतीय स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां दोनों ग्रह भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिमान एवं पराक्रमी होगा। उसे इष्ट+मित्रों एवं कुटुम्बी जनों से सहायता मिलती रहेगी। जातक भाग्यशाली होगा। जीवन में सभी प्रकार की सफलताएं इस योग के कारण प्राप्त होंगी।
2. **बुध + चन्द्र**—चंद्रमा यहां स्वगृही होगा। ऐसे जातक को यात्राओं से लाभ होता है। बहनों का प्यार मिलता है।
3. **बुध + मंगल**—मंगल यहां नीच का होगा तथा छठे स्थान, भाग्यस्थान व दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा तथा राजनीति में वर्चस्व रखेगा।
4. **बुध + शुक्र**—शुक्र+बुध की युति शल्य चिकित्सा कराती है। जातक के जीवन में बहनों का सुख ज्यादा होगा।
5. **बुध + बृहस्पति**—अष्टमेश व द्वितीयेश की युति जातक की वाणी में दोष उत्पन्न करती है। भाइयों में भारी मनमुटाव की स्थिति बनती है।
6. **बुध + शनि**—भाग्येश, दशमेश तृतीय में जाकर पंचम भाव, नवम भाव अपने घर को एवं व्यय भाव को देखेगा। फलतः जातक पराक्रमी तो होगा एवं भाग्यशाली भी होगा।
7. **बुध + राहु**—तृतीय स्थान में राहु को शास्त्रकारों ने शुभ माना है पर शत्रुक्षेत्री बुध व राहु परिजनों एवं मित्रों में विवाद-कलह कराएंगे।

वृषलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में

वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। चतुर्थस्थ बुध यहां सिंह राशि में केंद्रस्थ होकर 'कुलदीपक योग' बना रहा है। बुध अपने मित्र सूर्य



की राशि में है। फलतः जातक को घर-परिवार, जमीन-जायदाद, सुंदर भवन, सुंदर वाहन, सुंदर विद्या, अच्छी दौलत एवं कुटुम्ब का सुख देता है। ऐसा जातक राज्याधिकारी होता है। अपने परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करता है।

दृष्टि—चतुर्थस्थ बुध की दृष्टि दशम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलतः जातक का राज-दरबार में सम्मान होगा।

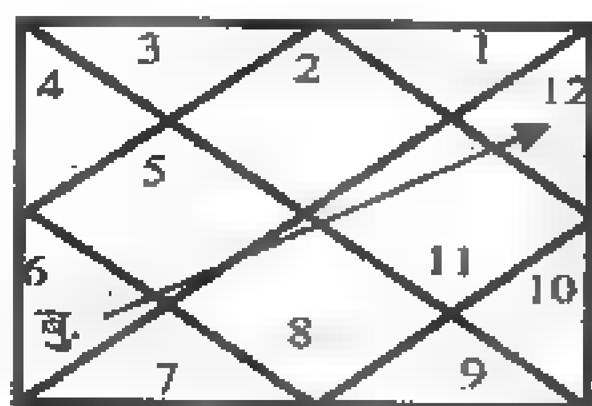
निशानी—प्रायः चतुर्थ भावगत बुध से पुत्र कम (निःसंतान) होते हैं क्योंकि बादनारायण ऋषि ने चतुर्थस्थ बुध को निष्फल माना है।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। चतुर्थ स्थान में सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहां स्वगृही होगा। दोनों ग्रह केंद्रवर्ती होने से बलवान होकर 'कुलदीपक योग' एवं रविकृत राजयोग बनाएंगे। यहां बैठे दोनों ग्रहों की दृष्टि दशम भाव पर होगी। फलतः जातक बुद्धिमान धनवान होगा। माता-पिता की सम्पत्ति का वारिस होगा। कुल का नाम रोशन करेगा। नौकरी या व्यापार जो भी होगा, उत्तम श्रेणी का होगा।
2. **बुध + चन्द्र**—बुध के साथ चंद्रमा माता का सुख देता है पर माता को तपेदिक (बीमारी) रहेगी। जातक विदेश यात्रा करेगा।
3. **बुध + मंगल**—जातक के पास अनेक वाहन व मकान होंगे। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **बुध + शुक्र**—भृगुसूत्र के अनुसार 'अनेक वाहनवान्' जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
5. **बुध + बृहस्पति**—जातक अनेक प्रकार के धंधों से धन कमाएगा। जातक को लाभ ही लाभ होता रहेगा।
6. **बुध + शनि**—नौकर दगा देंगे। वाहन में अरिष्ट होगा। जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
7. **बुध + राहु**—जातक बंधुओं का द्वेषी होगा। वाहन में अरिष्ट होगा।
8. **बुध + केतु**—जातक को वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

वृषलग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में



वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। बुध यहां पंचम भावगत कन्या राशि में होने से उच्च का है तथा 15 अंश तक परमोच्च का कहलाता है। ऐसा जातक शिक्षित, बुद्धिमान, मुकाबले (कम्पीटिशन) की परीक्षा में प्रथम आने वाला होता है। ऐसे जातक का बौद्धिक स्तर उन्नत होता है। ऐसा जातक एक सच्चे साथी व मित्र के रूप में उत्तम सलाहकार होता है।

दृष्टि—पंचमस्थ बुध की दृष्टि लाभ स्थान (मीन राशि) पर होगी फलतः जातक व्यापार में खूब धन कमाएगा।

निशानी—जातक का भाग्योदय प्रथम संतति के बाद तत्काल होगा। जातक आशीर्वाद देने की क्षमता रखता है।

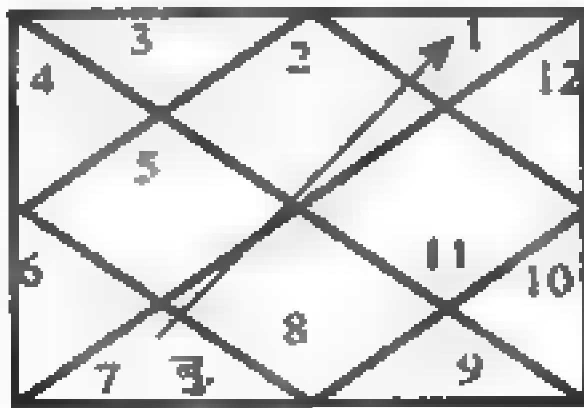
दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक धनवान एवं प्रज्ञावान होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। पंचम स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। बुध यहां उच्च का होगा। बलवान धनेश व चतुर्थेश की युति 'मातृमूल धनयोग' की सृष्टि करती है। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक की संतति उत्तम होगी तथा जातक की आज्ञा में रहेगी। जातक को जीवन में सभी प्रकार के भौतिक ऐश्वर्य व संसाधनों की प्राप्ति होती रहेगी। यह युति जातक को आगे बढ़ाने में बड़ी सहायक होगी।
2. **बुध + चन्द्र**—यहां **'मित्रमूल धनयोग'** की सृष्टि होगी। जातक अपने परिजनों व मित्रों के माध्यम से उत्तम धन कीर्ति को प्राप्त करेगा।
3. **बुध + मंगल**—यहां **'कलत्रमूल धनयोग'** की सृष्टि होगी। जातक को पत्नी-ससुराल से उत्तम धन (जायदाद) की प्राप्ति होगी।
4. **बुध + बृहस्पति**—**'मेधावी मधुरभाषी बुद्धिमान्'** जातक मेधावी, बुद्धिमान् एवं गंभीर वाणी बोलने वाला, व्यापार में लाभ कमाने वाला व्यक्ति होगा।
5. **बुध + शुक्र**—यहां **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा जातक राज्य तुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।

6. **बुध + शनि**–यहां '**भाग्यमूल धनयोग**' बना। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक भाग्यशाली होगा।
7. **बुध + राहु**–राहु यहां पुत्र नाश कराता है। माता को बीमारी सम्भव है।
8. **बुध + केतु**–जातक दत्तक पुत्र गोद लेता है। इसकी सलाह षड्यंत्रकारी होती है।

वृषलग्न में बुध की स्थिति षष्ट्म स्थान में



वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। बुध यहां छठे स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि में है। बुध यहां उद्विग्न नहीं है परन्तु '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' की सृष्टि करता है। फलत: बुद्धि, संतान और धन की हानि होती है। लग्नेश व भाग्येश की स्थिति ही जातक के जीवन की सफलता एवं भाग्य की बलवत्ता का निर्णय करेगी।

दृष्टि–षष्टमस्थ बुध की दृष्टि द्वादश भाव (मेष राशि) पर होगी, ऐसे जातक के धन की रक्षा नहीं हो पाएगी।

विशेष–यहां अकेला बुध शत्रुओं की वृद्धि करेगा।

दशा–बुध की दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। षष्टम स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुत: सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहां नीच राशिगत है। सूर्य छठे जाने से 'सुखभंग योग' एवं बुध छठे होने से 'धनहीन योग' व 'सन्तति हीन योग' की सृष्टि होती है। फलत: यहां इस स्थान में यह योग ज्यादा सार्थक नहीं है। यहां बैठे दोनों ग्रहों की दृष्टि व्यय भाव पर रहेगी। फलत: जातक बुद्धिमान होगा। जातक रोग व शत्रुओं का शमन करने में सक्षम होगा परन्तु संघर्ष रहेगा। इस योग के कारण अंतिम सफलता, संघर्ष के बाद सुख-सफलता जातक को अवश्य मिलेगी।
2. **बुध + चन्द्र**–इस युति के कारण जातक का पराक्रम भंग होगा।
3. **बुध + मंगल**–इस युति के कारण जातक को गृहस्थ सुख नहीं मिल पाएगा। जीवन साथी के साथ विवाद रहेगा। भृगुसूत्र के अनुसार 'कुजर्क्षे नीलकुष्टादिरोगी' जातक को रक्तविकार होगा।

4. **बुध + शुक्र**–शुक्र यहां स्वगृही होकर **'हर्ष योग'** बनाएगा। बुध के शुभत्व में वृद्धि करेगा। जातक बुद्धिबल से भी समस्याओं का समाधान कर लेगा।

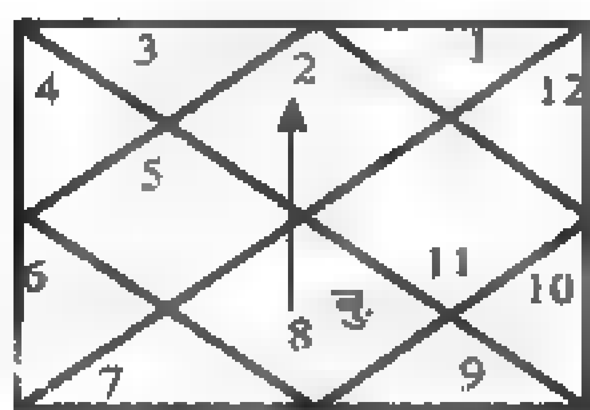
5. **बुध + गुरु**–गृहस्थ सुख 37 वर्ष की आयु के बाद मिलेगा। गुरु यहां 'सरल योग' बनाएगा। फलतः बुध के शुभत्व में वृद्धि होगी।

6. **बुध + शनि**–'शनियुते जातिशत्रुकलह' भृगुसूत्र के अनुसार ऐसे जातक के जाति बंधु जातक से शत्रुता रखेंगे।

7. **बुध + राहु**–भृगुसूत्र के अनुसार 'वातशूलादिरोगी जातिशत्रुकलहः" जातक को' वातरोग होगा। वाणी का स्खलन होगा।

[illegible] **बुध + केतु**–भृगुसूत्र के अनुसार वातशूल रोगी होगा।

वृषलग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में



वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। बुध यहां सप्तमस्थ होकर वृश्चिक राशि में है। केन्द्रस्थ बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बन रहा है। बुध अपने मित्र मंगल की 'वृश्चिक राशि' में है। यह जातक को सुंदर जीवन साथी देगा, धन देगा, विद्या देगा, कुटुंब और संतान का सुख भी देगा।

विशेष–जातक अपनी पसंद का विवाह करेगा। पत्नी शिक्षित व सभ्य होगी।

दृष्टि–सप्तमस्थ बुध की दृष्टि लग्न स्थान (वृष राशि) पर होगी। ऐसा जातक सुंदर शरीर वाला एवं विनम्र स्वभाव का होता है। उसके प्रयत्नों में सफलता मिलेगी।

ऱशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में आर्थिक-व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। सप्तम स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। दोनों ग्रह यहां केन्द्रवर्ती होकर लग्न को देखेंगे। फलतः 'कुलदीपक योग' बनेगा। ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। बुद्धि के चातुर्य व वाकचातुर्य से शीघ्र उन्नति को प्राप्त करेगा। विवाह जीवन में उन्नति के मार्ग खोलेगा। जातक को सभी प्रकार के भौतिक ऐश्वर्य संसाधनों की प्राप्ति सहज में होगी।

2. **बुध + चन्द्र**—चंद्रमा यहां नीच राशि का होगा पर जातक को अति पराक्रमी बनाने में सहायक होगा।

3. **बुध + मंगल**—मंगल यहां स्वगृही होकर 'रुचक योग' बनाएगा। जातक महान् पराक्रमी व राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

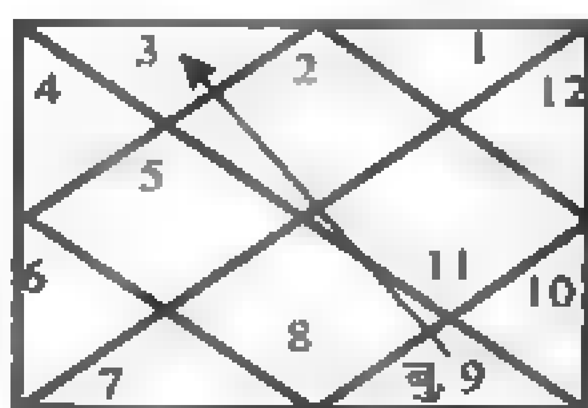
4. **बुध + शुक्र**—शुक्र के कारण 'लग्नाधिपति योग' बनेगा। जातक को जीवन के सभी क्षेत्रों में सफलता मिलेगी।

5. **बुध + गुरु**—ऐसे जातक को व्यापार से लाभ होगा। गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा।

6. **बुध + शनि**—बुध शनि की युति जातक को वेश्यागामी बना देती है। जातक भाग्यशाली होगा। अपने से बड़ी उम्र की स्त्रियों से संसर्ग करेगा।

7. **बुध + राहु**—बुध राहु जातक को युद्ध में पराजय देगा। व्यक्ति पाशविक मैथुन करेगा।

वृषलग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में



वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। बुध यहां अष्टमस्थ होकर धनु राशि में है। यह बुध की समराशि है। ऐसा जातक विख्यात, चिरंजीवी, कुलश्रेष्ठ, न्यायाधिकारी, राजा के समान दंडनायक होता है। यहां बुध के कारण 'धनहीन योग' एवं 'संतानहीन योग' बनता है। फलतः जातक को धन, विद्या व सन्तति की प्राप्ति विलम्ब से होगी। बुध अपनी राशि से सातवें एवं चौथे केन्द्रवर्ती होने से ज्यादा अनिष्टकारक नहीं है।

दृष्टि—अष्टमस्थ बुध की दृष्टि अपने ही घर, धन भाव (मिथुन राशि) पर होती है, जो जातक को धनवान बनाएगी।

निशानी—जातक पुत्रवान होगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। अष्टम स्थान में धनु राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। सूर्य आठवें होने से 'सुखभंग योग' तथा बुध आठवें जाने से 'धनहीन योग' एवं 'सन्ततिहीन योग' की क्रमशः सृष्टि होती है। फलतः यहां,

इस स्थान पर यह योग ज्यादा सार्थक नहीं है। ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु, सुख ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु, संघर्ष करना पड़ेगा। माता की सम्पत्ति सम्भवतः इसे न मिले, फिर भी इस योग के कारण अंतिम सफलता जातक को मिलेगी। जातक एक सफल व्यक्तित्व का धनी होगा।

2. **बुध + चन्द्र**—चंद्रमा की युति 'पराक्रमभंग योग' की सृष्टि करेगी। असावधानी रहने पर जातक को जेल भी हो सकती है।

3. **बुध + मंगल**—बुध तथा मंगल की युति जातक के लिए अनिष्टकारी है। जीवन साथी का बिछोह सम्भव है। गृहस्थ सुख में बाधा का संकेत है।

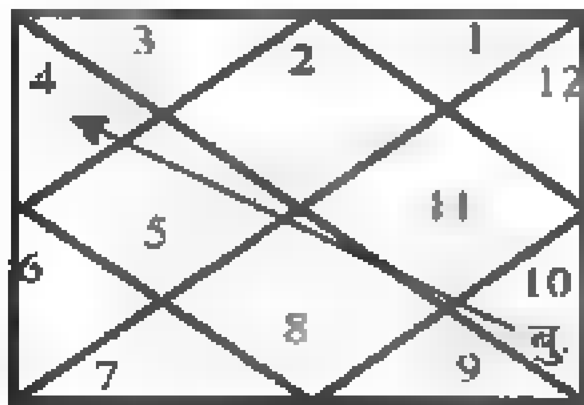
4. **बुध + शुक्र**—शुक्र 'लग्नभंग योग' बनाएगा। षष्टेश शुक्र के आठवें जाने से 'हर्षयोग' बनेगा। जातक को शुक्र व बुध की दशा इतना अनिष्ट फल नहीं दे पाएगी।

5. **बुध + बृहस्पति**—यहां बृहस्पति जातक को बहुत लम्बी उम्र देगा। क्योंकि बृहस्पति स्वगृही होकर 'सरल योग' बनाएगा। भृगुसूत्र के अनुसार, 'सप्तपुत्रवान्' जातक अधिक पुत्रों वाला होगा।

6. **बुध + शनि**—शनि 'भाग्यभंग योग' बनाएगा। जातक को धन प्राप्ति हेतु, सौभाग्य की प्राप्ति हेतु काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

7. **बुध + राहु**—राहु दुर्घटना कारक है। दायीं टांग में कष्ट देगा।

वृषलग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में



वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। बुध नवमस्थ होकर मकर राशि में बैठा है। यह बुध की सम राशि है। योग कारक बुध का भाग्य स्थान में बैठना बहुत बड़ी बात है। जातक को व्यापार के द्वारा अपार धन-सम्पत्ति मिलेगी। बुद्धि चतुराई, धर्म एवं भाग्य कदम-कदम पर जातक का साथ देंगे। जातक के पिता प्रतिष्ठित **व्यक्ति** होते हैं। जातक परिवार की सेवा करने वाला, उच्च पदाधिकारी होगा।

दृष्टि—नवमस्थ बुध की दृष्टि तृतीय भाव (कर्क राशि) पर होगी फलतः, जातक भाइयों, परिजनों व मित्रों की सेवा करेगा।

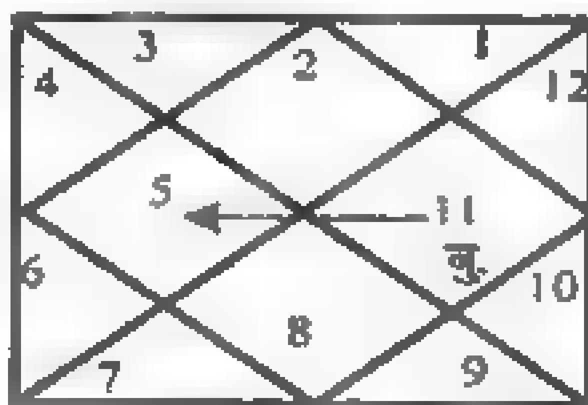
निशानी—जातक को कन्या सन्तति अधिक होगी।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय एवं सर्वांगीण विकास होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योग कारक है। नवम स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि पराक्रम स्थान पर होगी। फलतः जातक बुद्धिमान होगा एवं पराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय 24 वर्ष की आयु में हो जाएगा। जातक धनवान होगा, पर सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होने से हल्का संघर्ष रहेगा। जातक की उन्नति में माता एवं सभी जातक की मदद बराबर रहेगी।
2. **बुध + चन्द्र**–चन्द्र की युति यहां फलदायक है। जातक महान पराक्रमी होगा।
3. **बुध + मंगल**–मंगल यहां उच्च का होगा। जातक विदेश यात्रा, एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट के व्यापार से धन कमाएगा। मंगल तथा बुध की दृष्टि व्यय स्थान, पराक्रम एवं सुख भाव पर होने से जातक महान पराक्रमी होगा एवं सभी प्रकार के सुख उसे सहज में प्राप्त होंगे।
4. **बुध + बृहस्पति**–बृहस्पति यहां नीच राशि का होगा। उसकी दृष्टि लग्न स्थान, पराक्रम एवं विद्या स्थान पर होने से जातक उच्च कोटि का विद्वान्, लेखक, सम्पादक व पत्रकार होगा।
5. **बुध + शुक्र**–भृगुसूत्र के अनुसार 'संगीतपाठक दाक्षिण्यवान्' जातक नृत्य, कला, संगीत, अभिनय क्षेत्र को पढ़ाने वाला, महान चतुर कलाकार होगा।
6. **बुध + शनि**–शनि यहां स्वगृही होगा। शनि बुध की दृष्टि लाभ भाव, पराक्रम भाव एवं छठे भाव पर होगी। फलतः जातक महान पराक्रमी होगा। व्यापार में उसे लाभ होगा एवं जातक ऋण व रोग को समूल नष्ट करने में समर्थ होगा।
7. **बुध + राहु**–राहु यहां समराशि में है। यह सौभाग्य से प्राप्त होने वाले शुभ फलों में रुकावटें व बाधाएं डालेगा।

वृषलग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में



वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। बुध यहां दशमस्थ होकर कुम्भ राशि में है। केन्द्रस्थ बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बना है। यह बुध की समराशि है। योगकारक बुध का दशम स्थान में केन्द्रस्थ होकर बैठना बहुत बड़ी बात है। जातक को माता-पिता की सम्पत्ति

मिलेगी। व्यापार-व्यवसाय के माध्यम से जातक आर्थिक दृष्टि से बहुत सक्षम व सम्पन्न होगा।

दृष्टि—दशमस्थ बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक शिक्षित होगा। माता की सेवा करेगा।

निशानी—जातक को कन्या सन्तति अधिक होगी।

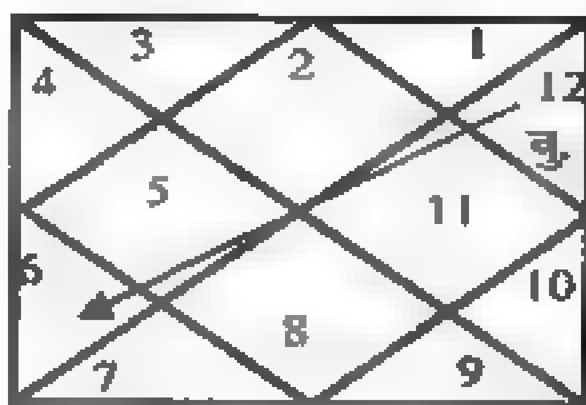
दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। दशम स्थान में कुम्भ राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। यहां सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रह केन्द्रवर्ती तथा 'कुलदीपक योग' की सृष्टि करेंगे। दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ भाव पर होगी। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। जातक धनवान होगा। जातक को पैतृक/मातृ सम्पत्ति मिलेगी। खुद का उत्तम मकान बनाएगा। वाहन सुख उत्तम होगा। जातक जीवन में विभिन्न संसाधनों से सम्पन्न एक सफल व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चन्द्र**—तृतीयेश केन्द्र में होने से 'यामिनीनाथ योग' बनेगा। जातक अनेक वाहनों का स्वामी होगा। पराक्रमी होगा।
3. **बुध + मंगल**—सप्तमेश केन्द्र में 'दिग्बली' होगा। जातक के अनेक नौकर होंगे। जातक अनेक वाहनों का स्वामी होगा।
4. **बुध + बृहस्पति**—लाभेश केन्द्र में होने से व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जातक आध्यात्मिक व धार्मिक व्यक्ति होगा।
5. **बुध + शुक्र**—शुक्र केन्द्र में होने से जातक 'अनेक वाहनों' से युक्त अति पराक्रमी एवं महत्वाकांक्षी होगा क्योंकि शुक्र उच्चाभिलाषी है अतः जातक को हर काम में सफलता मिलती रहेगी।
6. **बुध + शनि**—भाग्येश केन्द्र में 'शश योग', 'भद्सिंहासन योग' बनाएगा। जातक महाराजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं वैभवशाली जीवन जीयेगा।
7. **बुध + राहु**—राहु यहां मूल त्रिकोण स्वराशि में है। जातक विविध प्रकार के व्यापार से धन कमाएगा।

वृषलग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में

वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। बुध यहां एकादस्थ होकर मीन राशि में है। मीन राशि में बुध नीच का होता है तथा 15 अंशों



में बुध परम नीच का होगा। परन्तु एकादश भाव में बुध नवम और दशम भाव की भांति श्रेष्ठ फल देता है। ऐसे व्यक्ति उत्तम गणितज्ञ होते हैं। जीवन अनेक प्रकार की सुख-सुविधाओं से सम्पन्न होता है। जातक धर्मप्राण होता है। पुत्र-जन्म के बाद जातक का भाग्योदय तीव्रता से होता है।

दृष्टि–एकादशस्थ बुध की दृष्टि पंचम भाव (कन्या राशि) अपने घर पर होगी। फलतः जातक विद्यावान्, शिक्षित होगा। उसकी सन्तति भी शिक्षित होगी।

निशानी–जातक प्रज्ञावान होगा। 34 वर्ष की आयु के बाद किस्मत चमकती है।

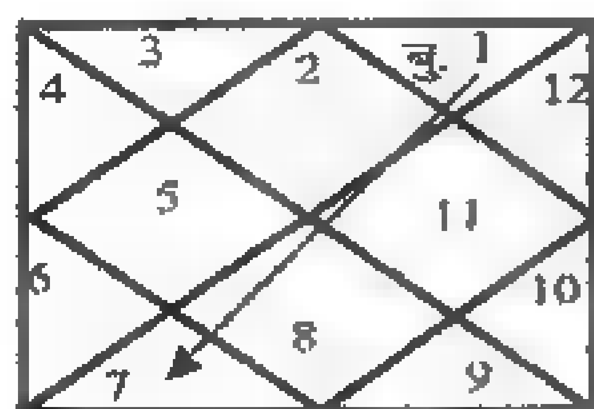
दशा–बुध अपनी दशा में धन व उत्तरोत्तर उत्तम फल देगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **'बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। एकादश स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। यहां जिस घर में बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव पर होगी जो बुध का निजी भवन है। फलतः जातक बुद्धिमान, गुप्त विद्याओं, मन्त्र-तन्त्र, ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता व शिक्षित होगा। उसकी सन्तति भी शिक्षित होगी। जातक व्यापार के माध्यम से तरक्की प्राप्ति करेगा। घर का मकान एवं सभी भौतिक सुखों की उसे सहज में प्राप्ति होगी।
2. **बुध + चन्द्र**–तृतीयेश लाभ में जाने से जातक को इष्ट-मित्रों से लाभ होगा। जातक का जनसम्पर्क विस्तृत होगा।
3. **बुध + मंगल**–सप्तमेश लाभ में होने से जातक को अनेक स्त्रियों द्वारा धन लाभ होगा। विपरीत लिंगी से मित्रता लाभप्रद रहेगी।
4. **बुध + बृहस्पति**–यह युति 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि करेगी। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य, वैभव को भोगेगा।
5. **बुध + शुक्र**–यह युति 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि करेगी। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य-वैभव को भोगेगा। जातक अनेक प्रकार से धनवान होगा।
6. **बुध + शनि**–भाग्येश, दशमेश का लाभ स्थान में होकर लग्न स्थान, पंचम भाव एवं अष्टम भाव को देखेंगे। ऐसा जातक महान पराक्रमी, सौभाग्यशाली एवं लम्बी आयु को प्राप्त करता है।

7. **बुध + राहु**–राहु यहां शत्रु राशि में है। एकादश में राहु का बैठना शुभ फलदायक है। जातक को गुप्त शत्रुओं से सावधान रहना होगा।

वृषलग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में



वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। बुध यहां द्वादशस्थ होकर मेष राशि में है। बुध मंगल के घर में है। मंगल के प्रति उदासीन है परन्तु मंगल बुध से शत्रुता रखता है। यहां बुध के कारण 'धनहीन योग' एवं 'सन्तानहीन योग' भी बनता है। फलत: बुध अशुभ फलदायक है। जातक का बौद्धिक एवं मानसिक स्तर विकसित नहीं होता। ऐसा जातक राजा द्वारा पीड़ित हो सकता है। न्यायालय से दंड मिल सकता है। जातक की सन्तति उदण्ड हो सकती है। जातक का धन व्यर्थ के कार्यों में खर्च होगा। जातक गुप्त विद्याओं का जानकार होगा।

दृष्टि–द्वादशस्थ बुध छठे स्थान (तुला राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–बहन-बेटी की चिन्ता रहेगी।

दशा–बुध की दशा शुभ कार्यों में खर्च बढ़ाएगी व यात्रा कराएगी। जातक को ऋणी (कर्जदार) भी बनाएगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। द्वादश स्थान में मेष राशिगत यह युति वस्तुत: सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहां उच्च का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि छठे भाव पर होगी। फलत: जातक बुद्धिमान एवं तेजस्वी होगा, यात्राओं से कमाएगा, विदेश जाएगा। पर पैसा पास में टिकेगा नहीं तथा जातक शत्रु व रोग का समूल नाश करने में पूर्ण समर्थ होगा। जातक जीवन में कामयाब एवं सफल व्यक्तियों की श्रेणी में अग्रगण्य होगा।
2. **बुध + चन्द्र**–चंद्रमा यहां पराक्रम भंग करता है। राजदंड के कारण जातक जेल भी जा सकता है।
3. **बुध + मंगल**–मंगल विवाह सुख में बाधक होकर कुण्डली को मांगलिक बनाएगा। जातक का अपने जीवन साथी के संग मनमुटाव रहेगा।

4. **बुध + बृहस्पति**–बृहस्पति 'लाभभंग योग' के साथ 'सरल योग' की सृष्टि करेगा। जातक पुत्रवान् होगा।

5. **बुध + शुक्र**–शुक्र 'लग्नभंग योग' बनाएगा। परन्तु षष्टेश शुक्र के बारहवें जाने से 'हर्ष योग' बना। जातक को शुक्र व बुध की दशा इतना अनिष्ट फल नहीं दे पाएगी, जितनी सम्भावना है।

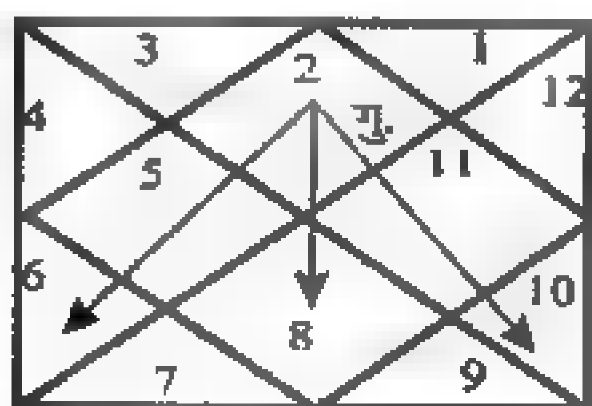
6. **बुध + शनि**–शनि बारहवें जाने से 'भाग्यभंग योग, राज्यभंग योग' बना। जातक को धन, नौकरी व सौभाग्य की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।

7. **बुध + राहु**–राहु यहां व्यर्थ की यात्राओं में रुपया खर्च कराएगा। जातक धन का अपव्य अधिक मात्रा में करेगा। संतान को लेकर भी व्यर्थ का रुपया खर्च होगा।

❑❑❑

वृषलग्न में गुरु की स्थिति

वृषलग्न में गुरु की स्थिति प्रथम स्थान में



वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। लग्नस्थ बृहस्पति वृष राशि में है जो कि बृहस्पति की शत्रु राशि है। यहां बैठकर बृहस्पति 'कुलदीपक योग', 'केसरी योग' की सृष्टि करेगा। प्रथम भाव में बृहस्पति बलवान होता है। फलतः अष्टमेश होते हुए भी अष्टमेश की अशुभता (दुष्टता) का फल नहीं देगा। जातक सौम्य, शीलवान, कर्त्तव्यनिष्ठ, गंभीर एवं विश्वसनीय स्वभाव का होगा। जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करेगा। जातक ऊर्जावान् व तेजस्वी होगा तथा अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि—लग्नस्थ वृष राशिगत बृहस्पति की दृष्टि पंचम भाव (कन्या राशि), सप्तम भाव (वृश्चिक राशि) एवं भाग्य भवन (मकर राशि) पर होगी। फलतः जातक को यश-विद्या, उत्तम सन्तति, सुंदर पत्नी एवं माता-पिता के सुख की प्राप्ति होगी।

विशेष—जातक का जन्म पिता व परिवार की किस्मत को जगाने के लिए होगा।

दशा—बृहस्पति की दशा जातक की सर्वांगीण उन्नति कराएगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + चन्द्र**—आपकी जन्मपत्रिका के वृषलग्न में प्रथम स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। लग्न स्थान में चन्द्र उच्च का होगा। फलतः आपका पराक्रम, जनसम्पर्क बहुत तेज रहेगा। इस गजकेसरी योग का प्रभाव सन्तान भवन, सप्तम भाव एवं भाग्य भाव

पर पड़ रहा है। फलतः सन्तान उत्तम होगी, पत्नी सुंदर होगी, भाग्य बल भी उत्तम प्रकार का रहेगा।

2. **गुरु + सूर्य**—गुरु, सूर्य की युति सुखेश की लाभेश के साथ युति होगी। यह युति जातक का व्यक्तित्व बढ़ाने में सहायक होगी।

3. **गुरु + मंगल**—गुरु+मंगल की युति यहां गृहस्थ सुख बढ़ाने में सहायक है। जातक थोड़े खर्चीले स्वभाव का होगा।

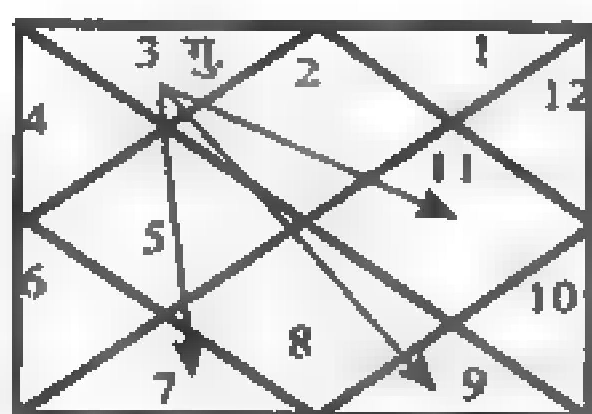
4. **गुरु + बुध**—धनेश व पंचमेश बुध का लग्न स्थान में गुरु के साथ बैठना अत्यन्त शुभ है। जातक धनवान, पुत्रवान एवं कीर्तिवान होगा।

5. **गुरु + शुक्र**—शुक्र यहां स्वगृही होकर 'मालव्य योग' बनाएगा। शुक्र+गुरु की युति प्रथम स्थान में जातक को राजा तुल्य ऐश्वर्य, वैभव व सम्पन्नता की वृष्टि करेगी।

6. **गुरु + शनि**—भाग्येश, दशमेश शनि का लग्न में बृहस्पति के साथ बैठना व्यापार-व्यवसाय की उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। जातक पराक्रमी, पुत्र सन्तति युक्त एवं राजनीति में पद प्राप्त करने वाला तथा गम्भीर स्वभाव का व्यक्ति होता है।

7. **गुरु + राहु**—गुरु+राहु की युति लग्न में 'चाण्डाल-योग' की सृष्टि करती है। व्यक्ति दुस्साहसी एवं धार्मिक छलावे में विश्वास रखने वाला होगा।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति द्वितीय स्थान में



वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। धनस्थ बृहस्पति मिथुन राशि में है। मिथुन बृहस्पति की शत्रु राशि है। फलतः जातक के धन संग्रह एवं कुटुम्ब सुख में बाधाएं आती हैं। जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करेगा। उसे विद्यालय, कालेज और शिक्षण-संस्थान द्वारा वजीफा मिलेगा। जातक धार्मिक कार्यों में रुचि लेगा।

दृष्टि—द्वितीय भाव में स्थित मिथुन राशिगत बृहस्पति की दृष्टि छठे भाव (तुला राशि), अष्टमभाव (धनु राशि) एवं दशम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलतः जातक की आयु में वृद्धि होगी। राजपक्ष (राजनीति) में जातक का दबदबा रहेगा।

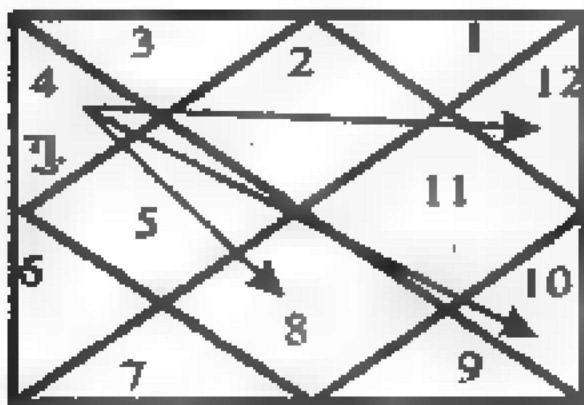
निशानी—ऐसे जातक को अपनी मौत का पता बहुत पहले लग जाएगा।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + चन्द्र**—आपकी जन्मपत्रिका के वृषलग्न में द्वितीय स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। द्वितीय स्थान में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री है। यहां दोनों ग्रह षष्ट भाव, अष्टम स्थान एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। फलतः आपको माता या पैतृक सम्पत्ति सम्बन्धी पूर्ण लाभ नहीं मिलेगा। शत्रु परास्त तो होंगे पर परेशान करते रहेंगे।
2. **गुरु + सूर्य**—सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश की युति द्वितीय भाव में वाणी के लिए ज्यादा शुभ नहीं है। जातक अटक-अटक कर बोलेगा या वाणी में स्खलन होगा। सूर्य के संग बृहस्पति का बल क्षीण होता है।
3. **गुरु + मंगल**—ऐसा जातक धार्मिक होता है। ज्योतिषी होता है। अध्यात्म व धर्म के क्षेत्र में कुछ न कुछ नया करने की प्रवृत्ति रखता है। जातक तकनीकी कार्य एवं व्यापार द्वारा यथेष्ट धन कमाएगा।
4. **गुरु + बुध**—धनेश बुध की बृहस्पति के साथ युति 'शुत्रूमूल धनयोग' बनाती है। जातक को शत्रुओं के द्वारा, मुकदमेबाजी के द्वारा धन की प्राप्ति होगी।
5. **गुरु + शुक्र**—शुक्र के साथ बृहस्पति होने से मुख रोग की सम्भावना रहेगी।
6. **गुरु + शनि**—भाग्येश, दशमेश शनि का धन स्थान में होना शुभ है। जातक अल्प प्रयत्न से अधिक धन कमाएगा। जातक धन के मामले में भाग्यशाली होगा।
7. **गुरु + राहु**—गुरु, राहु की युति से 'चाण्डाल योग' बनता है। धन प्राप्ति में बाधा के साथ गुप्तरोग की सम्भावना बनी रहेगी।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति तृतीय स्थान में



वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। तृतीय भावस्थ बृहस्पति कर्क राशि में है, जहां बृहस्पति हर्षित होकर उच्च का है। कर्क राशि के 5 अंशों तक बृहस्पति परमोच्च का रहता है। जातक का पराक्रम तेज रहेगा। उसके भाई-बहनों के सुख में वृद्धि होगी। जातक की आर्थिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक उन्नति होती है। जातक परिजनों-कुटुम्बियों की सेवा में पूर्ण रुचि लेगा।

दृष्टि—कर्क राशिगत तृतीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि सप्तम भाव (वृश्चिक राशि), नवम भाव (मकर राशि) एवं एकादश भाव (मीन राशि) पर होगी। ऐसे

जातक को पत्नी सुख, बड़े भाई का सुख एवं धन-सौभाग्य का सुख पूर्ण रूप से मिलेगा। एकादशेश की एकादश भवन पर दृष्टि अनेक प्रकार के लाभ को देने वाली मानी गई है।

निशानी—विवाह के बाद ससुराल की तरक्की होगी।

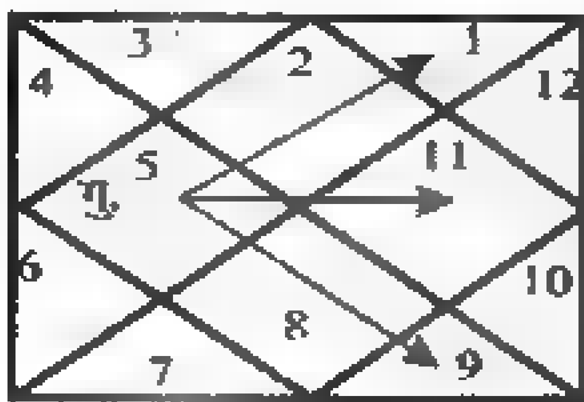
दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में साझेदारी या व्यापार द्वारा धन लाभ होगा।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + चन्द्र**—आपकी जन्मपत्रिका में वृषलग्न में तृतीय स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। तृतीय स्थान में बृहस्पति उच्च का एवं चंद्रमा स्वगृही होगा। यहां दोनों शुभग्रह बलवान होकर सप्तम भाव, भाग्य भवन एवं लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को पत्नी का सुख मिलेगा। पिता की सम्पत्ति मिलेगी। व्यापार में लाभ होगा।
2. **गुरु + सूर्य**—यहां वस्तुतः सुखेश सूर्य की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति के साथ युति तृतीय स्थान में होगी। बृहस्पति यहां उच्च का होकर, भातृ+सुख एवं मित्रों की संख्या बढ़ायेगा।
3. **गुरु + मंगल**—मंगल व बृहस्पति की युति से यहां 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। फलतः दोनों ग्रह ज्यादा शुभफलदायी हो जाएंगे। जातक महान पराक्रमी, तेजस्वी होकर राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
4. **गुरु + बुध**—अष्टमेश व द्वितीयेश की युति जातक की वाणी में दोष उत्पन्न करती है। भाइयों में भारी मन-मुटाव की स्थिति बनती है।
5. **गुरु + शुक्र**—उत्तम नौकरी तथा व्यवसाय से धन लाभ मिलेगा। गृहस्थ सुख उत्तम होगा। बड़े भाई से लाभ रहेगा।
6. **गुरु + शनि**—यहां कर्कस्थ बृहस्पति शनि के साथ उच्च का होगा। जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा। भाग्य भी ठीक रहेगा। उन्नति शीघ्र होगी।
7. **गुरु + राहु**—यह युति 'चाण्डाल योग' की सृष्टि करती है। जातक को बड़े भाई का सुख नहीं मिलेगा।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। यहां चतुर्थ भावस्थ बृहस्पति सिंह राशि में होगा। यहां बृहस्पति अपने



मित्र ग्रह सूर्य की राशि में है। जातक उच्च शिक्षा पाने वाला, उत्तम भवन, उत्तम वाहन के सुख से युक्त होता है। जातक राजा के समान ऐश्वर्यवान् होकर अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करता है।

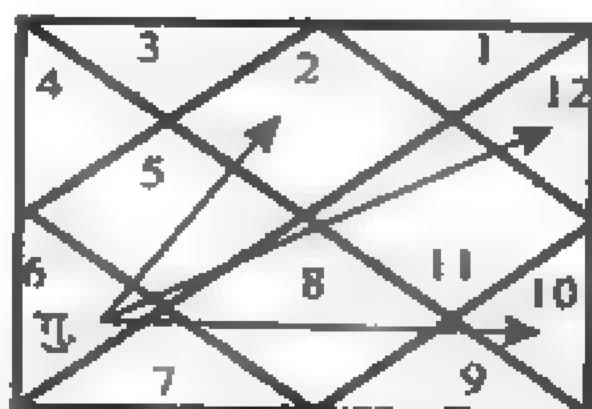
निशानी—जातक न्यायप्रिय व धैर्यशाली होता है।

दृष्टि—सिंह राशि गत चतुर्थ भाव में स्थित बृहस्पति की दृष्टि अष्टम भाव (धनु राशि), दशम भाव (कुम्भ राशि) एवं द्वादश भाव (मेष राशि) पर रोगी। ऐसा जातक अपने शत्रुओं से समझौता करता है। उसकी आयु दीर्घ होती है। जातक परोपकार व सद्कार्यों में रुपया खर्च करता है।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + चन्द्र**—आपकी जन्मपत्रिका के वृषलग्न में चतुर्थ स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह अग्नि राशि सिंह में होंगे। जहां से ये अष्टम भाव, दशम भाव एवं खर्च स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। ऐसे में जातक को स्वास्थ्य सम्बन्धी गड़बड़ी रहेगी। पिता का प्रकोप रहेगा। जातक का स्वभाव खर्चीला रहेगा। पैसा पास में नहीं टिकेगा।
2. **गुरु + सूर्य**—सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति की युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक ऋण, रोग एवं शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
3. **गुरु + बुध**—जातक अनेक प्रकार के धंधों से धन कमाएगा। जातक को लाभ ही लाभ होता रहेगा।
4. **गुरु + मंगल**—बृहस्पति मंगल के साथ केन्द्रस्थ होकर 'केसरी योग' बनाएगा तथा जातक की आयु एवं धन में वृद्धि करेगा।
5. **गुरु + शुक्र**—जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा तथा तीर्थाटन एवं धार्मिक कार्यों में रुचि लेगा।
6. **गुरु + शनि**—सिंहस्थ शनि के साथ बृहस्पति ज्यादा शुभ नहीं है। जातक कुल का दीपक होगा। परन्तु सुख संसाधनों की प्राप्ति में बाधा रहेगी।
7. **गुरु + राहु**—गुरु तथा राहु की युति 'चाण्डाल योग' बनाएगी। जातक को पिता के पूर्ण सुख की कमी रहेगी।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति पंचम स्थान में



वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। पंचम भावस्थ बृहस्पति कन्या राशि में होगा जो कि बृहस्पति की शत्रु राशि है। ऐसा जातक बुद्धिमान, धनवान, महान् वक्ता, विद्वान् व दार्शनिक होता है। ऐसे जातक के परिवार में बाप से पोते तक सभी सुखी व धनवान होते हैं। जातक की सन्तान आज्ञाकारी होती है। सन्तान की शिक्षा-दीक्षा व संस्कार उत्तम होते हैं।

निशानी–पंचम भाव में बृहस्पति पुत्र कम और कन्या अधिक देगा। पुत्र थोड़ा विद्रोही स्वभाव का होगा।

दृष्टि–कन्या राशिगत पंचमस्थ बृहस्पति की दृष्टि नवम भाव (मकर राशि), एकादश भाव (मीन राशि) एवं लग्न भाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक के भाग्य में वृद्धि, लाभ में वृद्धि एवं प्रयत्न–पुरुषार्थ का लाभ बराबर मिलेगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा उत्तम फल देगी।

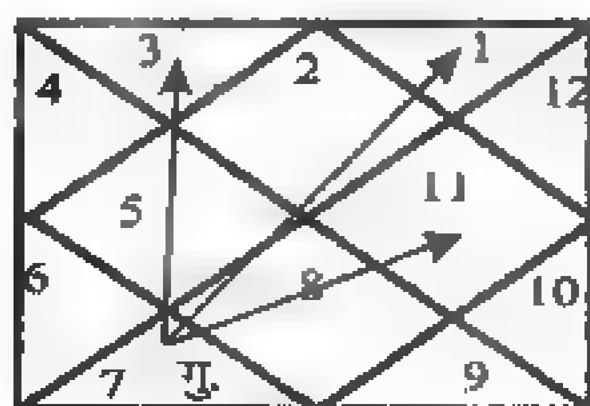
बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंन्द्र**–आपकी जन्मपत्रिका के वृषलग्न में पंचम स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। पंचम स्थान में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री है। जहां से ये दोनों ग्रह नवम भाव, एकादश स्थान एवं लग्न स्थान को देखेंगे। फलतः भाग्योदय शीघ्र होगा व्यापार–व्यवसाय में उन्नति होगी। जातक के व्यक्तित्व में निखार 32 वर्ष की आयु के बाद आएगा।
2. **गुरु + सूर्य**–सुखेश सूर्य की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति के साथ युति ज्यादा सार्थक नहीं है क्योंकि बृहस्पति मुख्य मारकेश है जातक संतति का गर्भपात होगा। एकाध की अकाल मृत्यु होगी।
3. **गुरु + मंगल**–अष्टमेश का त्रिकोण में जाना शुभ है, परन्तु जातक को विद्या में रुकावट देगा एवं प्रथम संतति शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) द्वारा दिलाएगा।
4. **गुरु + बुध**–'मेधावी मधुर भाषी बुद्धिमान' जातक मेधावी, बुद्धिमान एवं गंभीर वाणी बोलने वाला, व्यापार से लाभ कमाने वाला व्यक्ति होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–गुरु+शुक्र की युति गर्भपात एवं संतति की अकाल मृत्यु की संकेतक है।

6. **गुरु + शनि**–भृगुसूत्र के अनुसार 'गुरुदृष्टे स्त्रीद्वयम्' जातक की दो पत्नियां होंगी। प्रायः जातक को प्रथम पुत्र एवं द्वितीय पुत्री होती है।

7. **गुरु + राहु**–गुरु राहु के 'चाण्डाल योग' के कारण पुत्र सन्तति में बाधा तथा जातक को भौतिक जीवन में अनासक्ति, वैराग्य हो जाएगा। भृगुसूत्र कहता है–'राहुकेतु युते सर्पशापात् सुतक्षमः' राहु या केतु यदि बृहस्पति के साथ हों तो सर्प के शाप से सन्तान का नाश होता है। परन्तु कालसर्पयोग शान्ति से पुत्र की प्राप्ति होगी।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति षष्ट्म स्थान में



वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। यहां छठे स्थान में बृहस्पति तुला राशि में होगा। तुला राशि बृहस्पति की शत्रु राशि है। बृहस्पति छठे स्थान (खड्डे) में जाने से **'लाभभंग योग'** बनेगा परन्तु अष्टमेश का छठे जाना शुभ माना गया है। इससे सरल योग बना जिससे बृहस्पति का अशुभत्व नष्ट हो गया है। ऐसा जातक भाई-बहन, मामा-मामी, ननिहाल, मौसी को सुख देने वाला होता है। जातक कामी होता है। सुंदर स्त्रियों का भोग करता है। जातक के गुप्त शत्रु बहुत होते हैं।

दृष्टि–षष्टम भावगत तुला के बृहस्पति की दृष्टि दशम भाव (कुम्भ राशि), द्वादश भाव (मेष राशि) एवं धन भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक राज्यपक्ष से लाभ पाने वाला, तीर्थयात्रा में रुचि लेने वाला, सामाजिक व धार्मिक कार्यों द्वारा धन लाभ प्राप्त करता है।

निशानी–पचास वर्ष की आयु के बाद बहुमूत्र, मधुमेह, हर्निया व गुर्दे की बीमारी सम्भव है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चन्द्र**–आपकी जन्मपत्रिका के वृषलग्न में षष्टम स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। छठे स्थान में चंद्रमा 'पराक्रमभंग योग' एवं बृहस्पति 'लाभभंग योग' की सृष्टि कर रहा है। छठे भाव में निर्बल स्थिति में बैठे ये ग्रह दशम भाव, व्यय भाव एवं

धन भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः राजनीति में धोखा, मित्रों से धोखा, व्यापार-व्यवसाय में धोखा मिलेगा।

2. **गुरु + सूर्य**—अष्टमेश व लाभेश बृहस्पति का सूर्य के साथ छठे जाना शुभ नहीं है परन्तु अष्टमेश के छठे जाने से 'सरल योग' बना फलतः बृहस्पति का अशुभत्व नष्ट हो गया। जातक के पैर में चोट पहुंचेगी पर जातक बच जाएगा।

3. **गुरु + मंगल**—बृहस्पति के छठे जाने से 'लाभभंग योग' बनेगा। परन्तु अष्टमेश का छठे जाने से 'सरल योग' की सृष्टि होगी। बृहस्पति+मंगल की युति धार्मिक यात्राओं में चोरी होने का संकेत देती है।

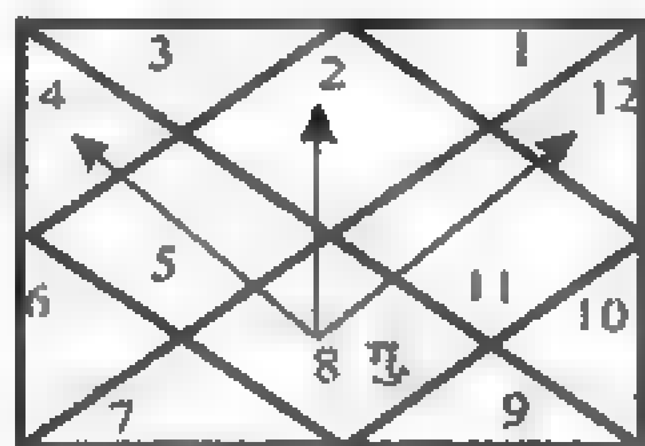
4. **गुरु + बुध**—जातक को गृहस्थ सुख 37 वर्ष की आयु के बाद मिलेगा। गुरु यहां 'सरल योग' बनाएगा। फलतः बुध के शुभत्व में वृद्धि होगी।

5. **गुरु + शुक्र**—शुक्र 'हर्षयोग' में एवं बृहस्पति 'सरल योग' से होगा। जातक व्यापार प्रिय एवं सफल व्यक्ति होगा पर संघर्ष से मुक्ति नहीं होगी।

6. **गुरु + शनि**—तुला राशिगत शनि के साथ अष्टमेश बृहस्पति की युति शुभ है। जातक शत्रुओं का नाश करने में समर्थ रहेगा।

7. **गुरु + राहु**—राहु गुरु की युति 'चाण्डाल योग' की सृष्टि करती है। जातक को गुप्त शत्रु या गुप्त रोग से पीड़ा होगी।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति सप्तम स्थान में



वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। यहां सप्तम भावस्थ बृहस्पति वृश्चिक राशि में होगा। वृश्चिक बृहस्पति की मित्र राशि है। बृहस्पति यहां केन्द्रस्थ होने के कारण 'केसरी योग' एवं 'कुलदीपक योग' की सृष्टि भी हुई है। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक का जीवन साथी सुंदर गुणी और धैर्यवान होता है। जातक न्यायप्रिय होता है। उसे जाति व समाज में अच्छी मान्यता मिलती है।

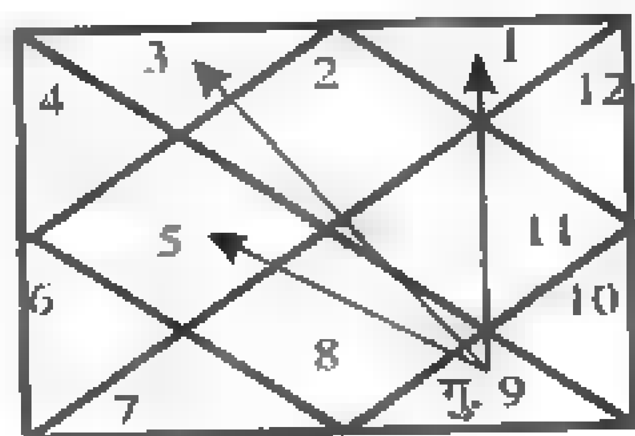
दृष्टि—सप्तम भावगत वृश्चिक के बृहस्पति की दृष्टि लाभ स्थान स्वयं के घर (मीन राशि) लग्न (वृष राशि) एवं तृतीय भाव अपनी उच्च राशि (कर्क) पर होगी। फलतः जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ, जातक स्वयं के रुचिकर कार्य में उन्नति एवं कुटुम्बी जनों में पराक्रमी होता है।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक की अकल्पनीय उन्नति होगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चन्द्र**–आपकी जन्मपत्रिका के वृषलग्न में सप्तम स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। सप्तम स्थान में चंद्रमा नीच का होगा। केन्द्र में बैठे दोनों शुभ ग्रह लाभ स्थान, लग्न भाव एवं पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः विवाह के तत्काल बाद, भाग्योदय, व्यक्तित्व बढ़ोतरी होगी तथा मित्रों व शुभचिन्तकों की संख्या में बढ़ोतरी होगी।
2. **गुरु + सूर्य**–सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति केन्द्रवर्ती अपने घर (मीन राशि) एवं उच्च राशि (कर्क) को देखेगा। बृहस्पति यहां मारकेश होते हुए भी जातक की उन्नति में सहायक होकर उसके व्यापार एवं पराक्रम को बढ़ाएगा।
3. **गुरु + मंगल**–लाभेश का केन्द्रगत होना 'केसरी योग' बनाएगा। बृहस्पति अपने घर (मीन राशि) लग्न एवं अपनी उच्च राशि (कर्क) को देखेगा। जातक को रोग के कारण शल्य चिकित्सा (आपरशन) होगा।
4. **गुरु + बुध**–ऐसे जातक को व्यापार से लाभ होगा। गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक परम्परागत विवाह में रुचि रखेगा। व्यापार से लाभ कमाएगा।
6. **गुरु + शनि**–अष्टमेश बृहस्पति का सप्तम स्थान में शनि के साथ होना गृहस्थ सुख में बाधक है।
7. **गुरु + राहु**–यहां 'चाण्डाल योग' बना। गुरु राहु की युति सप्तम भाव में पति-पत्नी में स्थायी मनमुटाव उत्पन्न करेगी।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति अष्टम स्थान में



वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। यहां आठवें स्थान में बृहस्पति धनु राशि का स्वगृही होगा। बृहस्पति आठवें जाने से 'लाभभंग योग' बना परन्तु अष्टमेश के अष्टम स्थान में होने से 'सरल योग' की सृष्टि होती है जिससे बृहस्पति का अशुभत्व पूर्णतः नष्ट हो गया है। बृहस्पति और अष्टम भाव दोनों ही आयु के

प्रतीक हैं। अत: ऐसा जातक परिवार में लम्बी आयु वाला होगा। ऐसा जातक दु:खियों की सेवा करने वाला परोपकारी होता है।

दृष्टि—अष्टम भावगत स्वगृही बृहस्पति की दृष्टि व्यय भाव (मेष राशि), धनभाव (मिथुन राशि) एवं सुख भाव (सिंह राशि) पर होगी। ऐसा जातक धनवान होता है। भौतिक संसाधनों से युक्त सुखी होता है तथा खर्चीले स्वभाव का दानी होता है।

निशानी—जातक का जीवन साथी सुखी एवं मधुर वाणी बोलने वाला होता है। जातक को अनायास सम्पत्ति वसीयत या बीमे की राशि के रूप में प्राप्त होती है।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। स्वास्थ्य लाभ-देगी।

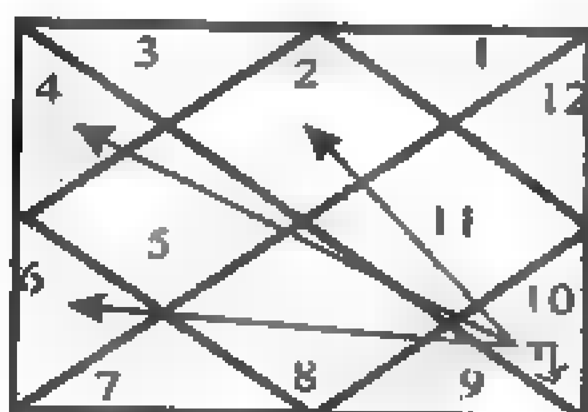
बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + चन्द्र**—वृषलग्न में अष्टम स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुत: तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। आठवें स्थान में बृहस्पति स्वगृही होगा परन्तु चन्द्र-बृहस्पति आठवें होने से क्रमश: 'पराक्रमभंग योग' [illegible] उतना नहीं मिलेगा। जितना मिलना चाहिए। फिर भी जीवन में कोई काम रुका हुआ नहीं रहेगा।
2. **गुरु + सूर्य**—सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश की युति अष्टम स्थान में कष्टदायक है। परन्तु अष्टमेश अष्टम में स्वगृही होने से 'सरल योग' बना फलत: जातक को दीर्घायु प्राप्त होगी तथा दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा।
3. **गुरु + मंगल**—बृहस्पति के आठवें जाने से 'लाभभंग योग' बनेगा परन्तु अष्टमेश अष्टम में स्वगृही होने से 'सरल योग' बृहस्पति के अशुभ फल को नष्ट करेगा। यह युति व्यक्ति को धार्मिक बनाएगी। जातक बड़े भाई का आदर करेगा।
4. **गुरु + बुध**—यहां बृहस्पति जातक को बहुत लम्बी उम्र देगा क्योंकि बृहस्पति स्वगृही होकर 'सरल योग' बनाएगा। भृगुसूत्र के अनुसार 'सप्तपुत्रवान्' जातक अधिक पुत्रों वाला होगा।
5. **गुरु + शुक्र**—की युति ज्यादा शुभ नहीं है। ऐसा जातक गुप्तांग में बीमारी भोगने वाला होता है। स्वयं की पत्नी से अनबन पर अन्य स्त्रियों पर धन खर्च करने वाला व्यक्ति होता है। जीवन में दो-तीन बार ऑपरेशन कराने का योग जरूर बनेगा। अष्टमेश अष्टम में स्वगृही होने से 'सरल योग' जातक की दीर्घायु प्रदान करेगा।

6. **गुरु + शनि**–अष्टमेश बृहस्पति का अष्टम भाव में शनि के साथ होना शुभ है। फिर भी गुप्त रोग, दायें पैर में चोट का खतरा बना रहेगा।

7. **गुरु + राहु**–यहां 'चाण्डाल योग' अनिष्ट सूचक है। गुप्त शत्रु एवं गुप्त रोग जातक को परेशान करेंगे।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति नवम स्थान में



वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। यहां भाग्य भवन में बृहस्पति मकर राशि का होगा। यहां बृहस्पति नीच राशि का होगा तथा मकर राशि के 5 अंशों में बृहस्पति परम नीच का होगा। बृहस्पति नवमें भाव का कारक है तथा मनुष्य के धर्म, सौभाग्य एवं सन्तान का प्रतीक ग्रह भी है। इसका नवम (भाग्य) स्थान [illegible]
होगा। राजा होते हुए भी त्यागी होगा। धार्मिक [illegible]
होगा।

निशानी–बृहस्पति जनित सुंदर फल कुछ विलम्ब से मिलेंगे।

दृष्टि–बृहस्पति नवम भाव में बैठकर लग्न स्थान (वृष राशि), पराक्रम भाव (कर्क राशि) एवं पंचम भाव (कन्या राशि) को पूर्ण दृष्टि में देख रहा है। फलतः जातक को अल्प प्रयत्न से अधिक लाभ होगा। जातक पराक्रमी होगा, अपने भाई-बहनों से प्यार करेगा एवं उत्तम सन्तति (पुत्र सन्तान) से युक्त होगा।

दशा–बृहस्पति की दशा सुंदर फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

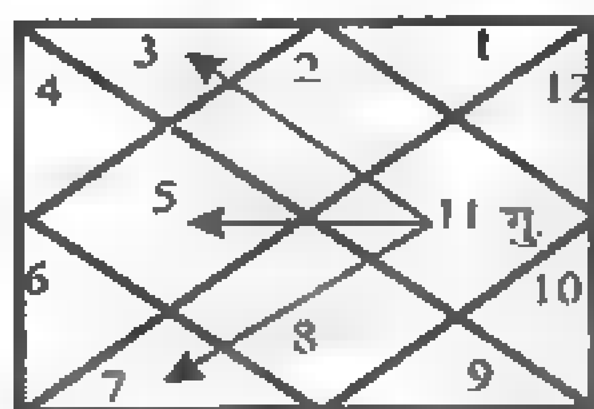
1. **गुरु + चन्द्र**–आपकी जन्मपत्रिका के वृषलग्न में नवम स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। नवमें स्थान में बृहस्पति नीच का होगा परन्तु इन दोनों शुभग्रहों की दृष्टि लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम भाव पर रहेगी। फलतः प्रथम सन्तति के बाद आपका विशेष भाग्योदय होगा। राजनीति में आपकी जीत होगी तथा मित्रों से लाभ बराबर मिलता रहेगा।

2. **गुरु + सूर्य**–सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति की युति नवम

स्थान में होगी। यहां बृहस्पति नीच का होगा। यह युति व्यापार सुख में वृद्धिकारक साबित होगी।

3. **गुरु + मंगल**—लाभेश का भाग्य में होना 'नीचभंग राजयोग' बनाएगा क्योंकि बृहस्पति नीच का एवं मंगल उच्च का होगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी एवं ऐश्वर्यवान होगा। बुद्धि धार्मिक एवं परोपकारी होगी।
4. **गुरु + बुध**—बृहस्पति यहां नीच राशि का होगा पर उसकी दृष्टि लग्न स्थान, पराक्रम एवं विद्या स्थान पर होने से जातक उच्च कोटि का विद्वान, लेखक, सम्पादक व पत्रकार होगा।
5. **गुरु + शुक्र**—यह युति भाग्य में वृद्धिदायक है।
6. **गुरु + शनि**—अष्टमेश बृहस्पति जब शनि के साथ होगा तो 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
7. **गुरु + राहु**—यहां राहु की युति 'चाण्डाल योग' बनाएगी। जातक के भाग्योदय में घोर बाधाएं आएंगी।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति दशम स्थान में



वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। यहां बृहस्पति दशम भाव में कुम्भ राशि का होगा। यह बृहस्पति की समराशि है। बृहस्पति केन्द्रस्थ होने के कारण क्रमशः (केसरी योग) एवं (कुलदीपक योग) की सृष्टि होगी। दशम भाव में बृहस्पति सभी अरिष्टों का नाशक एवं राजातुल्य यश ऐश्वर्य देने वाला होता है। परन्तु ऐसा जातक हठी, एकान्तवासी, शुष्क एवं कंजूस स्वभाव का होता है। फिर भी 'प्रौढ़कीर्ति बहुजनपूज्यः' [redacted] जाति व समाज में पूज्य आदरणीय स्थान को प्राप्त करता है।

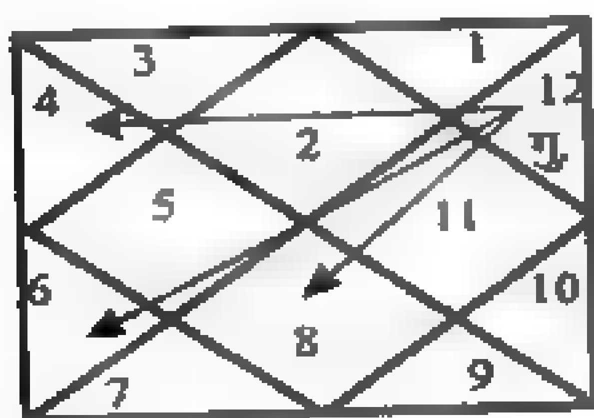
दृष्टि—दशम भाव में कुम्भ राशिगत बृहस्पति की दृष्टि धन भाव (मिथुन राशि) सुख भाव (सिंह राशि) एवं छठे भाव (तुला राशि) पर होगी। ऐसा जातक धनवान, पूर्णसुखी एवं शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम होता है

दशा—बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होती है। नौकरी लगती है या राज्य की कृपा प्राप्त होती है।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चन्द्र**–वृषलग्न में प्रथम स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। दसवें भाव में बैठकर इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि धनस्थान, सुखस्थान, एवं षष्टम भाव पर होगी। फलतः 24 वर्ष की आयु के बाद धनप्राप्ति होनी शुरू होगी। जातक अपने शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होगा तथा 36 वर्ष की आयु के बाद घर का मकान दो मंजिला बनायेगा।
2. **गुरु + सूर्य**–सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति की युति यद्यपि निष्फल है तथापि व्यापार वृद्धि की द्योतक है। जातक के पिता की समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रहेगी।
3. **गुरु + मंगल**–भृगुसूत्र के अनुसार यह युति (गजान्तैश्वर्यवान) जातक हाथी जैसे बड़े वाहन से युत ऐश्वर्यवान होता है।
4. **गुरु + बुध**–लाभेश केन्द्र में होने से व्यापार–व्यवसाय में लाभ होगा। जातक आध्यात्मिक व धार्मिक व्यक्ति होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–'बहुभाग्यवान' केन्द्रस्थ बृहस्पति 'केसरी योग' के कारण शुक्र के साथ प्रचुर लाभ देगा।
6. **गुरु + शनि**–लाभेश, अष्टमेश बृहस्पति की युति केन्द्रवर्ती होने से जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगेगा।
7. **गुरु + राहु**–गुरु के साथ राहु होने के कारण 'चाण्डाल योग' बनेगा। जातक को राजदण्ड (अदालत से सजा) मिलेगा।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति एकादश स्थान में



वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। एकादश भाव में स्थित छठे भाव में छठे स्थान पर होने के कारण एक दुष्ट स्थान माना गया। इसमें यहां अष्टमेश का पापत्व भी आ जाता है। इसलिए यह रोग, ऋण व शत्रुओं का भी स्थान है। ऐसा जातक शोध कर्त्ता होता है। स्वबुद्धि, ज्ञान, विवेक से प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होता है। व्यापार या व्यावसायिक स्पर्धाओं में आगे रहकर धन प्राप्त करता है। ऐसा जातक वेद–शास्त्रों का ज्ञाता, यज्ञ करने वाला, पुत्र-सन्तान से धन व यश को प्राप्त करने वाला होता है।

दृष्टि–एकादश स्थान में स्थित स्वगृही बृहस्पति की दृष्टि तृतीय भाव (कर्क राशि), पंचम भाव (कन्या राशि) एवं सप्तम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक पराक्रमी होगा। परिजनों का शुभ चिन्तक होगा। पत्नी व पुत्र से धन व यश की प्राप्ति होगी।

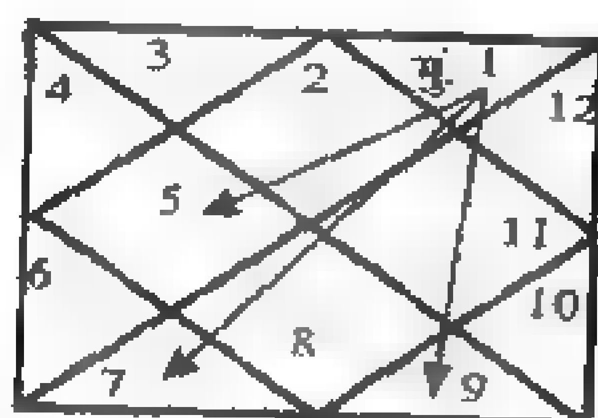
दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक को धन-यश व विद्या की प्राप्ति होगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चन्द्र**–आपकी जन्मपत्रिका के वृषलग्न में एकादश स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। लाभ स्थान में बृहस्पति स्वगृही होकर बलवान होंगे। लाभ स्थान में बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम भाव एवं सप्त भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः आपका पराक्रम बढ़ा-चढ़ा रहेगा। ससुराल अच्छा मिलेगा, पत्नी सुन्दर मिलेगी, सन्तति उत्तम होगी तथा पुत्र एवं कन्या दोनों ही प्रकार की सन्तति होगी।
2. **गुरु + सूर्य**–जातक को पुत्र संतति अवश्य होगी। दो पुत्रों का लाभ होगा। [illegible] होगा।
3. **गुरु + मंगल**–बृहस्पति यहां स्वगृही होगा। जातक व्यापार में यथेष्ट लाभ प्राप्त करेगा जातक के भाई धनवान होंगे। विवाह के बाद जातक की किस्मत चमकेगी।
4. **गुरु + बुध**–यह युति 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि करेगी। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य, वैभव को भोगेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–की युति यद्यपि 'किम्बहुना योग' की सृष्टि करती है। क्योंकि यहां शुक्र उच्च का एवं बृहस्पति स्वगृही होगा। परन्तु यह युति ज्यादा शुभदायक नहीं हैं। क्योंकि बृहस्पति अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा।
6. **गुरु + शनि**–यह लाभेश लाभ स्थान में स्वगृही होकर जब शनि के साथ होगा तो जातक व्यापार में खूब धन-दौलत कमायेगा।
7. **गुरु + राहु**–राहु की युति से 'चण्डाल योग' बनेगा। फलतः जातक को निजी व्यापार-व्यवसाय में अनेक दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति द्वादश स्थान में

वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। मेष बृहस्पति की मित्रराशि है। लाभेश का द्वादश में जाने से 'लाभभंग



योग' बना परन्तु अष्टमेश होकर बृहस्पति का द्वादश स्थान में जाने से 'सरल योग' की सृष्टि इस योग के कारण बृहस्पति का सारा अशुभत्व नष्ट हो गया। ऐसा जातक तीर्थपुरोहित, वेद-शास्त्र, कर्मकाण्ड का ज्ञाता, परोपकारी, देश-विदेश की यात्रा करने वाला होता है। धन खर्च एवं अपव्यय के प्रति जातक को चिन्ता बनी रहती है।

दृष्टि—द्वादश भाव में स्थित मेष के बृहस्पति की दृष्टि सुख भाव 'सिंह राशि', षष्टम भाव 'तुला राशि' एवं अष्ट भाव 'धनु राशि' पर होगी। जातक सुखी होगा तथा शत्रु, ऋण व रोग का नाश करने में समर्थ होगा।

निशानी—जातक धन-दौलत का भण्डारी एवं माया का त्यागी होता है।

दशा—बृहस्पति की दशा मिश्रित फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति [illegible] स्थान में युति होने से क्रमशः 'लाभभंग योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' की सृष्टि होगी। निर्बल अवस्था को प्राप्त ये दोनों शुभग्रह यहां बैठकर सुख स्थान, छठे स्थान एवं आठवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः आपको रोग व शत्रु द्वारा कष्ट पहुंच सकता है। परन्तु दोनों ही समूल नष्ट होंगे। आपको जीवन में अच्छे वाहन एवं अच्छे मकान का सुख भी बराबर मिलेगा।

2 **गुरु + सूर्य**—सुखेश सूर्य के सथ लाभेश व अष्टमेश बृहस्पति व्यय भाव में सरल योग की सृष्टि करता है। जातक दीर्घायु प्राप्त करेगा तथा ऋण, रोग व शत्रुओं को नाश करने में समर्थ होगा।

3 **गुरु + मंगल**—'ब्राह्मण स्त्री सम्भोगी' बृहस्पति बारहवें स्थान में होने से 'सरल योग' बना। ऐसा व्यक्ति परोपकारी, धार्मिक व तीर्थ यात्राओं में भाग लेने वाला साहसी जातक होता है।

4 **गुरु + बुध**—बृहस्पति 'लाभभंग योग' के साथ 'सरल योग' की सृष्टि करेगा। जातक पुत्रवान होगा।

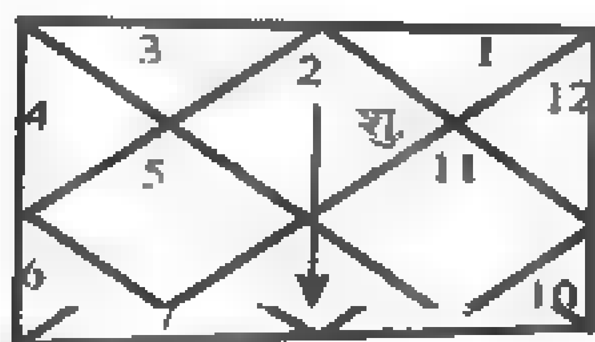
5 **गुरु + शुक्र**—शुक्र, बृहस्पति युति व्यापार में हानिकारक है। फिर भी व्यक्ति धार्मिक, परोपकारी व दानी होगा।

6. **गुरु + शनि**—यहां लाभेश, अष्टमेश बृहस्पति का द्वादश स्थान में शनि के साथ होना शुभ है। व्यक्ति धर्म कार्य, परोपकार में रुपया खर्च करेगा।
7. **गुरु + राहु**—यहां पर राहु होने से 'चाण्डाल योग' बनेगा। जातक व्यर्थ की यात्राओं व फिजूल के कार्यों में खूब रुपया खर्च करेगा। यात्रा में चोरी होगी।

❑❑❑

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में



वृषलग्न के लिए शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दुःस्थान का स्वामी है। फलतः यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ नहीं होता। शुक्र यहां केन्द्र में होने से 'कुलदीपक योग' बना। ऐसा [illegible] करने वाला यशस्वी होता है।

मालव्योग–स्वगृही शुक्र लग्न में स्वगृही होने से यह योग बना। यह पंचमहापुरुष योगों में से उत्तम योग है। ऐसा जातक दूसरों को पालने वाला, सुन्दर वाहन एवं चौपायों का स्वामी होता है। जातक अपने परिश्रम से दो मंजिला सुन्दर भवन बनाता है। जातक कूटनीतिज्ञ होता है।

निशानी–भोजसंहिता के अनुसार जातक हंसमुख, स्त्रियों का प्रिय, शौकीन मिजाज होगा। जातक कवि, शायर व रसिक मिजाज का होगा। सुन्दर पोशाक व सुन्दर भोजन का शौकीन पर नारी का विशेष आदर करने वाला, धनवान व सुखी प्राणी होता है।

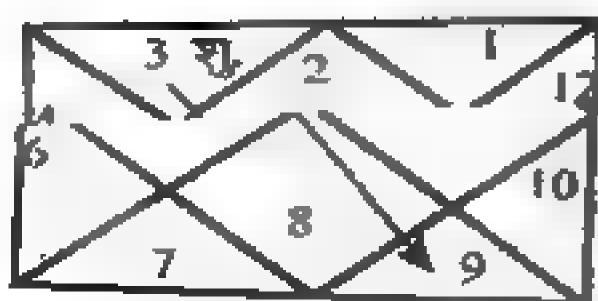
दशा–शुक्र की दशा में जातक का विशेष भाग्योदय होगा। शनि व बुध की दशा भी उत्तरोतर उत्तम जायेगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **किम्बहुना योग**–शुक्र+चन्द्र की युति से यह योग बनेगा। शुक्र यहां स्वगृही एवं चंद्रमा उच्च का होने से यह योग बना। इससे अधिक और क्या? अर्थात् ऐसा जातक राजाओं का राजा एवं अति पराक्रमी व्यक्ति होगा। ऐसे जातक अनेक आभूषणों को धारण करने वाला, स्वर्ण-कान्ति युत देह वाला होता है।

2. **शुक्र + गुरु**—युति हो तो व्यक्ति रोगी होगा।
3. **शुक्र + मंगल**—की युति हो तो चोट-दुर्घटना, रक्तस्राव का भय बना रहेगा। जातक रोगी होगा।
4. **शुक्र + बुध**—धनेश+पंचमेश का लग्न में होना अत्यधिक शुभ है। जातक बुद्धि बल से स्वयं के पराक्रम से खूब धन कमायेगा।
5. **शुक्र + सूर्य**—सूर्य सुखेश होकर लग्न में होने से सुख की वृद्धि करेगा। परन्तु दो परस्पर शत्रु ग्रहों की युति जातक को भोगी योगी दोनों बनायेगी।
6. **शुक्र + शनि**—पति-पत्नी में वैमनस्य रहेगा। जातक सौभाग्यशाली होगा एवं कूटनीतिज्ञ व छली होगा।
7. **शुक्र + राहु**—गृहस्थ सुख में व्यवधान। जातक का राजपुरुषों या राजनीतिज्ञों में अच्छा नाम होगा।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में



वृषलग्न में के लिए शुक्र लग्नेश व षष्टेश [illegible] भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ नहीं होता। जातक व्यापारी होगा एवं धनवान होगा। जातक उच्चाधिकारी होगा। अभिनय, वाक् कला एवं समाज सेवा में पटु होगा। जातक सुन्दर पोशाक एवं सुगंधित द्रव्यों का शौकीन होगा।

शुक्र की दृष्टि अष्टम स्थान (धनु राशि) पर होने से जातक की आयु दीर्घ होगी।

निशानी—भोजसंहिता के अनुसार जातक प्रज्ञावान होगा। उसका घर बच्चों से हरा-भरा रहेगा। साठ वर्ष की उम्र में गांव-शहर का धनवान व्यक्ति कहलायेगा।

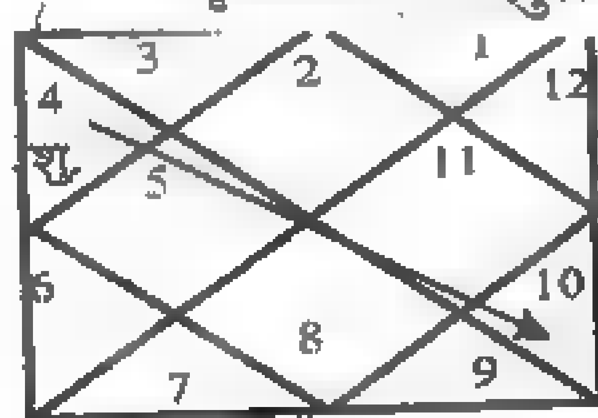
दशा—शुक्र की दशा में भाग्योदय होगा। बुध की दशा एवं शनि की दशा भी भाग्योदय करायेगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + बुध**—शुक्र+बुध की युति वृषलग्न में निष्फल मानी गई है। फिर भी धन के मामले में योगकारक बुध स्वगृही होकर धन स्थान में बैठने से जातक खूब धन कमायेगा। 'शत्रुमूल धनयोग' यहां बलवान धनेश की षष्टेश से युति होने के कारण जातक शत्रुओं के द्वारा भी धन प्राप्त करने में सक्षम होगा।

2. **शुक्र + सूर्य**–ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ मास में प्रातः 5 बजे के लगभग होता है। जातक को माता-पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक महाधनवान होगा तथा आवक के जरिए दो-तीन प्रकार से बने रहेंगे।
3. **शुक्र + चन्द्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा हो तो जातक गजान्त ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक की वाणी मीठी होगी परन्तु हड़बड़ाहट वाली होगी।
4. **शुक्र + बृहस्पति**–शुक्र के साथ बृहस्पति हो तो मुख रोग होगा।
5. **शुक्र + राहु**–की युति होने पर जातक आध्यात्मिक न होकर शराब, जुआ व भोग-विलास में डूबा रहेगा। वैवाहिक जीवन में टकराव रहेगा।
6. **शुक्र + मंगल**–की युति होने पर पति-पत्नी में विवाद, कलह एवं अहम् का टकराव होता रहेगा।
7. **शुक्र + शनि**–भाग्येश, दशमेश, शनि का धन स्थान में होना शुभ है। जातक धन कमाने की दृष्टि से भाग्यशाली होगा।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में



होने से एक दुःस्थान का स्वामी है। फलतः यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ नहीं होता। शुक्र यहां तीसरे स्थान में कर्क राशि में है तथा भाग्य स्थान (मकर राशि) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है।

ऐसा जातक भाई व भागीदारों में लाभन्वित होता रहेगा। जातक स्त्रियों का विशेष सम्मान करने वाला तीर्थयात्रा, दूरस्थ प्रदेशों (विदेश) यात्रा से लाभ कमाने वाला होता है। ऐसे जातक को जन्मसर्क के कार्यों में लाभ, लेखन, विज्ञापन, ऐजेन्सी, सौन्दर्य-प्रधान सामग्री इत्यादि से लाभ होने की सम्भावना रहती है।

निशानी–सत्यवान स्त्री का साथ रहेगा।

दशा–शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। शनि अथवा बुध की दशा अन्तर्दशा में भाग्योदय होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + चन्द्र**–यहां चंद्रमा स्वगृही होकर लग्नेश के साथ होगा। ऐसे जातक को भाई की पत्नी एवं भागीदार की पत्नी से लाभ होगा। जातक को स्त्री-मित्रों

से लाभ होगा। स्त्रियां इस जातक पर मुग्ध रहेंगी। जातक अन्य स्त्रियों से यौन सम्बन्ध भी स्थापित कर लेता है पर मानसिक रुप से विकृत होता है।

2. **शुक्र + सूर्य**–जातक अति पराक्रमी होगा। जातक का जन्म श्रावण मास में रात्रि 3 बजे के लगभग होगा। उसे भाई-बहन दोनों का सुख होगा।

3. **शुक्र + बुध**–बुध या शत्रु क्षेत्री होगा। जातक की बहनें अधिक होंगी। जातक विद्यावान व धनवान होगा।

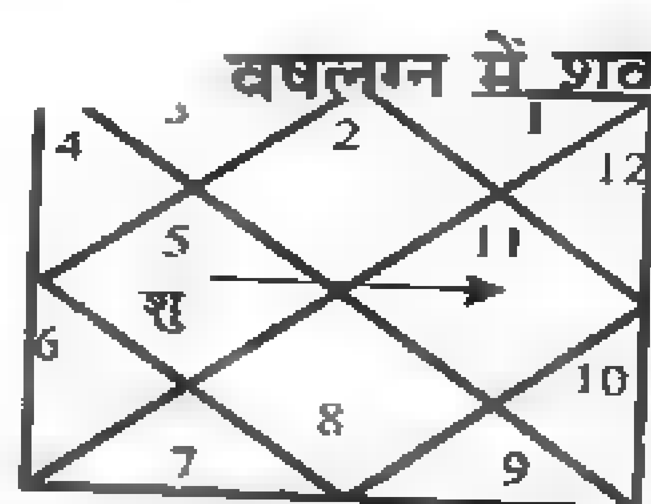
4. **शुक्र + बृहस्पति**–उत्तम नौकरी व्यवसाय से धनलाभ मिलेगा। गृहस्थ सुख उत्तम होगा। बड़े भाई से लाभ रहेगा।

5. **शुक्र + मंगल**–यह युति मानसिक विकृति की संकेतक है। भाईयों का सुख रहेगा।

6. **शुक्र + शनि**–मलिन बुद्धि किन्तु जातक भाग्यशाली होगा। परिजनों से मनोमालिन्यता रहेगी।

7. **शुक्र + राहु**–भाईयों से शत्रुता, मानसिक रुग्णता।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में



वृषलग्न में शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दु:स्थान का स्वामी है। फलत: यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ नहीं होता। शुक्र यहां चतुर्थ स्थान में सिंह (शत्रु) राशि में है तथा दशम भाव (कुम्भ राशि) को पूर्ण दृष्टि में देख रहा है। ऐस जातक वाहन, जमीन-जायदाद से युक्त सुखी व धनवान व्यक्ति होता है।

कुलदीपक योग–शुक्र केन्द्रवर्ती होने से जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला सबका चहेता व प्यारा होगा।

निशानी–भोजसंहिता के अनुसार जातक को बुजुर्गों की सम्पत्ति मिलती है। 32वें वर्ष में भाग्योदय होता है। शादी के चार वर्ष बाद खूब आराम मिलेगा। जिसे प्यार करता है वह स्त्री उम्र में बड़ी होगी।

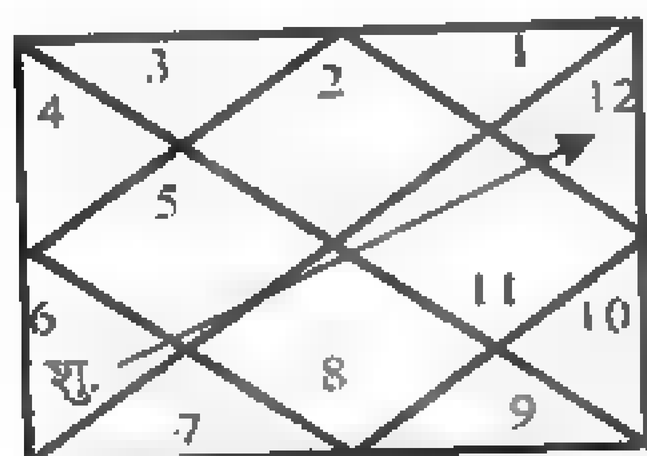
विशेष–जातक 'डिप्लोमेट' होता है। एक समय में दो स्त्रियों में सम्पर्क रखता है। जातक सभी प्रकार के भौतिक सुखों एवं ऐश्वर्य में परिपूर्ण जीवन को जीने वाला होता है। सन्तान सुख से युक्त होता है।

दशा–शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। बुध एवं शनि की दशा में जातक का विशेष भाग्योदय होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–यहां सूर्य स्वगृही होगा एवं जातक का जन्म भाद्र माह की मध्य राशि को होगा। जातक परम तेजस्वी होगा। उसे पैतृक सम्पत्ति तो मिलेगी पर उसमें विवाद रहेगा। जातक के पास दो–चार नौकर एवं चार पहियों वाली गाड़ी जरुर होगी। राज–दरबार में जातक का दबदबा रहेगा।
2. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु या केतु हो तो पिता को कष्ट होगा। जातक का गृह निर्माण कष्टों में परिपूर्ण रहता है। माता को क्लेश ।
3. **शुक्र + शनि**–की युति भाग्योदय कारक है। जातक को पैतृक सम्पत्ति दिलाने में सहायक है प्रथम वाहन खरीदने के बाद जातक का भाग्योदय होगा। पिता को कष्ट होगा।
4. **शुक्र + बुध**–जातक शिक्षित होगा एवं एकाधिक वाहनों का स्वामी होगा।
5. **शुक्र + मंगल**–जातक टैक्नीकल व्यक्ति होगा। पराक्रमी एवं भूसंपत्ति का स्वामी होगा।
6. **शुक्र + बृहस्पति**–जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा। तीर्थाटन एवं धार्मिक
7. **शुक्र + चन्द्र**–जातक पराक्रमी होगा। जातक का जनसम्पर्क तेज रहेगा।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में



वृषलग्न में शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दु:स्थान का स्वामी है। फलत: यह अशुभ फलकारी भी है परन्तु लग्नेश कभी भी अशुभ फल नहीं देता। इस भाव में शुक्र अपने मित्र ग्रह बुध की कन्या राशि में स्थित होकर नीच का है जो 27 अंशों में परम नीच का कहलाता है। पर लग्नेश शुक्र की त्रिकोण में यह स्थिति बली मानी गई है।

जातक को सुन्दर स्त्री व सुन्दर सन्तति का लाभ मिलता है। जातक प्राय: प्रेम विवाह करता है तथा अति चालाक व्यभिचारी एवं चरित्रहीन होता है। जातक दूसरों की सन्तति पर ताक रखता है। नर सन्तान विलम्ब में होती है। एक दो गर्भपात जरूर होते हैं।

निशानी–यदि शुभ पुरुष ग्रहों का प्रभाव शुक्र पर न हो तो जातक के वीर्य में क्रोमोसोम की कमी रहती है जिससे कन्या सन्तति की अधिकता रहेगी।

दशा—शुक्र की दशा में भाग्योदय होगा तथा बुध व शनि की दशाएं भी अति उत्तम लाभ एवं धन देने वाली साबित होंगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **नीचभंग राजयोग**—शुक्र यहां नीच का एवं बुध उच्च का होने में 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक अति धनवान होगा। प्रथम सन्तति कन्या होगी। प्रथम सन्तति के बाद जातक का भाग्योदय होता है।
2. **शुक्र + चन्द्र**—की युति भी प्रथम कन्या सन्तति देगी।
3. **शुक्र + बृहस्पति**—की युति गर्भपात एवं सन्तति की अकाल मृत्यु की संकेतक है।
4. **शुक्र + मंगल**—की युति अधिक रक्त स्राव एवं हाई ब्लडप्रेशर के कारण सन्तति का नाश बतलाता है।
5. **शुक्र + शनि**—की युति पुत्र सन्तति एवं कन्या सन्तति दोनों के लिए लाभप्रद है।
6. **शुक्र + राहु**—की युति अनुष्ठान के बाद पुत्र लाभ देती है, सौभाग्य में वृद्धि करती है। केतु भी यहां [illegible]
7. **शुक्र + सूर्य**—जातक शिक्षित होगा एवं शिक्षित, सुसंस्कार युक्त पुत्र का पिता होगा।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति षष्ट्म स्थान में

वृषलग्न में लिए शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दुःस्थान का स्वामी है। फलतः यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ नहीं होता। शुक्र यहां तुला राशि में बैठकर द्वादश स्थान (मेष राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

लग्नभंग योग—लग्नेश शुक्र छठे स्थान में होने से यह योग बना। ऐसे जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलता।

सरल योग—षष्टेश शुक्र छठे स्थान में स्वगृही होने से यह योग बना। ऐसा जातक भयरहित, विद्वान, शत्रुओं को भयभीत करने वाला, सदैव विजय पाने वाला, समृद्धिशाली होता है।

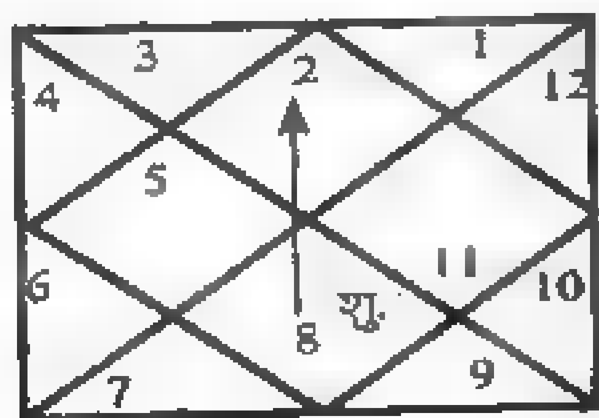
निशानी—जातक के मामा, मौसी सुखी होते हैं।

विशेष–ऐसे जातक की किस्मत विवाह के बाद चमकती है। ससुराल से, स्त्रियों से लाभ पाने वाला, नित्य वाहन रखने वाला तथा राजनीति में कूटनीतिज्ञ एवं दृढ़ निश्चयी होता है। शुक्र यहां कीमती हीरे के समान तेजस्वी है पर जातक की सन्तति नालायक होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **किम्बहुना योग**–शुक्र और शनि की युति से शुक्र स्वगृही एवं शनि उच्च का होगा। इससे अधिक और क्या? ऐसा जातक उच्च वाहन का स्वामी होगा परन्तु वाहन दुर्घटना का भय बना रहेगा। व्यापार, व्यवसाय में बहुत धन कमाएगा।
2. **शुक्र + चन्द्र**–'पराक्रमभंग योग' बनेगा। जातक उदासीन मनोवृत्ति वाला होगा।
3. **शुक्र + बुध**–बुद्धि बल बढ़ेगा परन्तु धन प्राप्ति हेतु, आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने हेतु संघर्ष रहेगा।
4. **शुक्र + सूर्य**–जातक बुद्धिमान होगा। सूर्य के कारण **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। जातक ऐश्वर्यशाली एवं प्रतापी होगा।
5. **शुक्र + बृहस्पति**–शुक्र 'हर्ष योग' में एवं बृहस्पति 'सरल योग' में होगा।
6. **शुक्र + मंगल**–मंगल यहां दोष रहित है क्योंकि द्वादशेश होकर छठे स्थान से 'विमल योग' बना। जातक में धन की विशेष ललक रहती है।
7. **शुक्र + राहु**–जातक की शिक्षा अधूरी रहती है। जातक लालची होता है।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में



वृषलग्न में के लिए शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दु:स्थान का स्वामी है। फलत: यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ नहीं होता। शुक्र यहां वृश्चिक में बैठकर अपने घर (वृष राशि) को देखेगा।

कुलदीपक योग–शुक्र केन्द्र में होने से यह योग बना। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब–परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला सबका चहेता व प्यारा होता है।

ऐसा जातक अपनी किस्मत आप चमकाने वाला, 25वें वर्ष में भाग्योदय की ओर बढ़ने वाला, सुंदर नारी एवं ससुराल से सम्पत्ति पाने वाला, सुखी गृहस्थ जीवन जीने वाला, निजी व्यवसाय एवं व्यापार में धन कमाने वाला जातक होता है।

दशा—शुक्र की दशा में जातक के व्यक्तित्व का सुंदर विकास होगा। शनि की दशा में भाग्योदय एवं बुध की दशा अच्छी जाएगी। इस बात का ध्यान रहे कि बृहस्पति मारकेश का काम करेगा।

निशानी—ऐसा जातक जब तक कमाएगा, सफर करता रहेगा। घर (जन्म स्थान) पर कम, सफर में अधिक रहेगा। सफर से जिन्दा वापस आएगा, परदेस में या यात्रा में मौत कभी नहीं होगी।

विशेष—जातक कला-प्रेमी व रसज्ञ होगा। अनायास धन प्राप्ति एवं राजनीति में सफलता के अवसर मिलते रहेंगे। आयु पर्यन्त पति-पत्नी की जोड़ी सलामत, माता-पिता की हालत उत्तम होगी। व्यवहार में नरमी रहेगी। धन कमाने में जातक का परिश्रम निरर्थक नहीं जाएगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

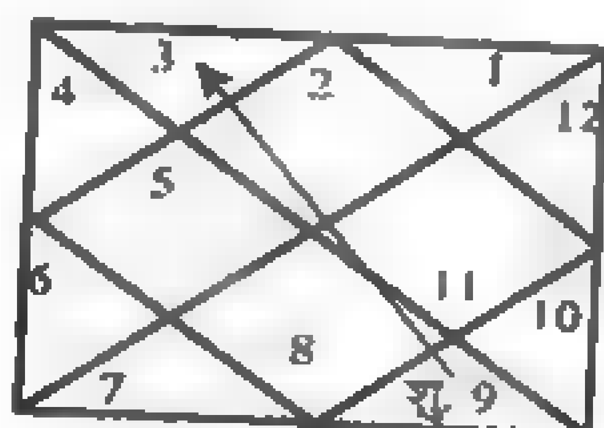
1. **शुक्र + मंगल**—इस योग के कारण 'रुचक योग' बना। ऐसा जातक उच्च वाहन का स्वामी, अच्छे भवन का स्वामी, नौकर-चाकर से युक्त परम तेजस्वी व्यक्तित्व का धनी होता है।

[illegible]

युति राजयोग कारक है। जातक प्रेम विवाह करेगा।

4. **शुक्र + शनि**—की युति सफलता दायक है। जातक परम भाग्यशाली होगा।
5. **शुक्र + बृहस्पति**—जातक परम्परागत विवाह में रुचि रखेगा। व्यापार में लाभ कमाएगा।
6. **शुक्र + सूर्य**—जातक प्रबल पराक्रमी एवं सफल व्यक्ति होगा।
7. **शुक्र + राहु**—कामासक्ति में वृद्धि एवं दाम्पत्य सुख में बाधा।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में



वृषलग्न में शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दु:स्थान का स्वामी है। फलत: यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ नहीं होता। शुक्र यहां धनु राशि में होकर द्वितीय (धन) भाव (मिथुन राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

लग्नभंग योग—लग्नेश शुक्र अष्टम में जाने से व्यक्ति स्त्री से डरकर रहने वाला, ससुराल की नैय्या डुबोने वाला, कृतघ्न,

भाई-बहनों से झगड़ने वाला, परिश्रम का फल न पाने वाल, हतोत्साही व्यक्ति होता है। ऐसा जातक शत्रुओं से भयभीत रहता है।

हर्ष योग–छठे घर का स्वामी होकर शुक्र आठवें जाने से यह योग बना। आयु की दृष्टि से यह योग शुभ है।

सावधानी–किसी की कसम खाना, किसी की जमानत देना ठीक नहीं रहेगा। बिना बात किसी की पंचायती करना भी ठीक नहीं रहेगा।

उपाय–1. गाय दान करने से किस्मत चमकेगी।

2. तांबे का पैसा और सफेद पुष्प 27 शुक्रवार गंदे पानी में डालते रहें और मंदिर में सिर झुकाते रहें तो शत्रु अपने आप (खुद की हरकतों से ही) नष्ट होंगे।

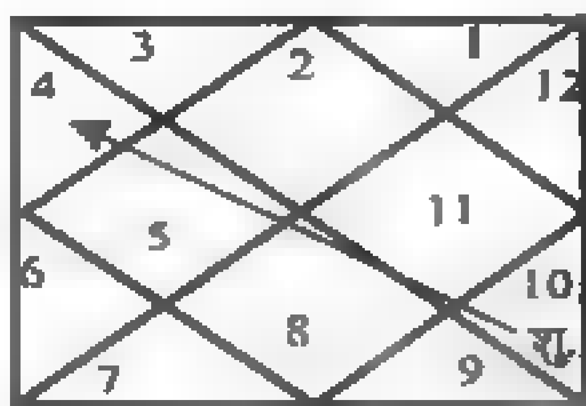
दशा–शुक्र की दशा में उत्साह, धैर्य व बुद्धि चातुर्य से योजना में सफलता मिलती है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + गुरु**–यह युति ज्यादा शुभ नहीं है। ऐसा जातक गुप्तांग में बीमारी भोगने वाला होता है। स्वयं की पत्नी में अनबन कर अन्य स्त्रियों पर खर्च करने वाला, व्यक्ति होता है। जीवन में दो-तीन बार आपरेशन कराने का योग जरूर बनेगा। अष्टमेश अष्टम में स्वगृही होने से 'सरल योग' जातक को दीर्घायु प्रदान करेगा।
2. **शुक्र + चंद्रमा**–इस युति से व्यक्ति शराबी होगा। मित्रों से धोखा मिलेगा।
3. **शुक्र + सूर्य**–'सुखभंग योग' के कारण सुख प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
4. **शुक्र + बुध**–'धनहीन' व 'सन्तानहीन' योग के साथ अष्टम भावस्थ बुध सन्तान एवं विद्या प्राप्ति से असंतोष देगा।
5. **शुक्र + मंगल**–गुप्तरोग की संभावना, पत्नी से अनबन संभव।
6. **शुक्र + शनि**–'भाग्यहीन योग', 'राजहीन योग' के कारण सही नौकरी, व्यवसाय की प्राप्ति हेतु संघर्ष बना रहेगा।
7. **शुक्र + राहु**–व्यक्ति शराबी, व्यभिचारी होगा।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में

वृषलग्न में शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दु:स्थान का स्वामी है। फलत: यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ नहीं होता। शुक्र यहां मकर राशि में बैठकर पराक्रम स्थान (कर्क राशि) को देखेगा। ऐसे जातक का जन्म



माता-पिता, दादा-दादी के लिए शुभ होता है। ऐसा जातक अपने बाप-दादाओं की सम्पत्ति को बढ़ाने वाला, सुलझे हुए विचारों वाला व्यक्ति होता है।

स्वभाव–जातक शनि के स्वभाव सा शैतान, चालाक व होशियार होगा। जवानी में सदाबहार फूलों की तरह पराई स्त्री से संपर्क करने के बहुत-से अवसर मिलते रहेंगे जिसे जातक छोड़ेगा नहीं। जातक धार्मिक होते हुए भी रसिक स्वभाव का होगा।

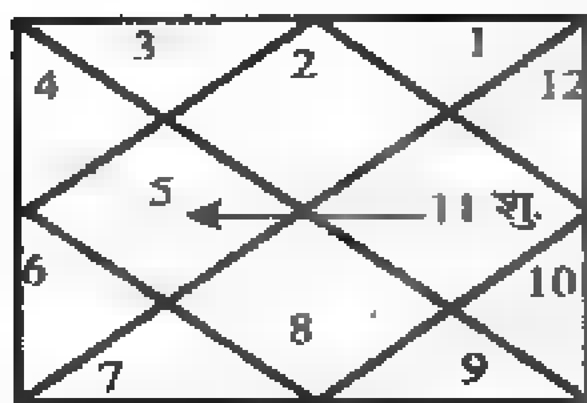
निशानी–पति हल्का एवं स्त्री हृष्ट-पुष्ट होगी। पत्नी मद से भरी हुई, कामदेव की प्रतिमूर्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + शनि**–यह युति अति उत्तम फल देगी। शनि यहां स्वगृही होगा एवं पद सिंहासन योग बनाएगा। जातक व्यभिचारी होगा। अपने से बड़ी उम्र की स्त्री के साथ सहवास करेगा।
2. **शुक्र + चन्द्र**–जातक अति पराक्रमी होगा।
3. **शुक्र + मंगल**–मंगल यहां उच्च का होगा। कर्क व मंगल मारकेश होने से शुभ फलदायक नहीं हैं। यह युति ज्यादा उत्तम फल देने वाली नहीं है। जातक धृष्ट एवं दु:साहसी होगा।
4. **शुक्र + बुध**–की युति हो तो जब तक स्त्री साथ रहेगी जातक के साथ कोई अप्रिय हादसा नहीं होगा। अर्थात् स्त्री के साथ मोटर कार, बस, रेल में कहीं जा रहा हो, कुदरत की ओर से कोई दुर्घटना होने को हो तो जब तक स्त्री नीचे न उतरे हादसा नहीं होगा। स्त्री के बैठे मकान नहीं गिरेगा, स्त्री के बैठे शत्रु नकसान नहीं पहुंचा पाएंगे।
5. **शुक्र + सूर्य**–जातक महा भाग्यवान, उत्तम वाहन में युक्त होगा।
6. **शुक्र + बृहस्पति**–यह युति भाग्य में वृद्धि दायक है।
7. **शुक्र + राहु**–जातक के पिता को कष्ट होगा।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में

वृषलग्न में शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दु:स्थान का स्वामी है। फलत: यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ फल नहीं देता। शुक्र यहां



कुम्भ राशि में बैठकर चतुर्थ स्थान (सिंह राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

कुलदीपक योग—शुक्र केन्द्र में होने से यह योग बना। शुक्र उच्चाभिलाषी है। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब, परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला, सबका चहेता व प्यारा होता है।

ऐसा जातक इंसाफ को तोलने वाला (न्यायाधीश), वकील, उच्च राजपुरुष या राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगने वाला होता है।

स्वभाव—जातक शनि के स्वभाव का होगा। शैतान, चालाक एवं होशियार होगा। खुफिया काम करने वाला, हरदम मिजाज बदलता रहेगा।

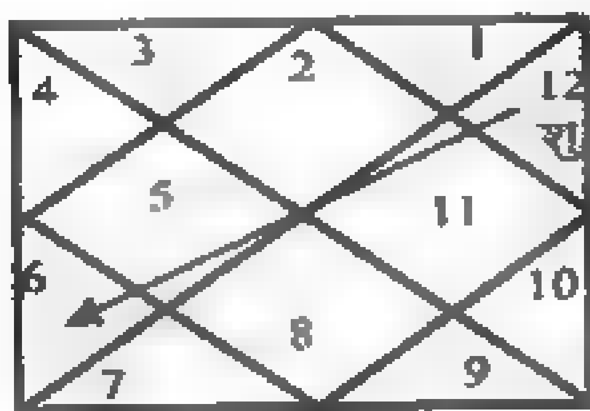
दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + शनि**—शनि यहां स्वगृही होने से 'शशयोग' एवं 'पद्मसिंहासन योग' बनाएगा। यह युति यहां खिलेगी क्योंकि यह राजयोग कारक है। ऐसा जातक राजा या राजमंत्री, आई.ए.एस. अधिकारी होता है।
2. **शुक्र + चन्द्र**—भृगुसूत्र के अनुसार **'अनेकवाहनारोणम्'** जातक सभी प्रकार के सुखों से युत होगा।
3. **शुक्र + बुध**—जातक को उच्च शिक्षा मिलेगी। भृगुसूत्र के अनुसार **'अनेकवाहनारोहरणम्'**
4. **शुक्र + सूर्य**—भृगुसूत्र के अनुसार **'बहुभाग्यवान् वाचाल'** जातक सुखी व सम्पन्न व्यक्ति होगा।
5. **शुक्र + मंगल**—मंगल यहां दिग्बली होने से जातक को राजा तुल्य सुख, ऐश्वर्य देगा।
6. **शुक्र + बृहस्पति**—**'बहुभाग्यवान'** केन्द्रस्थ बृहस्पति 'केसरी योग' के कारण शुक्र के साथ प्रचुर लाभ देगा।
7. **शुक्र + राहु**—राजनीति में सफलता मिलेगी। जातक पराक्रमी होगा।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में

वृषलग्न में शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दुःस्थान का स्वामी है। फलतः यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ फल नहीं देता। शुक्र



यहां मीन राशि में बैठकर पंचम स्थान (कन्या राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। शुक्र उच्च का है।

ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली होता है और अपने भाई-बहनों व परिजनों से विरोध पाने वाला होता है। प्रायः व्यापारी होता है एवं व्यापार में बार-बार परिवर्तन करता रहता है। जातक धनवान होगा।

निशानी—ऐसे व्यक्ति के प्रायः कन्याएं अधिक होती हैं तथा स्त्री के एक भाई होता है। ऐसा जातक ज्योतिष, अध्यात्म, व गुप्त विद्याओं का जानकार होता है।

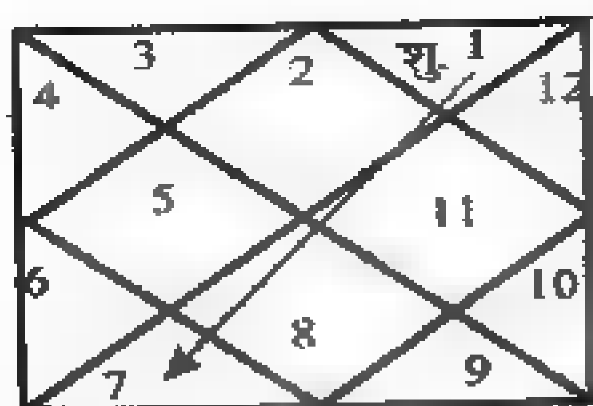
दशा—शुक्र की दशा जातक का भाग्योदय कराएगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + बुध**—की युति से यहां **'नीचभंग राजयोग'** बना। ऐसा जातक परम सौभाग्यशाली होता है। यद्यपि कुछ विद्वानों ने इस युति को निष्फल माना है परन्तु जातक के पास एकाधिक वाहन होते हैं।
2. **शुक्र + बृहस्पति**—की युति यद्यपि **'किम्बहुना योग'** की सृष्टि करती है क्योंकि यहां शुक्र उच्च का एवं बृहस्पति स्वगृही होगा परन्तु यह युति ज्यादा शुभ फलदायक नहीं है क्योंकि बृहस्पति अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा।
3. **शुक्र + शनि**—यह युति 'अनेक वाहन योग' दिलाती है। भाग्येश शनि का उच्च के शुक्र साथ होना सुखद बात है।
4. **शुक्र + चन्द्र**—तृतीयेश चंद्रमा के उच्च लग्नेश के साथ होने से जातक राजा तुल्य पराक्रमी होता है।
5. **शुक्र + सूर्य**—भृगुसूत्र के अनुसार 'विद्वान बहुधनवान् भूमि लाभ' जातक को पुत्र लाभ जरूर होगा।
6. **शुक्र + बुध**—जातक को उच्च शिक्षा मिलेगी। प्रथम सन्तति कन्या होगी।
7. **शुक्र + राहु**—राहु यहां लाभ के अंश को तोड़ेगा।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में

वृषलग्न में शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दुःस्थान का स्वामी है। फलतः यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ फल नहीं देता। शुक्र यहां द्वादश स्थान में बैठकर छठे स्थान (तुला राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।



लग्नभंग योग—लग्नेश शुक्र बारहवें होने से यह योग बना। ऐसे जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। जातक बाप-दादाओं की सम्पत्ति खर्च करने वाला आमदनी से अधिक रुपया खर्च करने वाला, घुमक्कड़ प्राणी होता है।

निशानी—जातक की स्त्री बीमार रहेगी।

विशेष—ऐसा जातक राजनीति में पैठ जमाने वाला परन्तु स्त्री व संतान से अनादर पाने वाला व्यक्ति होता है।

उपाय—गाय पालें या गाय का दान करें। स्त्री के हाथ में नीले रंग का पुष्प घर के बाहर वीराने में दबाने से सभी कष्ट दूर होंगे। यह प्रयोग 27 शुक्रवार तक करना चाहिए।

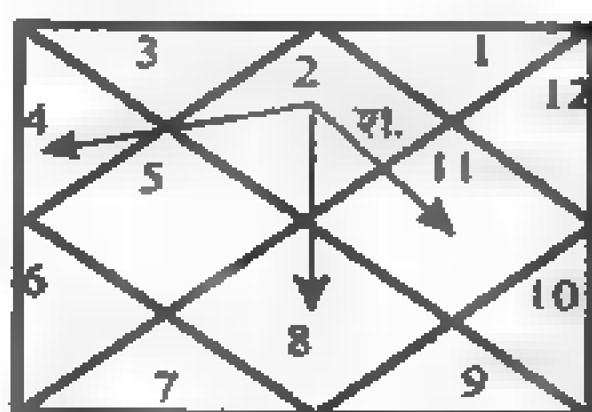
शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + मंगल**—शुक्र, मंगल की युति यहां शुभ नहीं होगी क्योंकि मंगल मारकेश है। द्वादश स्थान में कुण्डली मंगली होने से विवाह सुख में यह युति बाधक होगी।
2. **शुक्र + शनि**—शुक्र शनि की युति से यहां शनि नीच का होगा। बारहवें शनि (भाग्यभंग योग) की सृष्टि करेगा। फलतः यह युति यहां ज्यादा सार्थक न होकर प्रतिकूल फल देगी।
3. **शुक्र + बुध**—बुध व शुक्र की युति विद्या में बाधक तथा धन प्राप्ति में रुकावट देगी।
4. **शुक्र + चन्द्र**—शुक्र+चन्द्र की युति पराक्रम भंग करेगी। मित्र धोखा देंगे।
5. **शुक्र + बृहस्पति**—शुक्र व बृहस्पति की युति व्यापार में हानिकारक है। व्यक्ति धार्मिक, परोपकारी व दानी होगा।
6. **शुक्र + शनि**—भृगुसूत्र के अनुसार 'शनियुतेविषयलुब्धः' जातक कामी एवं दुराचारी होगा।
7. **शुक्र + राहु**—भृगुसूत्र के अनुसार 'पापयुते नाक:प्राप्ति' जातक को वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

❑❑❑

वृषलग्न में शनि की स्थिति

वृषलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में



वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहां परम राजयोग एवं अति शुभ फलदायी ग्रह है। यहां लग्नस्थ शनि वृष राशि में है। वृष राशि शनि की मित्र राशि है। लग्नस्थ राशि अपनी राशि से चतुर्थ एवं पंचम स्थान पर होगा। परिणाम स्वरूप जातक अपने कुटुम्ब-परिवार को विष्णु की तरह पालने वाला, परिश्रमी, विवेकी, बुद्धिमान, उच्च पदासीन, शक्की, एकांतवासी और कुछ उदासीन स्वभाव का होता है।

दृष्टि–लग्नस्थ शनि की दृष्टि तृतीय भाव (कर्क राशि) सप्तम भाव (वृश्चिक राशि) एवं दशम भाव अपने ही घर (कुम्भ राशि) को देखेगा। फलतः पराक्रम में वृद्धि, दाम्पत्य सुख में वृद्धि, नौकरी में पदोन्नति, व्यापार, व्यवसाय में उन्नति देगा।

दशा–शनि की दशा अंतर्दशा में भाग्योदय होगा।

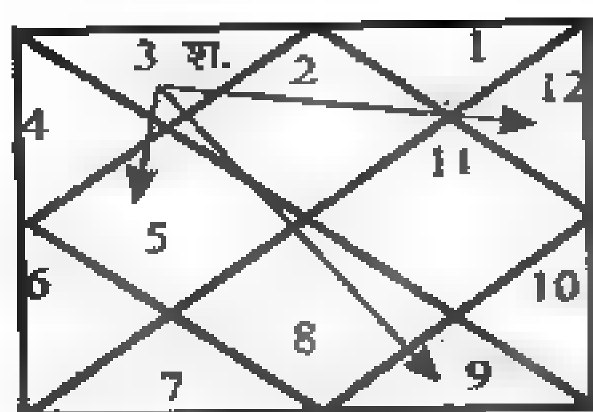
शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + शुक्र**–शुक्र यहां स्वगृही होकर 'कुलदीपक योग' बनाएगा। जातक सौभाग्यशाली एवं कूटनीतिज्ञ होगा पर पति-पत्नी में वैमनस्य रहेगा।
2. **शनि + चन्द्र**–शनि+चन्द्र की युति जातक को परम सौभाग्यशाली बनाएगी. यहां 'पद्मसिंहासन योग' जिसके कारण साधारण परिवार में जन्म लेकर भी जातक कीचड़ में कमल की तरह उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।
3. **शनि + बुध**–यह युति वृषलग्न में सबसे सफल व श्रेष्ठ युति मानी गई है क्योंकि यहां शनि राजयोग कारक है वहां बुध को त्रिकोण का स्वामी होने से परमराजयोग कारक है, साथ ही बुध धनेश भी है। फलतः यह युति चार

करणों से सर्वाधिक शक्तिशाली युति कहलाती है। (1) धनेश+भाग्येश की युति (2) धनेश+राज्येश की युति (3) पंचमेश+भाग्येश की युति (4) पंचमेश+राज्येश की युति यहां पर लग्न स्थान में यदि शनि+बुध की युति हो तो जातक आयु के बाद महाधनवान होगा। प्रबल भाग्यशाली होगा। अपने परिश्रम एवं स्वयं के पुरुषार्थ से आगे बढ़ेगा। जातक राजा के समान उत्तम ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगेगा। उसके पुत्र उसकी आज्ञा में रहेंगे।

4. **शनि + सूर्य**—सूर्य शनि की युति यहां सफलतादायक है पर बौद्धिक विकास में बाधक है।
5. **शनि + मंगल**—भाग्येश, दशमेश शनि का मंगल के साथ लग्न स्थान में होना शुभ फलदायक है। जातक धनी व उद्यमी होगा पर हठी बहुत होगा। जातक क्रोधी भी होगा।
6. **शनि + बृहस्पति**—अष्टमेश बृहस्पति की शनि के साथ युति ज्यादा शुभ फलदायी नहीं है। चहुंमुखी विकास में रुकावट, भाग्योदय प्रायः धीमी गति से होगा।
7. **शनि + राहु**—ऐसा जातक जिद्दी व हठी स्वभाव का होता है, पर भाग्यशाली होता है।

वृषलग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में



वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश होने से परमयोगकारक एवं अति शुभफलदायी ग्रह है। यहां धनभाव में स्थित शनि मिथुन राशि में है। मिथुन राशि शनि की मित्र राशि है। आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक एवं व्यावसायिक वृद्धि हेतु शनि की यह स्थिति श्रेष्ठ है। ऐसे जातक अपार धन अर्जित करने में सक्षम होते हैं।

दृष्टि—द्वितीय भावगत मिथुन राशि के शनि की दृष्टि तृतीय भाव (सिंह राशि), अष्टम भाव (धनु राशि) एवं लाभ भाव (मीन राशि) पर होगी। ऐसा जातक पराक्रमी होगा पर सुख में कोई न कोई कमी रहेगी। आयु दीर्घ होगी। व्यापार में लाभ होता रहेगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक धनार्जन करेगा एवं उसका भाग्योदय होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + बुध**—शनि+बुध की युति यह सबसे श्रेष्ठ स्थिति होगी क्योंकि यह युति दोनों परमराजयोग कारक ग्रहों की युति होगी। यहां बुध स्वगृही होने से ज्यादा

सबसे ज्यादा बलवान है। बलवान धनेश की भाग्येश से युति होने के कारण 'भाग्यमूल धनयोग' एवं 'राज्यमूल धनयोग' की सृष्टि होती है। ऐसा जातक पैतृक सम्पत्ति को प्राप्त करता हुआ परम सौभाग्यशाली होता है। राज्य सरकार और जनता से सम्मान पाता है।

2. **शनि + सूर्य**—नवमेश, दशमेश शनि का सुखेश सूर्य के साथ होना शुभ है। जातक का भाग्योदय पिता के गुजरने के बाद होगा। जातक का भाग्य प्रबल रहेगा।

3. **शनि + चन्द्र**—भाग्येश, दशमेश का धन स्थान में होना शुभ संकेत है। जातक अपने पराक्रम से, पुरुषार्थ से स्वयं का भाग्योदय करेगा। जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु के बाद होगा। जातक व्यापार-व्यवसाय से धन कमाएगा।

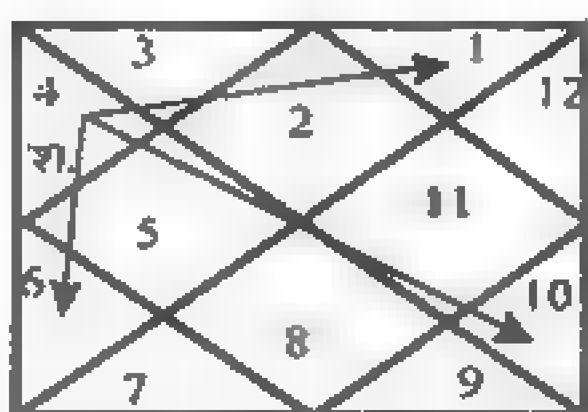
4. **शनि + मंगल**—मंगल+शनि की युति वाणी में अहंकार एवं धूर्तता को बताती है, अथवा नेत्र विकार भी संभव है। भाग्येश, दशमेश के धन स्थान में जाने से जातक लॉटरी, सट्टा या अनैतिक कार्यों से फटाफट धनवान होना चाहेगा।

5. **शनि + बृहस्पति**—अष्टमेश बृहस्पति का धनवान में होना ज्यादा शुभ नहीं। धन की प्राप्ति तो होगी पर धीमी गति से होगी।

6. **शनि + शुक्र**—जातक धन कमाने की दृष्टि से भाग्यशाली होगा।

7. **शनि + राहु**—भाग्येश, राज्येश शनि जहां धन की आवक को बराबर बनाए रखेगा वहीं राहु खर्च में बढ़ोतरी करके जातक को खर्चीले स्वभाव का बनाएगा पर जातक का कोई काम धन की कमी से अटका नहीं रहेगा।

वृषलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में



वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहां परम राजयोग एवं अति शुभफलदायी ग्रह है। यहां द्वितीय भाव में स्थित शनि कर्क राशि में है। कर्क राशि शनि की शत्रु राशि है परन्तु ज्योतिष शास्त्र के अनुसार तृतीय, षष्ठ और एकादश स्थान 'उपचय' स्थान कहलाते हैं। उपचय स्थान में स्थित नैसर्गिक पापग्रह शुभ फल देते हैं। ऐसा जातक राज्याधिकारी एवं पराक्रमी होगा। ऐसा जातक भाइयों परिजनों का शुभचिन्तक होगा पर दूसरों का बिगाड़े, और आप सुख पावे वाली प्रवृत्ति रहेगी।

निशानी—जातक को छोटे भाई का सुख न होगा।

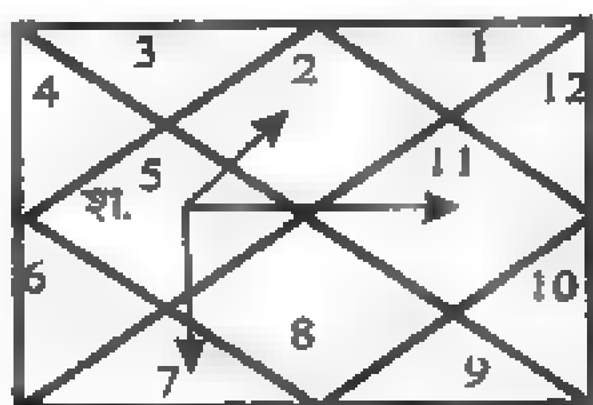
दृष्टि—तृतीय भावस्थ कर्क राशिगत शनि की दृष्टि पंचम भाव (कन्या राशि) नवम भाव अपने स्वयं के घर (मकर राशि) एवं द्वादश भाव (मेष राशि) पर होगी। फलतः जातक को उत्तम संतति मिलेगी। जातक का भाग्य 36 वर्ष की आयु में चमकेगा। यात्राओं (विदेश) के द्वारा भी जातक को लाभ होगा।

दशा—शनि की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्य उदय होगा, पराक्रम बढ़ेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + सूर्य**—भाग्येश शनि की सुखेश सूर्य के साथ तृतीयेश भाव में युति होने से परिजनों में प्रेम नहीं रहेगा। जातक को बड़े भाई व छोटे भाई का सुख नहीं रहेगा।
2. **शनि + चन्द्र**—जातक स्वार्थी होगा पर भाग्यशाली होगा। मित्रों की मदद से आगे बढ़ेगा।
3. **शनि + बुध**—कर्कस्थ शनि के साथ बुध की युति जातक को पराक्रमी बनाएगी। जातक भाग्यशाली होगा।
4. **शनि + मंगल**—दशमेश, नवमेश शनि की तृतीयस्थ नीच के मंगल के साथ युति होने से जातक के छोटे भाई की मृत्यु हो जाएगी। जातक अपने परिजनों से द्वेष रखेगा। मित्र मददगार होंगे पर पीठ पीछे बुराई करेंगे।
5. **शनि + बृहस्पति**—यहां कर्कस्थ बृहस्पति शनि के साथ उच्च का होगा। जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा। भाग्य भी ठीक रहेगा। उन्नति शीघ्र होगी।
6. **शनि + शुक्र**—कर्कस्थ शनि के साथ शुक्र की युति से जातक भाग्यशाली तो होगा परन्तु परिजनों से मनोमालिन्यता बनी रहेगी।
7. **शनि + राहु**—कर्कस्थ शनि के साथ राहु होने पर जातक परम पराक्रमी होगा एवं भाग्यशाली होगा। यारी-दोस्ती में खूब पैसा उड़ाएगा।

वृषलग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में



वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहां परम राजयोग एवं अति शुभफलदायी ग्रह है। चतुर्थ भाव में शनि सिंह राशि का होगा। सिंह, शनि की शुभ राशि है। शनि सूर्य का पुत्र है फिर भी वह पिता सूर्य से वैमनस्य रखता है।

अतः सिंह राशि में शनि उद्विग्न व उदास रहता है फिर भी ऐसे जातक को मकान वाहन का पूर्ण सुख मिलता है। ऐसे जातक को विदेश यात्रा एवं व्यापार से लाभ होता है। मनुष्य गंभीर व शांत स्वभाव का होगा।

दृष्टि—सिंह राशि में स्थित चतुर्थ भावस्थ शनि की दृष्टि छठे स्थान (तुला राशि), दसवें स्थान (कुम्भ राशि) एवं लग्न स्थान (वृष राशि) पर होगी। फलतः शत्रुओं में वृद्धि, कार्य में प्रगति एवं समाज में प्रतिष्ठा रहेगी।

निशानी—माता-पिता से मतभेद रहेगा।

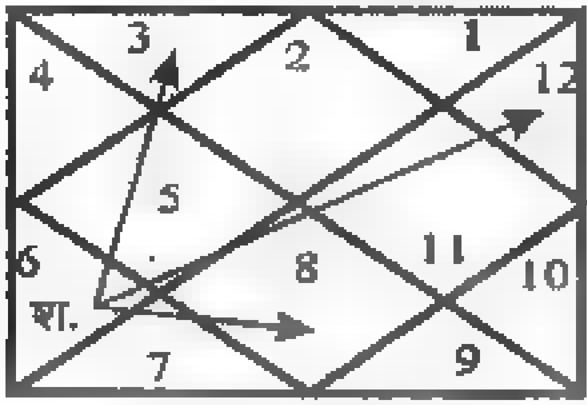
दशा—शनि की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। उसके सांसारिक एवं सभी सुखों में वृद्धि होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + सूर्य**—शनि के साथ सूर्य की युति यहां ज्यादा सार्थक नहीं है। पिता की मृत्यु के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
2. **शनि + चन्द्र**—तृतीयेश व भाग्येश की युति केन्द्र में लाभदायक है। यहां शनि अपने घर (कुम्भ राशि) एवं लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः जातक द्वारा किया गया परिश्रम सार्थक रहेगा। जातक अपने समाज में सौभाग्यशाली व्यक्ति होगा। कोर्ट-कचहरी में इसको सदैव विजय मिलेगी।
3. **शनि + बुध**—नौकर दगा देंगे। वाहन से अनिष्ट होगा। जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
4. **शनि + मंगल**—भाग्येश, दशमेश शनि की युति चतुर्थ भाव में मंगल के साथ होने से शनि अपने घर (कुम्भ राशि) एवं लग्न (वृष राशि) को देखेगा। फलतः जातक उद्योगपति या बड़ा व्यापारी होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**—सिंहस्थ शनि के साथ बृहस्पति ज्यादा शुभ नहीं है। जातक कुल का दीपक होगा, परन्तु सुख-संसाधनों की प्राप्ति में बाधा रहेगी।
6. **शनि + शुक्र**—यह युति भाग्योदय कारक है। प्रथम वाहन खरीदने के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
7. **शनि + राहु**—सिंहस्थ शनि के साथ राहु होने पर माता की मृत्यु, वाहन से दुर्घटना, अग्निकांड का भय बना रहेगा।

वृषलग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में

वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहां परम राजयोग एवं अति शुभफलदायी ग्रह है। पंचम भावस्थ शनि कन्या राशि का होगा। यहां शनि अपने



मित्र बुध की राशि में होकर हर्षित है। ऐसे जातक को स्त्री सुख, पुत्र सुख, धन-सम्पत्ति सुख, मकान-वाहन सुख पूर्ण मिलता है। जातक प्रतियोगी परीक्षाओं, व्यापार-व्यवसाय की स्पर्धाओं में आगे रहता है। शेयर, सट्टा, जुआ, लाटरी, अचानक भाग्योदय कराने वाले कार्यों में जातक की भरपूर रुचि रहती है।

दृष्टि—कन्या राशिगत पंचमस्थ शनि की दृष्टि सप्तम भाव (वृश्चिक राशि) एकादश भाव (मीन राशि) एवं धन भाव (मिथुन राशि) पर रहेगी। फलतः जातक को गृहस्थ सुख, व्यापार-सुख एवं धन प्राप्ति का पूर्ण सुख समय-समय पर मिलता रहेगा।

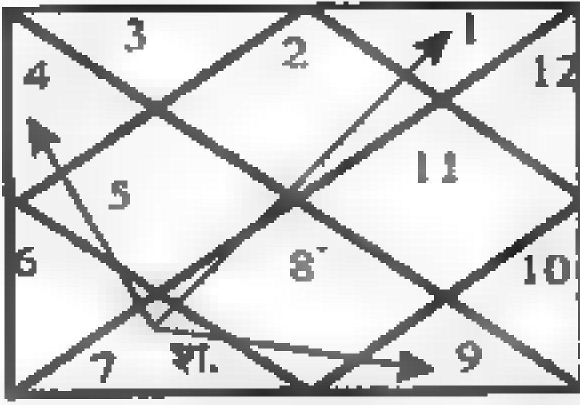
दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। उसे विद्या, विवाह एवं सन्तति का सुख मिलेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + सूर्य**—शनि के साथ सुखेश सूर्य नीचाभिलाषी है। फलतः विद्याध्ययन में बाधा व संघर्ष की स्थिति रहेगी।
2. **शनि + चन्द्र**—तृतीयेश चन्द्र की भाग्येश के साथ त्रिकोण में युति केन्द्र+त्रिकोण सम्बन्ध करके जातक को उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ाएगी।
3. **शनि + मंगल**—शनि+मंगल की युति यहां पर पुनः केन्द्र+त्रिकोण सम्बन्धों पर आधारित एक उत्तम युति होगी। जातक चालाक एवं स्वार्थी बुद्धि से युक्त होकर यथेष्ट धन अर्जित करेगा।
4. **शनि + बुध**—यहां 'भाग्यमूल धनयोग' बनेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक भाग्यशाली होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**—भृगुसूत्र के अनुसार 'गुरुदृष्टे स्त्रीद्वयम्' जातक की दो पत्नियां होंगी। प्रायः जातक को प्रथम पुत्र एवं द्वितीय पुत्री होती है।
6. **शनि + शुक्र**—यह युति पुत्र सन्तति एवं कन्या सन्तति दोनों के लिए लाभप्रद है।
7. **शनि + राहु**—भृगुसूत्र के अनुसार 'पुत्रहीनः दरिद्रोः' जातक को पुत्र सन्तति में बाधा होती है। धन प्राप्ति में भी बाधा रहती है।

वृषलग्न में शनि की स्थिति षष्ठम स्थान में

वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहां परम राजयोग एवं अति शुभ फलदायी ग्रह है। षष्टमस्थ शनि तुला राशि में उच्च का होगा। तुला राशि



के 20 अंशों में शनि परम उच्च का होता है। यहां उपचय स्थान में होने के कारण नैसर्गिक पाप ग्रह होते हुए भी शनि शुभ फल देगा। यद्यपि शनि छठे जाने से 'भाग्यभंग योग' एवं 'राज्यभंग योग' की सृष्टि हुई है। जातक भाग्यशाली व धनवान होता है, परन्तु मानसिक रूप से परेशान रहता है। कानून व न्याय का जानकार, तर्कशास्त्री होता है।

दृष्टि—छठे स्थान में तुला राशिगत शनि की दृष्टि अष्टम भाव (धनु राशि) द्वादश भाव (मेष राशि) एवं तृतीय भाव (कर्क राशि) पर रहेगी। फलतः जातक पराक्रमी होगा, दीर्घायु होगा एवं खर्चीले स्वभाव का होगा।

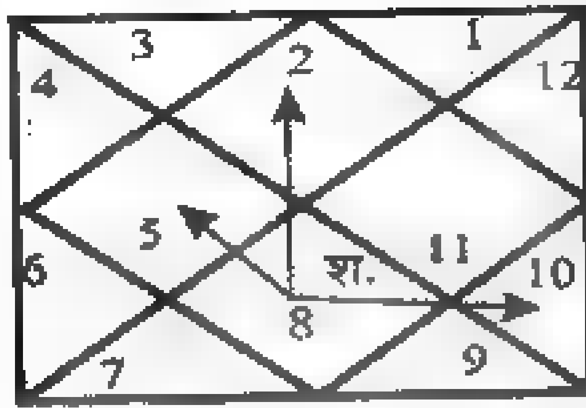
निशानी—विवाह विलम्ब से होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + सूर्य**—शनि, सूर्य की युति के कारण यहां 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि हुई। सरकारी नौकरी के रास्ते बंद, फिर भी जातक राजा तुल्य पराक्रमी होगा।
2. **शनि + चन्द्र**—शनि यहां चंद्रमा के साथ छठे स्थान पर जाने से 'भाग्यभंग योग', 'राज्यभंग योग' बना, परन्तु शनि उच्च का है। अतः चंद्रमा का अशुभत्व नष्ट हो गया है। जातक पराक्रमी होगा।
3. **शनि + मंगल**—भृगुसूत्र के अनुसार 'कुजमुतेदेशान्तरसंचारी' शनि मंगल की युति जातक को देश-विदेश में घुमाती है।
4. **शनि + बुध**—भृगुसूत्र के अनुसार जातक के जातिबंधु, परिजन ही जातक के शत्रु होंगे।
5. **शनि + बृहस्पति**—तुला राशिगत शनि के साथ अष्टमेश बृहस्पति की युति शुभ है। जातक शत्रुओं का नाश करने में समर्थ रहेगा।
6. **शनि + शुक्र**—यहां 'किम्बहुना योग' बनेगा। इससे अधिक और क्या? जातक व्यापार-व्यवसाय में खूब धन कमाएगा।
7. **शनि + राहु**—यहां शनि के साथ राहु होने से जातक के भाग्य में निरन्तर अवरोध आते रहते हैं।

वृषलग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में

वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहां परम राजयोग कारक एवं अति शुभफलदायी ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित शनि वृश्चिक राशि का होगा।



वृश्चिक शनि के शत्रु (मंगल) की राशि है। परन्तु शनि यहां अपनी मूलत्रिकोण राशि से दसवें स्थान पर होने के कारण 'दिग्बली' है। अत: शतप्रतिशत शुभ फल ही देगा। जातक की आमदनी हजारों-लाखों में होगी। जातक हठी, अत्यन्त धनी व कूटनीतिज्ञ होगा। जातक राज्याधिकारी होगा अथवा राजनीति में उच्च पद प्राप्त करेगा।

दृष्टि—सप्तम भावगत वृश्चिक राशि में स्थित शनि की दृष्टि भाग्य भवन अपनी ही राशि मकर, लग्न भाव (वृष राशि) एवं चतुर्थ भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलत: भाग्य में तरक्की, व्यक्तित्व में निखार एवं भौतिक सुखों में वृद्धि कराएगा।

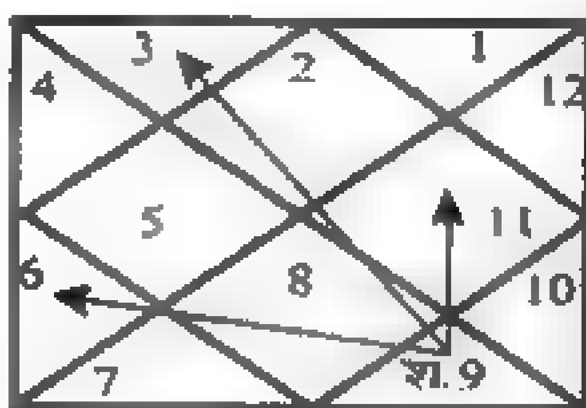
दशा—शनि की दशा भाग्योदय कराएगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + चन्द्र**—यह युति स्वभाव में चंचलता समाप्त कर, जातक को गंभीर स्वभाव का बनाएगी। जातक का नाम भाग्यशाली व्यक्तियों में होगा।
2. **शनि + सूर्य**—ऐसे जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु के बाद होगा। सही भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
3. **शनि + मंगल**—भाग्येश, दशमेश शनि का केन्द्रस्थ होकर मंगल से युत होना शुभ है व भाग्योदय में सहायक है। परन्तु जातक की पत्नी हठी, जिद्दी व अहंकारी होगी।
4. **शनि + बुध**—यह युति यहां जातक को वेश्यागामी बना देगी। जातक अपने से बड़ी उम्र की स्त्रियों के साथ सहवास करेगा। जातक भाग्यशाली होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**—अष्टमेश बृहस्पति का सप्तम स्थान में शनि के साथ होना गृहस्थ सुख में बाधक है।
6. **शनि + शुक्र**—जातक परम भाग्यशाली होगा। यह युति सफलतादायक है।
7. **शनि + राहु**—यहां शनि के साथ राहु होने से गृहस्थ सुख में भयंकर बाधा, तलाक, बिछोह या जीवन साथी की मृत्यु भी हो सकती है।

वृषलग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में

वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अत: शनि यहां परम राजयोग एवं अति शुभ फलदायी ग्रह है। अष्टमस्थ शनि यहां धनु राशि में होगा। यहां शनि उद्विग्न व बेचैन रहेगा। शनि के अष्टम स्थान में जाने से 'भाग्यभंग योग' व 'राज्यभंग योग'



की सृष्टि हुई है। ऐसा व्यक्ति नित नए विषयों की खोज करने वाला तथा साझेदारी के काम में रुचि रखने वाला होता है। व्यक्ति गुप्त विद्या, पुरातन विद्या का जानकार होता है। दीर्घायु को प्राप्त करने वाला होता है। भृगुसूत्र के अनुसार ऐसा जातक 'कष्टान्भोजी' होता है अर्थात् सब कुछ होते हुए भौतिक सुख-सुविधाओं के होते हुए भी जातक मानसिक वेदना, कष्ट की अनुभूति करता रहेगा।

दृष्टि—धनु राशिगत अष्टमस्थ शनि की दृष्टि दशम भाव (कुम्भ राशि), धन भाव (मिथुन राशि) एवं पंचम भाव (कन्या राशि) पर होगी। यहां शनि का अपनी मूलत्रिकोण राशि कुम्भ को देखना बहुत महत्वपूर्ण है। यह जातक को सामाजिक, आर्थिक, व्यावसायिक, राजनैतिक उन्नति देता है। उत्तम सन्तति व यथेष्ट द्रव्य देता है।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी परन्तु नवीन योजनाएं लाभप्रद रहेंगी।

विशेष—अष्टम भावगत शनि मनुष्य की वृद्धावस्था में ज्यादा दुःख देता है परन्तु यदि मध्यम आयु के पूर्व यदि कष्ट दिया हो तो वृद्धावस्था में कष्ट नहीं देगा।

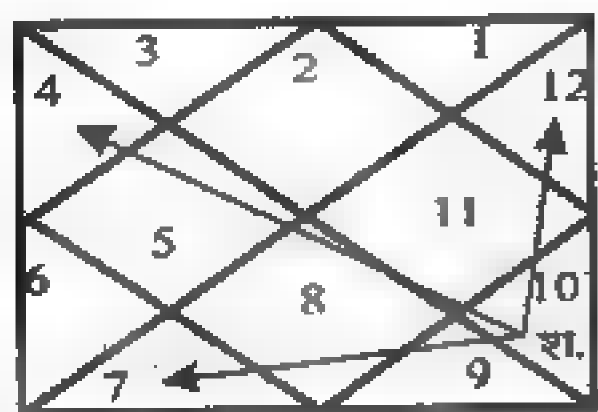
शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + सूर्य**—धन हानि, मानहानि जैसी घटना हो सकती है। जातक को कारागार जाने की नौबत आ सकती है।
2. **शनि + चन्द्र**—भाग्योदय में बाधा पर चंद्रमा निस्तेज न होगा। शनि की दृष्टि कुम्भ राशि पर होने से जातक को राजा (सरकार) से मदद मिलती रहेगी, पिता भी मददगार होगा।
3. **शनि + मंगल**—शनि आठवें जाने से 'भाग्यभंग योग', राजभंग योग' परन्तु शनि यहां बृहस्पति के क्षेत्र में होने से ज्यादा गलत, असामाजिक कार्य नहीं कराएगा।
4. **शनि + बुध**—जातक को धन प्राप्ति हेतु, सौभाग्य की प्राप्ति हेतु काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।
5. **शनि + बृहस्पति**—अष्टमेश बृहस्पति का अष्टम भाव में शनि के साथ होना शुभ है। फिर भी गुप्तरोग, दाएं पैर में चोट का खतरा बना रहेगा।

6. **शनि + शुक्र**–'भाग्यभंग योग' व 'राज्यभंग योग' के कारण सही नौकरी व व्यवसाय की प्राप्ति हेतु जातक को संघर्ष करना पड़ेगा।

7. **शनि + राहु**–यहां शनि रोगकारक होगा।

वृषलग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में



वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहां परम राजयोग एवं अति शुभ फलदायी ग्रह है। नवम स्थान में शनि अपनी स्वराशि मकर में होगा। केन्द्र व त्रिकोण के स्वामी के रूप में शनि की यहां उपस्थिति अत्यन्त लाभप्रद है। शनि यहां 'पद्मसिंहासन योग' भी बना रहा है। शनि नीच व दुष्ट ग्रह होते हुए भी यहां पर सर्वोत्तम सुन्दर फल देगा। गर्ग संहिता के अनुसार नवम भावगत उच्च या स्वगृही शनि हो तो ऐसे जातक का पूर्वजन्म एवं पुनर्जन्म दोनों ही श्रेष्ठ होते हैं। जातक किस्मत वाला होता है। धन, धर्म, बन्धु, पिता, पुत्र, यश, वैभव सभी सुख इस जातक को मिलेंगे। जातक का पिता दीर्घायु वाला होता है। जातक स्वयं दूरदर्शी व तन्त्र का जानकार होता है।

दृष्टि–भाग्य भावगत मकर राशिगत शनि की दृष्टि लाभ स्थान (मीन राशि), पराक्रम स्थान (कर्क राशि) एवं षष्टम भाव (तुला राशि) पर होगी।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक को राजा की पदवी, राजसिंहासन (महत्वपूर्ण राजनैतिक) पद मिलता है।

विशेष–जातक को पिता की सम्पत्ति मिलती है या जातक पैतृक व्यवसाय में पिता से आगे निकल जाता है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + सूर्य**–शनि के साथ सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा। व्यापार-व्यवसाय में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे।

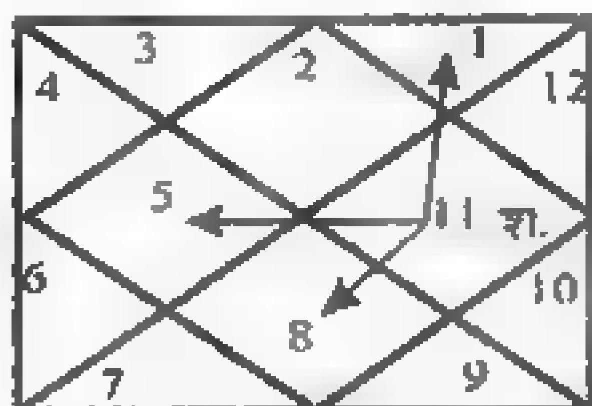
2. **शनि + चन्द्र**–यह युति 'पद्मसिंहासन योग' बनाएगी। जातक करोड़पति होगा।

3. **शनि + मंगल**–यहां 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली, वैभवशाली होगा।

4. **शनि + बुध**–जातक महान पराक्रमी होगा। उसको व्यापार में लाभ होगा। जातक ऋण, रोग व शत्रु का समूल नाश करने में समर्थ होगा।

5. **शनि + बृहस्पति**–अष्टमेश बृहस्पति जब शनि के साथ होगा तो 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
6. **शनि + शुक्र**–यह युति अति उत्तम रहेगी। जातक व्यभिचारी होगा। अपने से बड़ी उम्र की स्त्री के साथ जातक सहवास करेगा।
7. **शनि + राहु**–पिता का अरिष्ट होगा। राहु की युति से भाग्योदय में अकारण बाधाएं आती रहेंगी पर अंतिम सफलता निश्चित है।
8. **शनि + केतु**–पिता बीमार होगा।

वृषलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में



वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहां परम राजयोग एवं अति शुभ फलदायी ग्रह है। दशम स्थान में शनि अपनी मूलत्रिकोण राशि कुम्भ में होगा। शनि स्वगृही केन्द्र में होने से 'शश योग' भी बना। 'पद्मसिंहासन योग' भी बना। यह शनि की सर्वोत्तम श्रेष्ठ अवस्था है। ऐसा शनि रोडपति को करोड़पति, गरीब को अमीर, रंक को राजा, अनजाने व बेगाने व्यक्ति को अपार यशस्वी व उच्च राजनेता मिनटों में बना देता है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता है, अथाह भू-सम्पत्तियों का स्वामी होता है। जातक के पिता की लम्बी आयु होती है।

निशानी–जातक जादू, तन्त्र-विद्या का जानकार होता है तथा राजसभा से सम्मानित होता है।

दृष्टि–दशमस्थ स्वगृही शनि की दृष्टि व्यय भाव (मेष राशि), सुख भाव (सिंह राशि) एवं सप्तम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी।

विशेष–शनि को न्यायाधीश कहा गया है। यह मनुष्यों को छुपके से किए गए पापों के लिए सजा देता है। तत्पश्चात् श्रेष्ठ फल भी देता है। अर्थात् कष्ट के बाद सुख भी देता है। शनि प्रभावी व्यक्ति श्रेष्ठ वकील, जज, आई.ए.एस., आर.ए.एस. अधिकारी के रूप में ज्यादा सफल होता देखा गया है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को राज्याधिकारी बनाएगी, जातक का भाग्योदय कराएगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + सूर्य**–जातक बड़ी भू-सम्पति का स्वामी होगा। जातक को माता-पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली व प्रतापी होगा।

2. **शनि + चन्द्र**—जातक महाधनी होगा, उद्योगपति होगा। उसे पैतृक सम्पत्ति मिलेगी।

3. **शनि + मंगल**—जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

4. **शनि + बुध**—ऐसा जातक इन्द्रतुल्य पराक्रमी होता है।

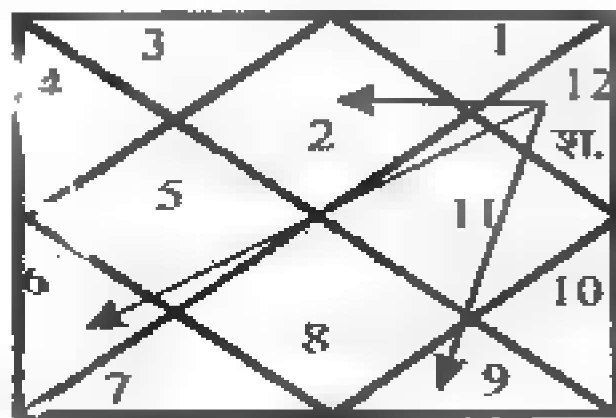
5. **शनि + बृहस्पति**—लाभेश, अष्टमेश बृहस्पति की युति केन्द्रवर्ती होने से जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगेगा।

6. **शनि + शुक्र**—शुक्र, शनि की युति यहां खिलेगी। जातक राजा, राजमंत्री या आई.ए.एस. अधिकारी होगा।

7. **शनि + राहु**—यहां राहु के साथ होने से जीवन में सफलताएं जल्दी प्राप्त होती रहेंगी।

[redacted] **शनि + केतु**—जातक यशस्वी होगा।

वृषलग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में



वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहां परम राजयोग एवं अति शुभ फलदायी ग्रह है। शनि एकादश स्थान में मीन राशि का होगा। मीन शनि की शत्रु राशि है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार नैसर्गिक पापग्रह यदि तृतीय, षष्ठ, एकादश (उपचय) स्थान में हो तो शुभ फल देते हैं। फलतः शनि यहां शुभ फल ही देगा। जातक को बुजुर्गों की सम्पत्ति मिलती है। जातक 'राजपूजक' होता है। उसे राजा (राज्य सरकार) द्वारा सम्मान मिलता है। जातक को स्त्री, उत्तम सन्तति, धन, वाहन, उत्तम भवन एवं सभी सांसारिक सुखों की प्राप्ति होती है। जातक की ससुराल भी धनी होगी।

दृष्टि—मीन राशि एकादश भाव में स्थित शनि की दृष्टि लग्न भाव (वृष राशि), पंचम भाव (कन्या राशि) एवं अष्टम भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसा जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा। परिश्रम में सफलता मिलेगी। जातक की सन्तान शिक्षित होगी। जातक दीर्घायु को प्राप्त करेगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

निशानी—जातक को भाई-बंधुओं से लाभ होगा।

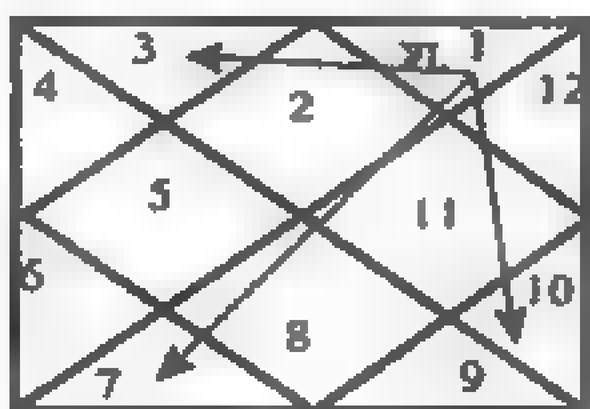
शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + सूर्य**—भावार्थ रत्नाकर के अनुसार 'लाभस्थो भानु भाग्यदेशौ दीर्घायु

योगवान' ऐसा जातक लम्बी उम्र वाला एवं योगी होता है। जातक उद्योगपति होगा।

2. **शनि + चन्द्र**—जातक परम सौभाग्यशाली व्यक्ति होगा। उच्च व्यापारी होगा।
3. **शनि + मंगल**—जातक दीर्घायु होगा। ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रु को नाश करने में सक्षम होगा।
4. **शनि + बुध**—ऐसा जातक महान पराक्रमी व सौभाग्यशाली होगा। जातक दीर्घायु होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**—यहां लाभेश लाभ स्थान में स्वगृही होकर जब शनि के साथ होगा तो जातक व्यापार में खूब धन-दौलत कमाएगा।
6. **शनि + शुक्र**—यह युति 'अनेक वाहन' बनाती है। भाग्येश शनि के साथ उच्च के शुक्र की युति अत्यन्त शुभफलदायी है।
7. **शनि + राहु**—शनि के साथ राहु होने पर राज द्वारा सम्मान में षड्यंत्र होगा। सरकारी क्षेत्र में गुप्त व प्रकट शत्रु होंगे।

वृषलग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में



वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहां परम राजयोग एवं अति शुभ फलदायी ग्रह है। द्वादश भाव में स्थित शनि मेष राशि का होगा। यह शनि की नीच राशि है। मेष राशि के 20 अंशों तक शनि परम नीच का होगा। शनि के बारहवें जाने से क्रमशः 'भाग्यभंग योग' एवं 'राज्यभंग योग' की सृष्टि हुई है। ऐसे जातक के भाग्योदय में रुकावट आती है। जातक के शत्रु बहुत होते हैं। जातक अत्यधिक खर्चीले स्वभाव का होता है। धन का संग्रह नहीं हो पाता। भाग्योदय, नौकरी की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ता है। जातक परोपकारी होगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय में नुकसान (धोखा) मिलेगा।

निशानी—जातक सांसारिक सुखों के प्रति उदासीन हो जाता है। जातक मध्यायु के बाद त्यागी, वैरागी या संन्यासी हो जाता है।

दृष्टि—द्वादश भाव में स्थित मेष राशि के शनि की दृष्टि धन भाव (मिथुन राशि), छठे भाव (धनु राशि) एवं अपने ही घर, भाग्य भाव (मकर राशि) को देखेगा। फलतः धन प्राप्ति में बाधा, जातक के जीवन में अकारण शत्रु पैदा होते रहेंगे

परन्तु फिर भी जातक भाग्यशाली होगा। संघर्ष के बाद जातक अंतिम सफलता का स्वामी होगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। सावधानी अनिवार्य है।

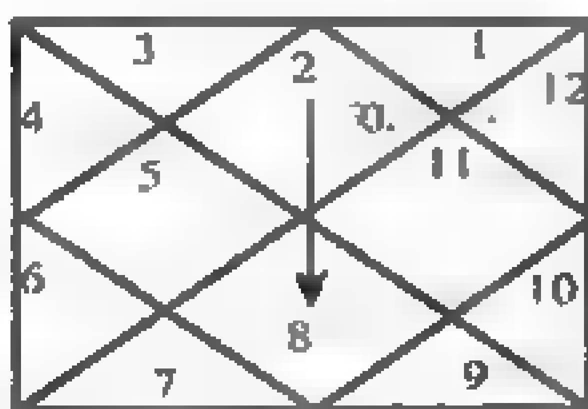
शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + सूर्य**—यहां पर 'नीचभंग राजयोग' बना। फलतः जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य-वैभव को भोगेगा। जातक का भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि + चन्द्र**—भाग्येश+दशमेश बारहवें होने से 'भाग्यभंग योग' बनेगा। जातक के भाग्योदय में व्यापार में काफी रुकावटें आएंगी।
3. **शनि + मंगल**—यहां 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं खर्चीले स्वभाव का होगा।
4. **शनि + बुध**—यह युति ज्यादा शुभद नहीं होगी। जातक को भाग्योदय एवं सौभाग्य की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
5. **शनि + बृहस्पति**—यहां लाभेश, अष्टमेश बृहस्पति का द्वादश स्थान में शनि के साथ होना शुभ है। व्यक्ति धर्म कार्य, परोपकार में अपना खर्च करेगा।
6. **शनि + शुक्र**—शुक्र यहां 'लग्नभंग योग' के साथ होकर शनि से युति करेगा जो ज्यादा सार्थक नहीं है।
7. **शनि + राहु**—भृगुसूत्र के अनुसार 'पापयुते नरकप्राप्ति' जातक की मृत्यु दर्दनाक होगी। दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **शनि + केतु**—भृगुसूत्र के अनुसार 'पापयुते नेत्रच्छेदः'।

❑❑❑

वृषलग्न में राहु की स्थिति

वृषलग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में



वृषलग्न में लग्नस्थ राहु उच्च [redacted] होता है। प्रायः लग्नस्थ राहु से मनुष्य अपनी उम्र से अधिक एवं कुरूप प्रतीत होता है किन्तु वृषलग्न में राहु वाला व्यक्ति युवा, सुंदर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। जातक के जन्म के समय पिता घर पर नहीं होगा। जातक का जन्म ननिहाल या अस्पताल में होगा। जातक के चेहरे पर काले रंग का तिल या कोई निशान होगा। जातक को राज दरबार में सम्मान मिलेगा। जातक कूटनीतिज्ञ होगा।

निशानी–चालीस वर्ष की आयु के बाद पत्नी के शरीर में दर्द की शिकायत रहती है।

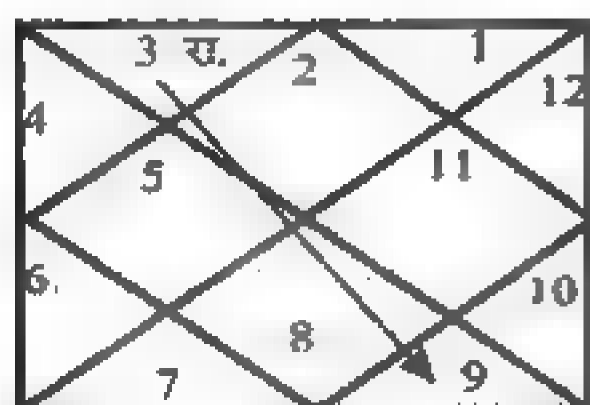
दशा–यदि कालसर्प योग में जन्म न हो तो राहु की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु + सूर्य**–सूर्य राहु की युति शुभद नहीं है। जातक को सुख प्राप्ति में कष्टानूभूति होगी।
2. **राहु + चन्द**–चंद्रमा यहां उच्च का होगा। ऐसा जातक 'चन्द्रकृत राजयोग' के कारण संसार के सभी सुखों को भोगेगा।
3. **राहु + मंगल**–मंगल के साथ राहु होने से जातक धोखेबाजी, स्मलिंग, उग्रवाद एवं बलात्कार की प्रेरणा से प्रेरित होगा।
4. **राहु + बुध**–लग्न में उच्च के राहु के साथ बुध यहां राजयोग प्रदाता है। जातक धनी होगा एवं राजनीति में प्रभावशाली व्यक्ति होगा।

5. **राहु + बृहस्पति**–गुरु, राहु की युति लग्न में 'चाण्डाल योग' की सृष्टि करती है। व्यक्ति दुस्साहसी होगा एवं धार्मिक छलावे में विश्वास रखने वाला होगा।
6. **राहु + शुक्र**–जातक अपने कुल का नाम रोशन करेगा। राजपुरुषों या राजनीतिज्ञों में जातक का अच्छा नाम होगा। गृहस्थ सुख में कुछ बाधा सम्भव है।
7. **राहु + शनि**–ऐसा जातक जिद्‌दी व हठी स्वभाव का होता है, पर भाग्यशाली होता है।

वृषलग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में



वृषलग्न में राहु लग्नेश का मित्र है। यहां द्वितीयस्थ मिथुन राशि में राहु स्वगृही है। ऐसा जातक धनी होता है। वाणी ज्यादा कठोर या रूखी नहीं होती। 34 वर्ष की आयु के बाद ससुराल से लाभ होगा। मनुष्य की देह पुष्ट होती है। घर, धन, परिवार एवं वाहन से जातक परिपूर्ण होता है। ऐसा मनुष्य चतुर व चालाक होता है।

निशानी–ऐसे व्यक्ति के दो विवाह होते हैं।

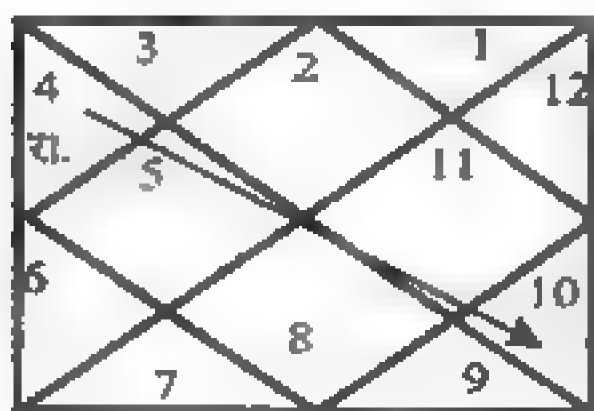
दशा–यदि कुण्डली में कालसर्प योग न हो तो राहु की दशा में व्यक्ति शत्रुओं को पराजित करता है। संघर्ष में विजय प्राप्त करता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु + सूर्य**–राहु सूर्य के तेज को समाप्त कर देता है पर यहां मिथुन में राहु स्वगृही होने से इतना नुकसानदायक नहीं है। फिर भी धन के मामले को लेकर जातक को काफी संघर्ष करना पड़ता है।
2. **राहु + चन्द्र**–राहु चन्द्र के तेज को समाप्त कर देता है। जातक जितना चाहे कमाए धन की बरकत नहीं होगी।
3. **राहु + मंगल**–वाणी में स्खलन होगा। जातक झूठ ज्यादा बोलेगा। जातक नेत्र रोगी होगा खर्चीले स्वभाव का होगा। फिजूलखर्ची के कारण कई बार परेशानी में आएगा।
4. **राहु + बुध**–बुध स्वगृही होगा पर राहु यहां धन के घड़े में छेद करेगा। धन की अच्छी आवक होते हुए भी धन की बरकत नहीं होगी।
5. **राहु + बृहस्पति**–गुरु, राहु की युति से 'चाण्डाल योग' बनता है। धन प्राप्ति में बाधा के साथ गुप्तरोग की सम्भावना बनी रहेगी।

6. **राहु + शुक्र**—ऐसा जातक शराब, जुआ, भोग-विलास में डूबा रहेगा। जातक के वैवाहिक जीवन में टकराव रहेगा।
7. **राहु + शनि**—भाग्येश, राज्येश शनि का मित्र के घर में जाना शुभ है। राहु जहां जातक को खर्चीला बनाएगा, वहां शनि धन की आवक को बराबर बनाए रखेगा। जातक का कोई काम अटका हुआ नहीं रहेगा।

वृषलग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में



वृषलग्न में राहु की लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां तृतीय स्थान में कर्क राशिगत राहु अपने शत्रु चन्द्रमा की राशि में है। ऐसा जातक पराक्रमी एवं शौर्यवान होता है। इसकी कलम में तलवार से अधिक ताकत होती है। परन्तु फिर भी मित्र वफादार नहीं होते। जिनके लिए जान जोखिम में डाली जिनका काम किया वे ही धोखा देंगे। जीवन में संघर्ष से मुक्ति नहीं है।

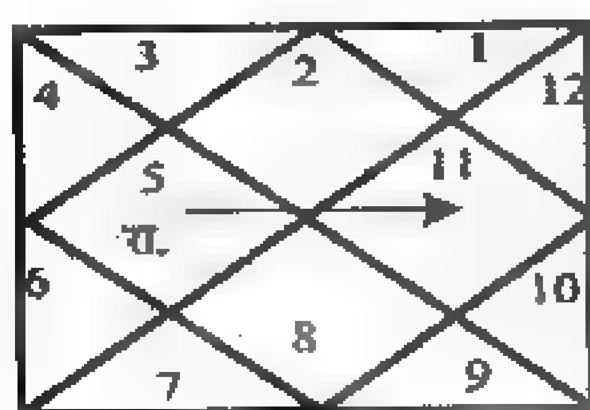
निशानी—ऐसे जातक को नींद में भी सच्चे ख्वाब आयेंगे।

दशा-यदि जन्मकुंडली में कालसर्प योग न हो तो राहु की दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु + सूर्य**—राहु सूर्य का तेज समाप्त करता है उसके शुभ फलों को तोड़ता है। इस अति के कारण जातक के परिजन व मित्र ही जातक के शत्रु होंगे।
2. **राहु + चन्द्र**—चन्द्र राहु के कारण जातक सनकी, स्वार्थी, एवं झगड़ालू स्वभाव का होगा। भाईयों, परिजनों से नहीं निभेगी।
3. **राहु + मंगल**—कर्कस्थ राहु मंगल की युति के कारण जातक के परिजनों में द्वेष रहेगा। जातक को मित्रों से भी दगा मिलेगा।
4. **राहु + बुध**—शत्रुक्षेत्री बुध के साथ राहु की युति परिजनों एवं मित्रों में विवाद व कलह करायेगी।
5. **राहु + बृहस्पति**—यह युति **'चाण्डाल योग'** की सृष्टि करती है। जातक को बड़े भाई का सुख नहीं मिलेगा।
6. **राहु + शुक्र**—भाईयों में शत्रुता व मानसिक तनाव रहेगा।
7. **राहु + शनि**—कर्कस्थ राहु के साथ शनि होने पर जातक परम पराक्रमी एवं भाग्यशाली होगा। जातक यारी-दोस्ती में पैसा बहुत उड़ायेगा।

वृषलग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में



वृषलग्न में राहु लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां चतुर्थ स्थान में राहु सिंह राशि में होगा। सिंह राशि राहु के परम शत्रु सूर्य की राशि है। यह अग्नि तत्त्व प्रधान राशि है। फलतः जातक क्रोधी होगा। जातक के माता-पिता को क्लेश-कष्ट परेशानी कोई न कोई लगी रहेगी। ऐसे जातक को जीवन में अनेक प्रकार की असफलताओं, बाधाओं, का सामना करना पड़ेगा।

निशानी–ऐसा जातक पिस्तौल-बन्दूक या शस्त्र रखने का शौकीन होगा।

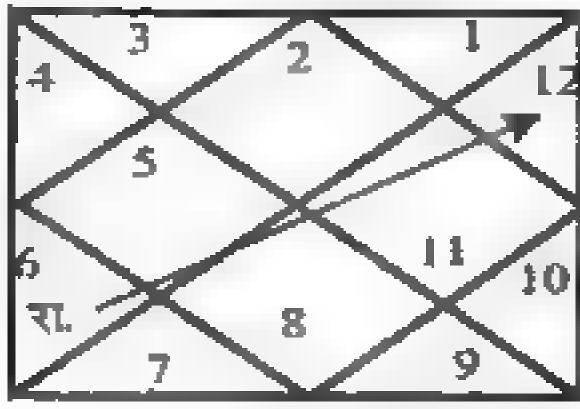
दशा–राहु की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फलकारी है। यदि कालसर्प योग न हो तो दशा ज्यादा प्रतिकूल नहीं रहेगी

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु + सूर्य**–यहां सूर्य राहु की प्रति माता-पिता के सुख में न्यूनता लाती है। जातक उद्दण्ड होता है।
2. **राहु + चन्द्र**–चन्द्र राहु की युति माता के सुख में कमी, वाहन से दुर्घटना एवं नौकर से दगा दिलायेगी।
3. **राहु + मंगल**–राहु मंगल का शत्रु है। यह युति मातृ सुख में बाधक है। भवन एवं वाहन सुख में हानि पहुंचायेगा।
4. **राहु + बुध**–जातक बन्धुओं का द्वेषी होगा। वाहन में अरिष्ट होगा।
5. **राहु + बृहस्पति**–राहु, राहु की युति **'चाण्डाल योग'** बनायेगी। जातक को पिता के पूर्ण सुख की कमी रहेगी।
6. **राहु + शुक्र**–जातक के माता-पिता को कष्ट रहेगा। जातक के गृह निर्माण में बाधाएं आयेंगी।
7. **राहु + शनि**–सिंहस्थ राहु के साथ शनि होने पर माता की मृत्यु, वाहन से दुर्घटना, अग्निकाण्ड का भय बना रहेगा।

वृषलग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में

वृषलग्न में राहु लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां पंचम भाव में कन्या राशि का है। कन्या राशि में राहु स्वगृही माना गया है।जो शुभफलों को देने वाला है। त्रिकोण भाव में छाया ग्रह जातक के हित में शुभ फल देते है। भृग्रसूत्र के अनुसार राहु यदि



पंचम स्थान में हो तो "पुत्राभाव सर्प शापात् प्रत्यक्ष, नागप्रतिष्ठया प्रच प्राप्ति " सर्प के श्राप से पुत्र सन्तति नहीं होती परन्तु नाग की प्रतिष्ठा करने पर पुत्र सम्भव है। मेरे मत में यह नियम कन्या राशिगत पंचमस्थ राहु पर लागू नहीं होता।

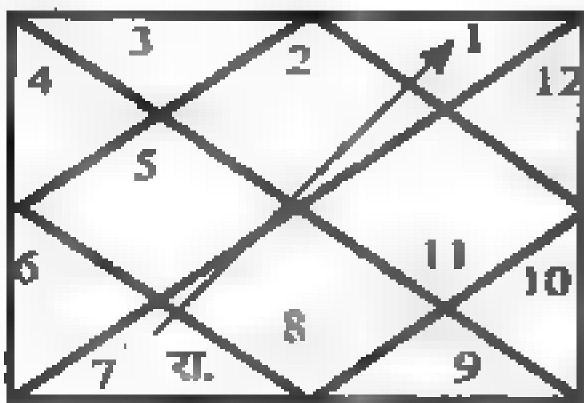
ऐसा जातक को सन्तति होती है। जीवन में सफलता भी मिलती है। जातक, बुद्धि बल में उत्तम धन की प्राप्ति करता है। उसका गृहस्थ जीवन सुखी होता है।

दशा- यदि कालसर्प योग न हो तो राहु की दशा अन्तर्दशा शुभ फल देगी। नवीन योजनाएं सफल होंगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध-

1. **राहु + सूर्य**--यहां राहु, सूर्य की युति पुत्र सन्तति में बाधक है। राहु मित्र के घर में होने के कन्या सन्तति तो देगा ही।
2. **राहु + चन्द्र**--चन्द्र राहु की युति सन्तान प्राप्ति में बाधक है। विद्या प्राप्ति में बाधक है तथा चंद्रमा का अशुभत्त्व बढ़ायेगी।
3. **राहु + मंगल**--जहां राहु सन्तति सुख में बाधक तत्व का कार्य करेगा, वहां मंगल गर्भपात-गर्भस्राव करायेगा। विद्या में भी रुकावट देगा।
4. **राहु + बुध**--राहु पुत्र नाशक में सहायक है। माता के बीमारी सम्भव है।
5. **राहु + बृहस्पति**--राहु के साथ बृहस्पति गर्भपात करायेगा। यह दुष्परिणाम 'चाण्डाल योग' के कारण होगा।
6. **राहु + शुक्र**--गर्भपात या गर्भस्राव होता रहेगा पर अनुष्ठान (उपाय) के बाद पुत्र की प्राप्ति होगी।
7. **राहु + शनि**--भृगुसूत्र के अनुसार 'पुत्रहीनः दरिद्री' जातक को पुत्र सन्तति में बाधा होती है। धन प्राप्ति में भी बाधा रहती है।

वृषलग्न में राहु की स्थिति षष्ट्म स्थान में



वृषलग्न में राहु लग्नेश शुक्र का मित्र है। राहु यहां छठे स्थान में तुला राशि का है। तुला राशि राहु की प्रिय राशि है। ऐसा जातक रोग, ऋण और शत्रुओं का समूल नाश करने में सक्षम-समर्थ होता है। जातक दृढ़-निश्चयी, लम्बी

आयु वाला होता है। जातक चतुर होता है। उसकी सूझ-बूझ, प्रतिभा विलक्षण होती है।

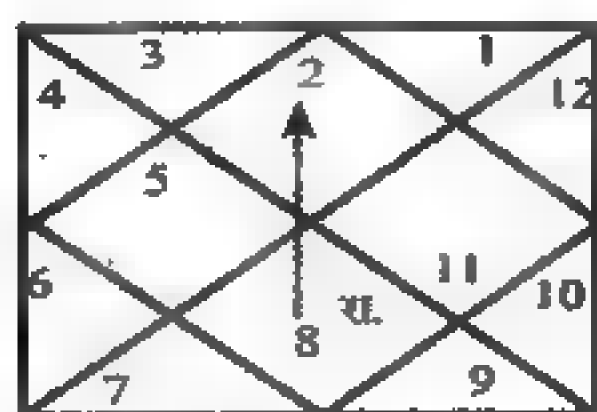
निशानी–जातक अपनी किस्मत आप जगाता है। नाभि के नीचे काले रंग का तिल होता है।

दशा–राहु की दशा-अन्तर्दशा में जातक गुप्त रूप व योजनाबद्ध तरीक से आगे बढ़ता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. राहु + **सूर्य**–सूर्य यहां छठे होने से, भौतिक सुखों में बाधा आयेगी। जातक पराक्रमी होगा पर उसकी सोच नकारात्मक होगी।
2. राहु + **चन्द्र**–यह युति ज्यादा खराब नहीं है क्योंकि दुष्ट ग्रहों का स्थान में होना शुभ है। छठे स्थान में राहु राजयोग कारक है।
3. **राहु + मंगल**–ऐसा जातक गुप्त एवं रहस्यमय शक्ति का स्वामी होगा।
4. राहु + **बुध**–जातक को वातरोग होगा एवं वाणी में दोष रहेगा।
5. **राहु + बृहस्पति**–राहु गुरु की युति **'चाण्डाल योग'** की सृष्टि करेगी। जातक को गुप्त शत्रु या गुप्त रोग में पीड़ा होगी।
6. राहु + **शुक्र**–जातक की शिक्षा अधूरी रहती है। जातक लालची स्वभाव का होगा।
7. **राहु + शनि**–यहां राहु के साथ शनि होने से जातक के भाग्य में निरन्तर अवरोध आते रहते हैं।

वृषलग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में



वृषलग्न में राहु लग्नेश शुक्र का मित्र हैं। यहां सप्तम भाव में राहु वृश्चिक राशि का होगा। वृश्चिक राशि में राहु नीच का होता है। ऐसे जातक की नौकरी अस्थिर रहती है। वैवाहिक सुख में कुछ न कुछ न्यूनता रहती है। जातक कठोर परिश्रमी एवं राज्याधिकारी होता है। जातक में आचरण-व्यवहार व योग्यता की विशेष प्रतिभा होती है। जातक गुप्त शक्तियों का स्वामी होता है।

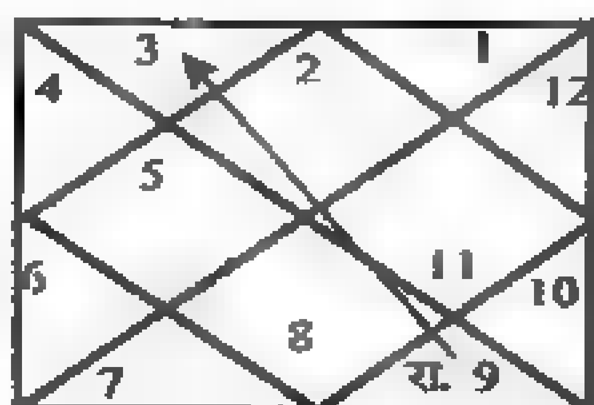
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. राहु + **सूर्य**–सप्तम भाव राहु, सूर्य की युति जीवनसाथी में वैमनस्य कायेगी, तथा

कई बार तो जीवन में तलाक (बिछोह) की स्थिति भी आती है।

2. राहु + चन्द्र–चन्द्र के साथ राहु की युति वाला जातक चरित्रहीन होगा। उसका जीवनसाथी लम्पट होगा।
3. राहु + मंगल–व्यक्ति कातातुर रहता है। पत्नी से मनोमालिन्यता कराता है।
4. राहु + बुध–जातक पाशविक मैथुन करेगा एवं युद्ध में शत्रु से पराजित होगा।
5. राहु + बृहस्पति–यहां 'चाण्डाल योग' बना। गुरु राहु की युति पति-पत्नी में स्थाई मनमुटाव उत्पन्न करेगी।
6. राहु + शुक्र–व्यक्ति विशेष रुप से कातातुर रहता है। दाम्पत्य सुख में बाधा।
7. राहु + शनि–यहां राहु के साथ शनि होने से गृहस्थ सुख में भंयकर बाधा, तलाक, बिछोह या जीवन साथी की मृत्यु की स्थिति भी आ सकती है।

वृषलग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में



वृषलग्न में राहु लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां अष्टम भाव में राहु धनु राशि का होगा। धनु राशि राहु की शुभ राशि है जहां राहु नीच का कहलाता है। फलतः जातक की किस्मत झूले की तरह कभी ऊपर, कभी नीचे चलती रहेगी। जीवन में अस्थिरता रहेगी। नौकरी, व्यापार-व्यवस्था में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे। जातक मानसिक तनाव में रहेगा। कोई न कोई बीमारी शरीर में लगी रहेगी। शिक्षा में बाधाएं आयेंगी।

निशानी–चौंतीस वर्ष की मृत्यु के बाद जातक का दूसरा विवाह होने की सम्भावना रहेगी। अथवा मूत्राशय में बीमारी होगी।

दशा–राहु की दशा – अन्तर्दशा अशुभ फल देगी।

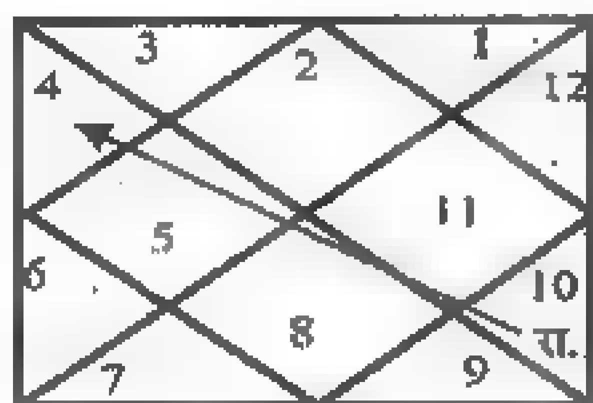
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. राहु + सूर्य–अष्टम भाव में राहु के साथ सूर्य हो तो जातक के पिता की आयु कम होती है।
2. राहु + चन्द्र–ऐसे जातक के धन का अपव्यय पुलिस केस व अदालतों में होता है। जातक के मानसिक व दैहिक रोग होते है।
3. राहु + मंगल–राहु अष्टम में शत्रुक्षेत्री होकर मंगल के साथ होने से गुप्त रोग,

गुप्त पीड़ा एवं गुप्त कष्ट देगा।

4. **राहु + बुध**–राहु, बुध की युति दुर्घटनाकारक है। दाई टांग में कष्ट हो सकता है।
5. **राहु + बृहस्पति**–यहां बना **'चण्डाल योग'** अनिष्टसूचक है। गुप्त शत्रु एवं गुप्त रोग जातक को परेशान करेंगे।
6. **राहु + शुक्र**–जातक शराबी, व्यभिचारी होगा।
7. **राहु + शनि**–यहां राहु के साथ शनि होने पर भाग्य में भयंकर बाधा कष्ट का संकेत स्पष्ट है।

वृषलग्न में राहु की स्थिति नवम स्थान में



वृषलग्न में राहु लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां नवम भाव में राहु मकर राशि का होगा। मकर राशि राहु की सम राशि है। इन भावों में राहु पराक्रमी, कठोर परिश्रमी एवं शौर्यवान जातक हो जन्म देता है। जातक व्यवहार में थोड़ा बेईमान, जादू-टोनों में विश्वास रखने वाला होता है। जीवन में सांसारिक उन्नति, सामाजिक प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु थोड़ा संघर्ष करना पड़ता है।

निशानी–पिता की अल्प आयु या पिता रोगों में ग्रसित रहता है। जातक के शत्रु जातक से परेशान रहते हैं।

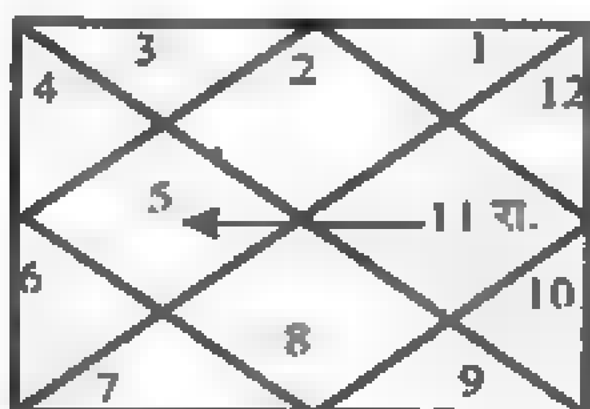
दशा–यदि कालसर्प योग न हो तो राहु की दशा में भाग्योदय होगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु + सूर्य**–सूर्य शत्रुक्षेत्री होकर राहु के साथ होने से काफी दिक्कतें आयेंगी।
2. **राहु + चन्द्र**–यह युति जातक की उन्नति में सहायक है। जातक जन्मस्थान (घर) से दूर परदेश में कमायेगा।
3. **राहु + मंगल**–राहु, मंगल की युति उद्विग्नता देगी। जातक अनिश्चित निर्णय वाला, क्षण-प्रतिक्षण स्वभाव में गिरगिट की तरह रंग बदलने वाला, अविश्वासी होगा।
4. **राहु + बृहस्पति**–यहां बृहस्पति नीच का होगा। **'चाण्डालयोग'** जातक को उत्पीड़ित करेगा। भाग्योदय में घोर बाधाएं आयेगी।
5. **राहु + शुक्र**–जातक के पिता को कष्ट होगा।

7. **राहु + शनि**–राहु के साथ शनि होने से पिता का अरिष्ट होगा। राहु की युति से भाग्योदय में अकारण बाधाएं आती रहेंगी पर अन्तिम सफलता निश्चित है।

वृषलग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में



वृषलग्न में राहु लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां दशम भाव में स्थित राहु कुम्भ राशि का होगा। कुम्भ राशि राहु की स्वराशि कही गई है। ऐसे जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ तो होता है परन्तु कई बार अपमान का घूंट भी पीना पड़ता है। जातक को सामाजिक, आर्थिक एवं व्यवसायिक उन्नति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ता है।

निशानी–जातक धनवान व लम्बी आयु वाला होता है। परन्तु धन जन्मभूमि से दूरस्थ प्रदेशों में जाकर कमाता है।

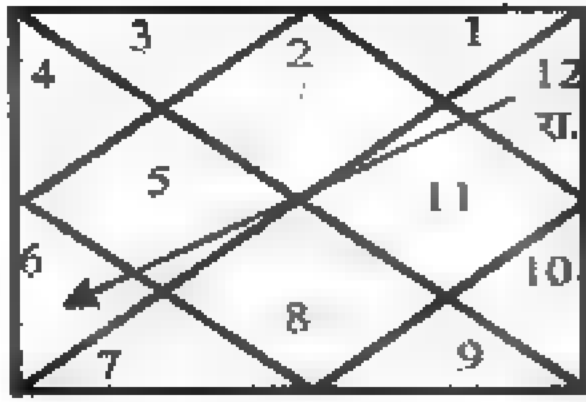
दशा–यदि कालसर्प योग न हो तो राहु की दशा अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु + सूर्य**–सुर्य राहु के साथ शत्रुक्षेत्री होने से जातक को राजपक्ष (अदालत) से दण्ड मिलता है।
2. **राहु + चन्द्र**–जातक वेश्यावृत्ति या गलत कार्यों में धन कमायेगा। भाईयों से कम बनेगी।
3. **राहु + मंगल**–जातक राजनीति में माहिर, अत्यधिक चालाक एवं नकारात्मक शक्ति से युक्त, ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होगा।
4. **राहु + बुध**–जातक विविध प्रकार के व्यापार में धन कमायेगा।
5. **राहु + बृहस्पति**–राहु के साथ गुरु होने में **'चाण्डाल योग'** बना। जातक को राजदण्ड (अदालत से सजा) मिलेगी।
6. **राहु + शुक्र**–राजनीति में सफलता मिलेगी। जातक पराक्रमी होगा।
7. **राहु + शनि**–यदि यहां राहु के साथ शनि हो तो जीवन में सफलताएं जल्दी प्राप्त होने लगती है।

वृषलग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में

वृषलग्न में राहु लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां एकादश भाव में राहु मीन राशि का है। मीन राशि राहु की प्रिय राशि नहीं है पर एकादश भाव में राहु राजयोग कारक



होता है। ऐसा जातक सन्तान से सुखी होता है तथा अनेक स्थानों से लाभ व सम्मान प्राप्त करता है। जातक अच्छा वक्ता होता है। कर्म-शास्त्रों का ज्ञाता होता है। जातक व्यक्तित्व आकर्षक होता है।

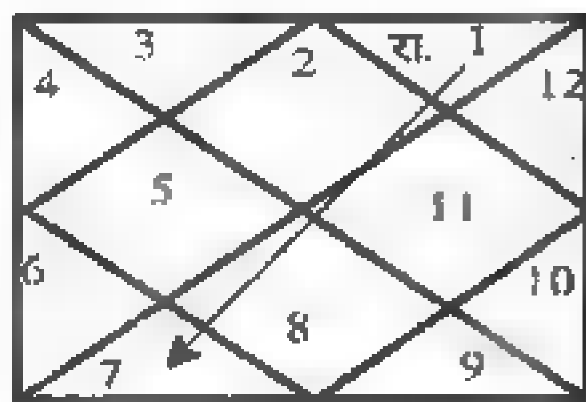
निशानी–जिसका भी साथ देगा उसे पूरा निभायेगा बीच में धोखा नहीं देगा।

दशा–यदि कुण्डली में कालसर्प योग न हो तो राहु की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु + सूर्य**–सूर्य राहु के साथ होने से जातक के व्यापार-व्यवसाय में कुछ न कुछ न्यूनता आती है।
2. **राहु + चन्द्र**–जातक को नेत्र-विकार सम्भव है। व्यापार में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे।
3. **राहु + मंगल**–मंगल, राहु जातक की सृजनात्मक ऊर्जा को बढ़ायेगा। जातक येन केन प्रकारेण लाभ प्राप्ति में रूचि लेगा।
4. **राहु + बुध**–जातक को गुप्त व्यापार से लाभ होता रहेगा पर गुप्त शत्रुओं से सावधान रहना होगा।
5. **राहु + बृहस्पति**–राहु के साथ गुरु होने से '**चाण्डाल योग**' बनेगा। जातक को निजी व्यापार-व्यवसाय अनेक दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।
6. **राहु + शुक्र**–शुक्र राहु की युति लाभ प्राप्ति में बाधक है।
7. **राहु + शनि**–राहु के साथ शनि होने पर राज्य द्वारा सम्मान में षड्यन्त्र होगा। सरकारी क्षेत्र में गुप्त व प्रकट शत्रु होंगे।

वृषलग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में



वृषलग्न में राहु लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां द्वादश स्थान में राहु मेष राशि का होगा। मेष राशि राहु की सम राशि है। ऐसा जातक निर्धन परिवार में जन्म लेकर भी ऊंची प्रतिष्ठा व पद को प्राप्त करता है। जीवन में अनेक बाधाएं आती हैं पर शत्रु जातक के उन्नति के मार्ग को रोक नहीं पाते। प्रायः जातक चिन्तातुर रहता है और नींद कम आयेगी।

निशानी–जातक प्रायः विदेशी वासी होता है अथवा अपने घर (जन्मस्थल) से दूर अपने देश में ही अन्यत्र रहता है।

दशा–यदि कुण्डली में कालसर्प योग न हो तो राहु की दशा अन्तर्दशा निकृष्ट फल देगी।

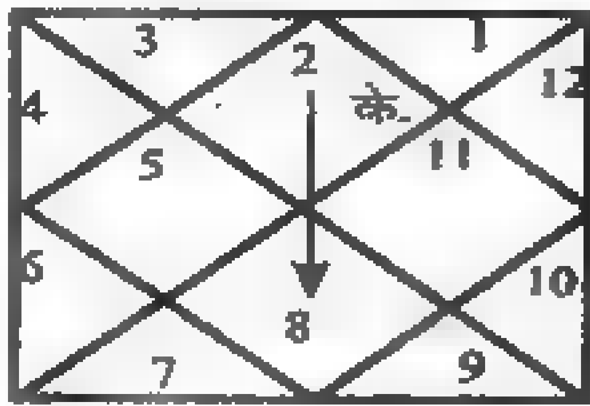
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु + सूर्य**–ऐसा जातक का शैय्या सुख कमजोर होगा। जातक को नींद कम आयेगी।
2. **राहु + चन्द्र**–चंद्रमा व राहु की युति में जातक चालाक, धोखेबाज, एवं अविश्वसनीय स्वभाव का होगा।
3. **राहु + मंगल**–राहु, मंगल की युति जातक को दम्भी, घमण्डी बनायेगी जातक षड्यन्त्रकारी योजनाओं में रुचि लेगा।
4. **राहु + बुध**–व्यर्थ यात्राओं में रूपया खर्च होगा। जातक को सन्तति सम्बन्धी कार्यों में धन खर्च करना पड़ेगा। जीवन में धन का अपव्यय होता रहेगा।
5. **राहु + बृहस्पति**–यहां पर बृहस्पति होने में **'चाण्डाल योग'** बनेगा। जातक व्यर्थ के कार्यों एवं फिजूल की यात्राओं में खूब पैसा खर्च करेगा। यात्रा में चोरी होगी।
6. **राहु + शुक्र**–जातक को वाहन दुर्घटना का भय रहेगा। मृत्यु कष्टपूर्ण होगी।
7. **राहु + शनि**–जातक की मृत्यु दर्दनाक होगी। दुर्घटना का भय रहेगा।

❑❑❑

वृषलग्न में केतु की स्थिति

वृषलग्न में केतु की स्थिति प्रथम स्थान में



राहु और केतु दोनों छायाग्रह है, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डर[redacted] व घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में लग्न[redacted] केतु अपनी नीच राशि वृष में होगा। जातक के पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करने की महत्वकांक्षा होगी। जातक प्रतिपल उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ने के लिए चेष्टावान रहेगा। जातक पिता या गुरु से मार्गदर्शन प्राप्त करता रहेगा।

निशानी – जातक पिता के साथ रहने वाला होगा अथवा भाईयों में बड़ा होगा।

दशा– केतु की दशा अन्तर्दशा व संघर्ष के बाद सफलता की द्योतक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

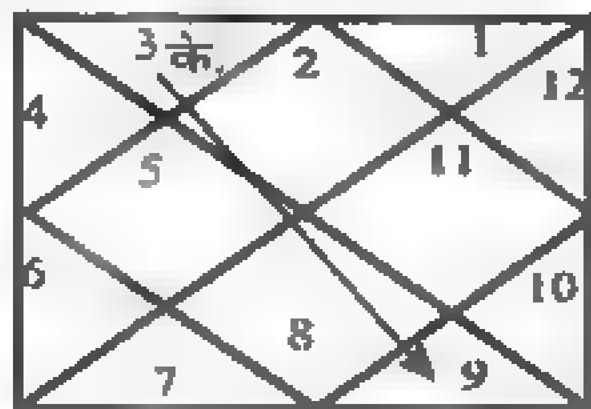
1. **केतु + सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को कष्टानुभूति देगा।
2. **केतु + चन्द्र**–उच्च के चंद्रमा के साथ केतु होने से राजयोग शक्तिशाली होगा।
3. **केतु + मंगल**–मंगल के साथ केतु होने से गृहस्थ सुख में मनोमालिन्यता आयेगी।
4. **केतु + बुध**–जातक धनवान होगा।

5. केतु + बृहस्पति–जातक धार्मिक होगा।

6. केतु + शुक्र–जातक कामी होगा।

7. केतु + शनि–जातक भाग्यशाली होगा।

वृषलग्न में केतु की स्थिति द्वितीय स्थान में



राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु है। पर राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र का शत्रु है। यहां पर द्वितीय स्थान में केतु मिथुन राशि का होगा। मिथुन राशि में केतु नीच का ही कहलायेगा। धनभाव में केतु होने से जातक को धन प्राप्ति की महत्वकांक्षा बहुत होगी। प्रायः रुपया आयेगा व खर्च होता चला जायेगा। जातक अपनी आर्थिक स्थिति को सुस्थिर-दृढ़ करने के लिए प्रतिपल चेष्टावान रहेगा। धनेश बुध की स्थिति इस कुण्डली वाले जातक की सही आर्थिक स्थिति को प्रकाशित करेगी।

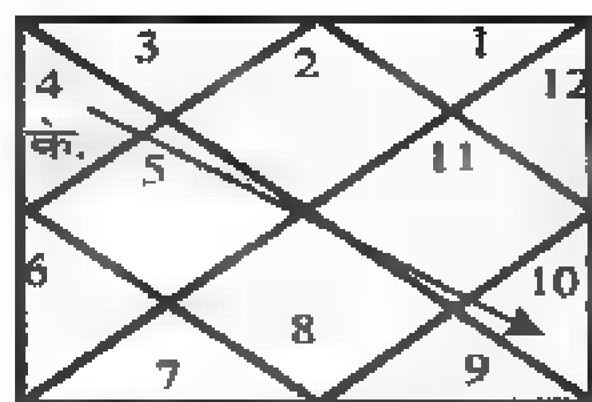
निशानी–छोटी आयु में कमाना सीखें।

दशा–केतु के दशा-अन्तर्दशा धन प्राप्ति हेतु संघर्ष की द्योतक है। यदि कुण्डल में कालसर्प योग बनता है। यह संघर्ष कष्टदायक होगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**–धन व सुख क प्राप्ति में सामान्य बाधाएं, रूकावटें आयेगी।
2. **केतु + चन्द्र**–मित्रों पर रूपया खर्च होगा। कर्ज की स्थिति आती रहेगी।
3. **केतु + मंगल**–जातक खर्च अधिक करेगा। आर्थिक तंगी रहेगी।
4. **केतु + बुध**–जातक धनी होगा पर धन के घड़े में छोटा छेद है, उसकी सुरक्षा करनी होगी।
5. **केतु + बृहस्पति**–वाणी में स्खलन रहेगा। कमाई धीमी गति से होगी।
6. **केतु + शुक्र**–परिश्रम से धन मिलेगा पर बीमारी में खर्च होगा।
7. **केतु + शनि**–जातक धनी एवं सौभाग्यशाली होगा।

वृषलग्न में केतु की स्थिति तृतीय स्थान में



राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रुभाव रखता है। यहां केतु तृतीय स्थान में कर्क राशि का है। कर्क राशि में केतु की शत्रु राशि है। यहां केतु ज्यादा उद्विग्न रहेगा। जातक भाई-बहन परिजनों से प्रेमभाव स्नेह-सम्बन्ध प्रगाढ़ बनाने हेतु लालायित रहेगा।

निशानी–ऐसा जातक नेकी को याद रखता है, बुराई को भूल जाता है।

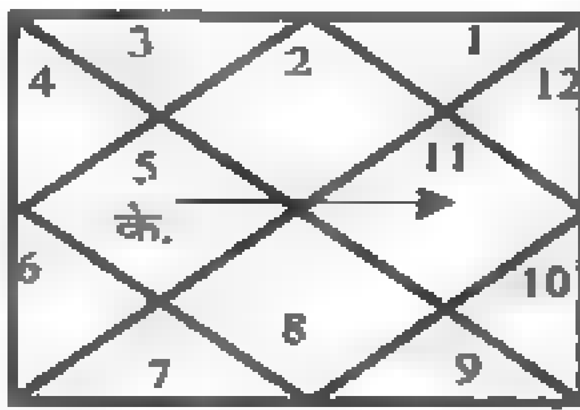
दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा में कीर्ति की वृद्धि होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**–जातक सुखी होगा, पराक्रमी होगा।
2. **केतु + चन्द्र**–मित्रों में यारी पूरी निभायेगा।
3. **केतु + मंगल**–खर्चीले स्वभाव का होगा। पत्नी (अन्य स्त्रियों) पर रूपया खर्च करेगा।
4. **केतु + बुध**–मित्रों व परिजनों के षड्यन्त्र का शिकार होगा।
5. **केतु + बृहस्पति**–व्यापार-व्यवसाय से लाभ कमाने वाला होगा।
6. **केतु + शुक्र**–पराक्रमी होगा। रोगी भी होगा।
7. **केतु + शनि**–मित्रों के सहयोग से भाग्योदय होगा। जनसम्पर्क अच्छा रहेगा।

वृषलग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व



घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। यहां चतुर्थ स्थान में केतु सिंह राशि में होगा। केतु यहां शत्रु राशि में होने से ज्यादा उद्विग्न रहेगा। ऐसे जातक का माता से, सासु माता या मौसी से मनमुटाव रहेगा पर जातक उनसे स्नेहपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने हेतु प्रतिपल लालायित रहेगा। जातक को भौतिक सुख-साधन ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। पिता से भी सम्बन्ध ज्यादा मधुर नहीं रहेंगे पर जातक अपनी ओर से सम्बन्ध मधुर करने के लिए सचेष्ट रहेगा।

निशानी–कुलपुरोहित को पूजने वाला।

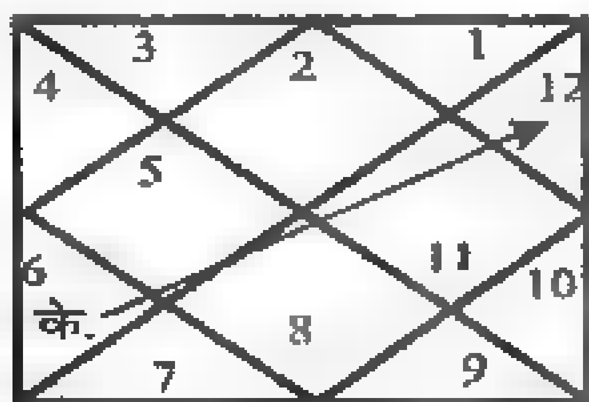
दशा–केतु की दशा – अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**–जातक का निजी मकान, भवन होगा। उत्तम होगा। खुद का वाहन भी होगा।
2. **केतु + चन्द्र**–जातक यार-मित्रों से निभायेगा। सुखी होगा।
3. **केतु + मंगल**–जातक भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति हेतु रूपया खर्च करेगा।
4. **केतु + बुध**–जातक धनी होगा। शिक्षित होगा। सन्तान भी शिक्षित होगी पर रूकावट के साथ आगे बढ़ेगी।
5. **केतु + बृहस्पति**–जातक धार्मिक होगा। व्यापार प्रिय होगा।
6. **केतु + शुक्र**–जातक परिवार वालों का विशेष ख्याल रखेगा। कुटुम्ब का रक्षक होगा।
7. **केतु + शनि**–जातक महाधनी होगा। एक से अधिक प्रकार के व्यापार करेगा।

वृषलग्न में केतु की स्थिति पंचम स्थान में

राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व



घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। केतु यहां पंचम स्थान में कन्या राशि का होगा। कन्या केतु की मूल त्रिकोण राशि है। जहां केतु हर्षित रहेगा। जातक विद्या प्राप्ति हेतु सचेष्ट रहेगा। जातक सही आर्थों में ज्ञान का पिपासु होगा।

निशानी–जातक प्रजावान होगा। अधिक सन्तति वाला होगा। जातक खुद अकेला भाई न होगा। मामा भी जातक के दो-तीन होंगे।

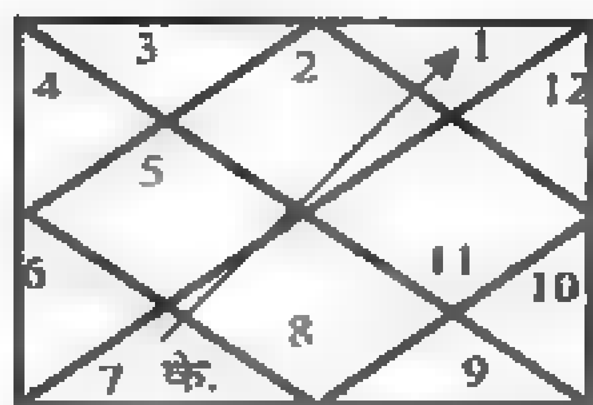
दशा–केतु की दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**–जातक के एक पुत्र होगा एवं कन्या सन्तति भी होगी। सूर्य की उपासना जातक के लिए फलवती होगी।
2. **केतु + चन्द्र**–प्रथम कन्या होगी। कन्या उत्पत्ति के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
3. **केतु + मंगल**–जातक को कन्या पुत्र दोनों की प्राप्ति होगी। गर्भपात भी होगा।
4. **केतु + बुध**–जातक महाधनी होगा। कन्या सन्तति अधिक होगी, अथवा प्रथम कन्या होगी।
5. **केतु + बृहस्पति**–जातक व्यापार-व्यवसाय के प्रचुर धन कमायेगा।
6. **केतु + शुक्र**–जातक परिश्रमी होगा एवं अपने पुरुषार्थ से आगे बढ़ेगा।
7. **केतु + शनि**–जातक महाधनी व भाग्यशाली होगा परन्तु भाग्य बत्तीसवें वर्ष में चमकेगा।

वृषलग्न में केतु की स्थिति षष्ट्म स्थान में

राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। राहु राक्षस का सिर हैं, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व



घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। केतु यहां छठे स्थान में तुला राशि का होगा। तुला राशि केतु की मित्र राशि है। ऐसा जातक शत्रु व रोग से भयग्रस्त रहेगा। स्वस्थ शरीर की कामना, निरोग रहने की भावना, दीर्घायु प्राप्ति की इच्छा प्रबल रहेगी। छठे भाव में पाप ग्रह ज्यादा अशुभ फल नहीं देते।

निशानी–जातक परदेश में रहने वाला होगा। उसे कुत्ते के या किसी अन्य जानवर के काटने का भय रहेगा।

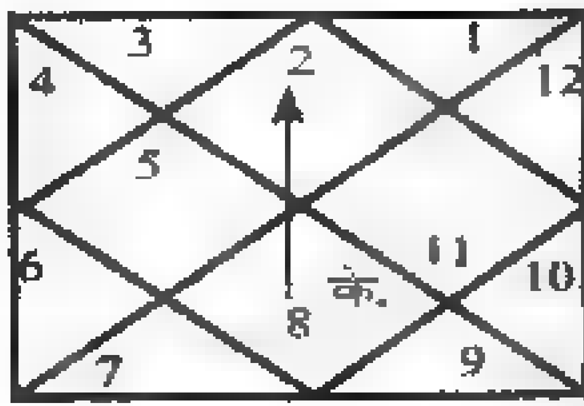
दशा–केतु की दशा मध्यम (मिश्रित) फलकारी होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**–जातक के माता-पिता बीमार रहेंगे।
2. **केतु + चन्द्र**–जातक के भाई जातक के प्रति उदासीन रहेंगे
3. **केतु + मंगल**–जातक का गृहस्थ जीवन सुखमय नहीं होगा।
4. **केतु + बुध**–जातक को प्रथम सन्तति हाथ नहीं लगेगी।
5. **केतु + बृहस्पति**–जातक का प्रथम सन्तति का गर्भ स्राव हो जायेगा। गुरु कृपा से, पूजा-पाठ से पुत्र होगा।
6. **केतु + शुक्र**–परिश्रम का वांछित लाभ नहीं मिलेगा। परिश्रम विशेष करना पड़ेगा।
7. **केतु + शनि**–भाग्योदय हेतु, आगे बढ़ने के लिए निरन्तर रूकावटों का सामना करना पड़ेगा।

वृषलग्न में केतु की स्थिति सप्तम स्थान में

राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। पर राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं



है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। केतु यहां सप्तम स्थान में वृश्चिक राशि का होगा। वृश्चिक राशि में केतु उच्च राशि का होता है। केतु की यह स्थिति जातक के जीवन में गृहस्थ सुख के प्रति ललक बढ़ायेगी। जातक कामी होगा। विषय-वासना, भोग-विलास, की इच्छा प्रतिपल रहेगी। काम सन्तुष्टि की तृप्ति की इच्छा बनी रहेगी पर काम के प्रति तृप्ति-सन्तुष्टि नहीं हो पायेगी।

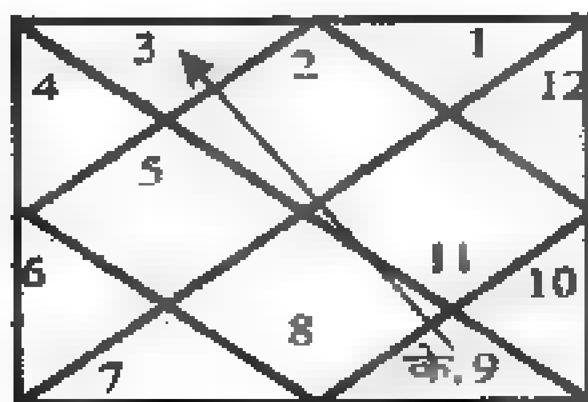
निशानी–जितने बहन भाई होंगे, उतनी सन्तानें होंगी।

दशा–केतु की दशा - अन्तर्दशा उन्नतिदायक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**–पत्नी के शरीर में रोग रहेगा। मानसिक अशान्ति रहेगी।
2. **केतु + चन्द्र**–जिससे प्रेम करेंगे वो स्त्री धोखा देगी। स्त्री से मित्रता हानिकारक रहेगी।
3. **केतु + मंगल**–पहली पत्नी का शोक, दूसरी भी रोगी होगी।
4. **केतु + बुध**–जातक धनी होगा। प्रज्ञावान होगा। ज्ञानी होगा। चेष्टावान होगा।
5. **केतु + बृहस्पति**–गृहस्थ सुख में कोई न कोई व्यवधान बना रहेगा।
6. **केतु + शुक्र**–दो स्त्रियों से सम्पर्क एक समय में रहेगा।
7. **केतु + शनि**–द्विभार्या योग, दूसरी पत्नी ठीक होगी।

वृषलग्न में केतु की स्थिति अष्टम स्थान में



राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व [redacted] है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक

है इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। केतु यहां अष्टम स्थान में धनु राशि का होगा। धनु राशि में केतु स्वगृही माना गया है। ऐसे जातक को शत्रु व रोग के प्रति भय बना रहेगा। स्वस्थ शरीर की कामना, निरोग रहने की भावना, दीर्घायु प्राप्ति की इच्छा प्रबल रहेगी।

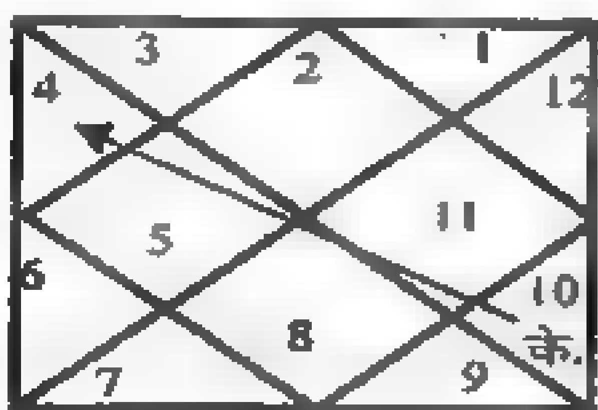
निशानी–द्विभार्या (दो विवाह) का योग प्रबल है। अथवा जातक का भाई निसन्तान होगा।

दशा–केतु की दशा – अन्तर्दशा अनिष्ट फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**–जातक को पिता का सुख कमजोर रहेगा। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा। नौकर वफादार नहीं होंगे।
2. **केतु + चन्द्र**–जातक को माता का सुख कमजोर रहेगा। भाई, बहन भी जातक के सहायक नहीं होंगे।
3. **केतु + मंगल**–जातक का गृहस्थ जीवन कलहपूर्ण होगा।
4. **केतु + बुध**–जातक की सन्तति जातक की आज्ञा में न होगी।
5. **केतु + बृहस्पति**–जातक गुप्त बीमारी, गुप्तरोग से ग्रसित होगा।
6. **केतु + शुक्र**–जातक के स्वयं के शरीर में रोग रहेगा। जातक के वीर्य का क्षरण होता रहेगा।
7. **केतु + शनि**–भाग्योदय हेतु, संघर्ष की स्थिति रहेगी।

वृषलग्न में केतु की स्थिति नवम भाव में



राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है। इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु

जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। केतु यहां नवम स्थान में मकर राशि का होगा। मकर राशि केतु की मूल त्रिकोण राशि है। जातक भाग्योदय के प्रति, उन्नति के प्रति, आगे बढ़ने के लिए बहुत लालायित चेष्टावान रहेगा। आगे बढ़ने के अवसर भी जीवन में मिलते रहेंगे।

निशानी–जातक पिता का आज्ञाकारी पुत्र होगा।

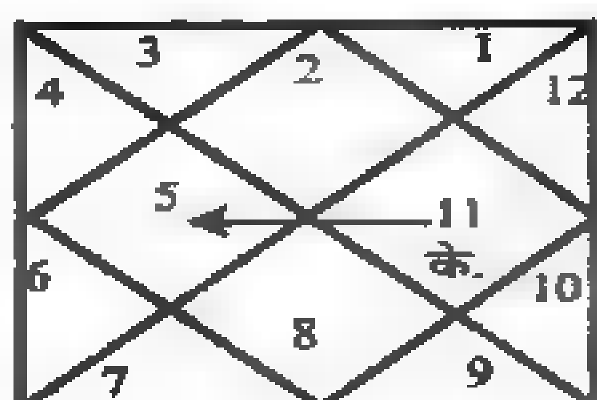
विशेष–तृतीय भाव (कर्क राशि) में शत्रु ग्रह हो तो विवाह के सात वर्ष बाद सन्तान होगी।

दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा भाग्योदय में सहायक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**–जातक सुखी एवं सम्पन्न व्यक्ति होगा।
2. **केतु + चन्द्र**–जातक के रिश्तेदार धनवान एवं शक्ति सम्पन्न होंगे।
3. **केतु + मंगल**–जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक का पराक्रम बढ़ेगा।
4. **केतु + बुध**–जातक सौभाग्यशाली होगा। महाधनी होगा। उत्तम सन्तति से युक्त सफल व्यक्ति होगा।
5. **केतु + बृहस्पति**–जातक के भाई-कुटम्बी होंगे पर जातक के साथ उनका व्यवहार सही नहीं होता।
6. **केतु + शुक्र**–जातक व्यापार प्रिय होगा। जातक को व्यापार में सफलता मिलेगी एवं अनेक प्रकार के व्यापार करेगा।
7. **केतु + शनि**–जातक राजा तुल्य पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली एवं शक्ति सम्पन्न होगा।

वृषलग्न में केतु की स्थिति दशम स्थान में



राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं है

अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है। इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। केतु यहां दशम स्थान में कुम्भ राशि का होगा। कुम्भ राशि केतु की मित्र राशि है। ऐसा जातक सरकारी नौकरी, राजकीय कार्य, ठेकेदारी वगैरा में रुचि रखेगा। समाज में, जाति में, राज्य-सरकार में, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु लालायित रहेगा।

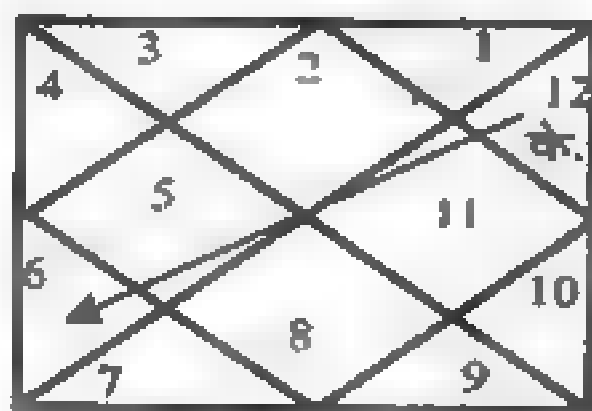
निशानी–जातक चुपचाप अपने रास्ते पर चलने वाला, चाल-चलन का नेक होगा।

दशा–केतु की दशा - अन्तर्दशा में जातक का व्यापार-व्यवसाय बढ़ेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**–जातक सभी प्रकार से सुखी एवं साधन सम्पन्न व्यक्ति होगा।
2. **केतु + चन्द्र**–जातक के कुटुम्बी (रिश्तेदार) प्रभावशाली होंगे।
3. **केतु + मंगल**–जातक का ससुराल प्रभावशाली एवं पराक्रमी होगा।
4. **केतु + बुध**–जातक की सन्तति प्रभावशाली एवं पराक्रमी होगी।
5. **केतु + बृहस्पति**–जातक व्यापार-व्यवसाय में उन्नति करेगा।
6. **केतु + शुक्र**–जातक कुटुम्ब - परिवार को तारने वाला एवं सामर्थ्यवान व्यक्ति होगा।
7. **केतु + शनि**–जातक इन्द्र तुल्य पराक्रमी, वैभवशाली एवं शक्ति सम्पन्न व्यक्ति होगा। जातक उद्योगपति होगा।

वृषलग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में



राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक है और सूर्य चन्द्र के शत्रु है। पर राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है। इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता

आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। केतु यहां एकादश स्थान में मीन राशि का होगा। मीन राशि केतु की स्वराशि है। ऐसा जातक व्यापार-व्यवसाय में आगे बढ़ने के प्रति चेष्टावान रहेगा। सरकारी क्षेत्र में, ठेकेदारी के कार्य में रुचि रखेगा। जातक धार्मिक कार्य, परोपकार के कार्य, जनसेवा के प्रति भी पूर्ण रुचि लेगा।

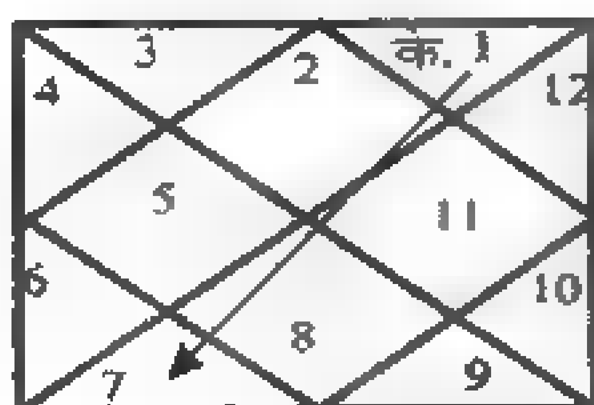
निशानी–नर सन्तान अधिक होगी।

दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा में जातक धनवान बनेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. केतु + **सूर्य**–जातक का राज्य (सरकार) किंवा राजनीति में प्रभाव रहेगा।
2. केतु + **चन्द्र**–जातक धार्मिक होगा। जातक पराक्रमी होगा।
3. केतु + **मंगल**–तीन पुत्र सन्तति होंगी। जातक अपने शत्रुओं को तबाह व बरबाद कर देगा।
4. केतु + **बुध**–कन्या योग कि बाहुल्यता। दो कन्या एक पुत्र योग है।
5. केतु + **बृहस्पति**–पांच पुत्रों का योग बनता है। जातक पराक्रमी होगा।
6. केतु + **शुक्र**–छः कन्याओं का योग बनता है। जातक प्रबल पराक्रमी होगा।
7. केतु + **शनि**–सात कन्याओं का योग बनता है। गुरु कृपा एवं ईश्वर आराधना से एक पुत्र सम्भव है। जातक भाग्यशाली होगा।

वृषलग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में



राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूछ अतः ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है इस सूक्ष्म अन्तर को हनें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। केतु यहां द्वादश स्थान में मेष राशि का होगा। केतु यहां अपने मित्र मंगल की राशि में होने शुभ फल देने वाला है। ऋण रोग व शत्रु से मुक्ति देने वाला, मोक्ष प्रदाता ग्रह का फल देगा। ऐसा व्यक्ति तीर्थ यात्रा करने हेतु परोपकार व धार्मिक कार्य में धन खर्च करने हेतु लालायित रहेगा।

निशानी–जातक को नर सन्तति अधिक होगी।

दशा–यदि अन्य दुष्टग्रह साथ न हो तो केतु की दशा शुभ फल देगी। केतु की दशा में जातक धनवान होगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**–जातक भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति में बाधा महसूस करेगा।
2. **केतु + चन्द्र**–जातक को परिजनों से लाभ नहीं होता।
3. **केतु + मंगल**–पत्नी से विवाद, ससुराल से अनबन रहेगी।
4. **केतु + बुध**–सन्तति को उन्नति की चिन्ता सताती रहेगी।
5. **केतु + बृहस्पति**–गुप्त रोग, गुप्त चिन्ता परेशान करती रहेगी।
6. **केतु + शुक्र**–जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
7. **केतु + शनि**–भाग्योदय हेतु जातक को काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

□□□

शुक्रवार व्रत कथा

शुक्रवार का उपवास शुक्र ग्रह की शांति हेतु किया जाता है, दूसरी ओर यह व्रत संतोषी माता के निमित्त सर्व मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए भी किया जाता है। शुक्रवार को मां संतोषी का भी वार कहा जाता है। इस व्रत को चाहे संतोषी मां को प्रसन्न करने के लिए किया जाए अथवा शुक्र ग्रह की शांति के लिए, यह दोनों ही स्थितियों में सर्व मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाला है।

शुक्र का तांत्रिक मंत्र—ॐ शुं शुक्राय नमः।

विधि विधान—शुक्रवार का व्रत अन्य व्रतों की अपेक्षा ब्रह्ममुहूर्त में किया जाता है। प्रातः काल सूर्योदय के पूर्व उठकर स्नानादि से निवृत्त हो पूर्व दिशा की ओर मुख करके शुक्र के तांत्रिक मंत्र से ग्यारह बार जाप करें। व्रत के पूजन व प्रसाद में सफेद वस्तुओं का पूजन करें। इस व्रत में खट्टी चीजें नहीं खानी चाहिए, तथा भोजन एक ही समय करना चाहिए।

व्रत कथा—एक समय की बात है कि एक नगर में कायस्थ ब्राह्मण तथा वैश्य जाति के तीन लड़कों में परस्पर गहरी मित्रता थी। उन तीनों मित्रों का विवाह हो गया था। ब्राह्मण तथा कायस्थ के लड़कों का गौना हो गया था परन्तु वैश्य के लड़के का अभी गौना नहीं हुआ था।

एक दिन कायस्थ के लड़के ने कहा कि हे मित्र तुम भी मुकलावा करके अपनी स्त्री को ले आओ। स्त्री के बिना घर अत्यधिक सूना लगता है। यह बात वैश्य के लड़के को अच्छी लगी।

वह कहने लगा कि मैं अभी जाकर मुकलावा लेकर आता हूं। ब्राह्मण के लड़के ने कहा कि मित्र तुम अभी अपनी स्त्री को लेने मत जाओ क्योंकि शुक्र अस्त हो रहा है। जब उदय हो जाए तब जाकर ले आना।

परन्तु वैश्य का लड़का अपनी जिद पर अड़ गया तथा किसी प्रकार से नहीं माना। उसके घरवालों ने भी उसे बहुत समझाया किंतु सबकी बातें अनसुनी करके वह अपनी स्त्री को लेने के लिए ससुराल चला गया।

उसको आया देखकर ससुराल वाले भी चकराए। दामाद का स्वागत सत्कार करने के बाद उन्होंने उसके आने का कारण पूछा। वैश्य पुत्र ने कहा कि मैं अपनी स्त्री को लेने के लिए आया हूं। ससुराल के व्यक्तियों ने भी उसे अनेक प्रकार से समझाया किंतु वह अपनी बात पर अडिग रहा।

जब वैश्य पुत्र नाना प्रकार से समझाने पर भी न माना तो ससुराल के व्यक्तियों को लाचार होकर अपनी पुत्री को विदा कर दिया। वैश्य पुत्र पत्नी को रथ में बिठाकर चल दिया। थोड़ी दूर जाने के बाद मार्ग में रथ का पहिया टूट गया तथा बैल का पैर भी टूट गया।

उसकी पत्नी भी गिरकर घायल हो गई तथा रास्ते में डाकुओं ने उनके वस्त्राभूषण छीन लिये। इस प्रकार अनेक कष्टों को सहते हुए वे पति-पत्नी घर पहुंचे तो घर आते ही वैश्य पुत्र को सर्प ने काट लिया। वैध ने भी कह दिया कि यह तीन दिन बाद मर जाएगा। जब उसके दोनों मित्रों को यह सूचना प्राप्त हुई तो उन्होंने कहा कि यदि वह पुनः अपनी स्त्री के साथ ससुराल जाए तथा शुक्रोदय पर लौटे तो निश्चय ही विघ्न टल जाएगा।

सेठ ने अपने पुत्र तथा वधू को तत्काल ही ससुराल पहुंचा दिया। वहां पर पहुंचते ही वैश्य पुत्र की मूर्छा दूर हो गई तथा वह साधारण उपचार के द्वारा ही स्वस्थ हो गया।

ससुराल वाले अति प्रसन्न हुए तथा वैश्य पुत्र अपनी ससुराल में स्वास्थ्य लाभ करता रहा इसके पश्चात् शुक्र उदय होने पर अपनी स्त्री को लेकर पुनः घर लौट गया।

अथ शुक्रवार की आरती

आरती लक्ष्मण बालजती की। असुर संहारन प्राणपति की।।
जगमग ज्योति अवधपुरी राजे। शेषाचल पर आप विराजे।।
घंटाताल पखावज बाजै। कोटि देव आरती साजै।।
क्रीट मुकुट कर धनुष विराजै। तीन लोक जाकि शोभा राजै।।
कंचन थार कपूर सोहाई। आरती करत सुमित्रा माई।।
प्रेम मगन होय आरती गावैं। बसि बैकुण्ठ बहुरि नहीं आवैं।।
भक्त हेतु हरि लाड़ लड़ावैं। जब घनश्याम परम पद पावैं।।

शुक्रस्तवराजः

अस्य श्रीशुक्रस्तवराजस्य प्रजापतिर्ऋषिः, अनुष्टुप् - छन्दः ।
शुक्रो देवता, शुक्रप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।।
नमस्ते, भार्गव श्रेष्ठ, दैत्य - दानव - पूजितः।
वृष्टि रोध प्रकंत्रे, च, वृष्टि कत्रे, नमो नमः।।
देवयानि, पितः तुभ्यम्, वेद वेदांग पारग।
परेण, तपसा, शुद्धः, शंकरः, लोक सुन्दरः।।
प्राप्तः, विद्यां, जीवनाख्यां, तस्मै, शुक्रात्मने नमः।
नमः, तसमै भगवते भृगु पुत्राय् वेधसे।।
तारा मण्डल, मध्यस्थ, स्व भासा - सित - अम्बर।
यस्य - उदये, जगत् - सर्वम्, मंगल - अर्ह, भवेत् - इह।।
अस्तम्, यः - ते, हिं-अरिष्टम्, स्यात् - तस्मै, मंगल रूपिणे।
त्रिपुरा - वासिनः, दैत्यान्, शिव - बाण - प्रपीडितान्।।
विद्यया, अजीवयः, शुक्रः, नमस्ते, भृगु नन्दन।
ययाति, गुरवे, तुभ्यम्, नमस्ते, कवि, नन्दन।।
बलि राज्य प्रदः जीवः, तस्मै, जीवात्मने, नमः।
भार्गवाय, मः, तुभ्यम्, पूर्व गीर्वाण वन्दितः।।
जीव पुत्राय्, यः, विद्याम्, प्रादात् तस्मै, नमः नमः।
नमः शुक्राय काव्याय्, भृगुपुत्राय्ः धीमहि।।
नमः, कारण रूपाय्, नमस्ते, कारणात्मने।
स्तवराजम् इमम्, पुण्यम्, भार्गवस्य, महात्मनः।।
यः, पठेत्, श्रेणुयात्, वा, अपि, लभते, वाञ्छितम्, फलम्।
पुत्रकामः, लभेत्, पुत्रान्, श्रीकामः, लभते श्रियम्।।
राज्य कामः लभेत् राज्यम् स्त्री कामः, स्त्रियम्, उत्तमाम्।

भृगूवारे, प्रयत्नेन, पठितव्यम्, समाहितैः।।
अन्य वारे, तु, होरायाम्, पूजयेत् भृगु नन्दनम्।
रोगार्तः, मुच्यते रोगात्, भयार्तः मच्यते भयात्।।
यत् - यत् प्रार्थयते, जन्तुः तत् - तत् प्राप्नोति सर्वदा।
प्रातः काले प्रकर्तव्या भृगु पूजा प्रयत्नत।।
सर्व पाप विनिर्मुक्त प्राप्नुयात् शिव सन्नि धिम्।।

नोट–सभी प्रकार के ऐश्वर्य तथा पूर्ण रति सुख प्राप्ति हेतु नित्य 108 पाठ करने चाहिए।

शुक्र मंत्र

अन्नात्परिस्रुत इति मंत्रस्य पराशरऋषिः शक्वरीछन्दः शुक्रोदेवता रसं ब्रह्मणो इति बीजं शुक्रपीत्यर्थे जपे विनियोगः ॐ पराशरऋषये नमः शिरसि १ॐ शक्वरी छन्दसे नमः इति मुखे २.ॐ शुक्रदेवतायै नमः हृदये ३. ॐ रसंब्रह्मा इति बीजाय नमः गुह्ये ४ इति ऋष्यादिन्यासः। 'ॐ अन्नातपरिस्रुतः' इत्यङ्गुष्ठाभयां नमः १ 'ॐ रसंब्रह्मणा व्यपिबत्' इति तर्जनीभ्यां नमः २. 'ॐ क्षत्रं पयः' इति मध्यामाभ्यां नमः ३. 'ॐ सप्रजापतिः' इत्यनामिकाभ्यां नमः ४. 'ॐ इति ऋष्यादिनन्यासः। 'ॐ अन्नातपरिस्रुतः' इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः १ 'ॐ रसंब्रह्मण व्यपिबत्' इति तर्जनीभ्यां नमः २ ' ॐ क्षत्रं पयः ' इति मध्यामायां नमः ३. 'ॐ सोमप्रजापतिः 'इत्यनामिकाभ्यां नमः ४. 'ऋतेनसत्यमिन्द्रयं विपानर्ठ, शुक्रमन्धसः 'इति कनिष्ठिकाभयां नमः ५. 'इन्द्रस्येन्द्रियमिदंपयोमृतंमधु' इति करतलकरपृष्ठाभयां नमः ६. इति करन्यासः।

'ॐ अन्नात्परिस्रुतः 'इति हृदयाम नमः १ ' ॐ रसब्रह्मणाव्यापिबत्' इति शिरसे स्वाहा २ ' ॐ क्षत्रंपयः' इति शिखायै वषट ३.' ॐ सोमंप्रजापतिः' इति कवचाय हुम ४' ' ॐ ऋतेन-सत्यमिन्द्रियं विपानर्ट. शुक्र मन्धसः इति नेत्रयायं वौषट् ५ ' ॐ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतंमधु' 'इत्यस्राय फट्' ६ इति हृदयादिन्यासः।

'ॐ अन्नात्परिस्रुतः 'ति शिरसि १ ॐ रसब्रह्मणा इति ललाटे २ 'ॐ व्यपिबतक्षत्रम्' इति मुखे ३ 'ॐ पयः सोमम्' इति हृदये ४ 'ॐ प्रजापतिः 'इत नाभौ ५ 'ॐ ऋतेन सत्यम्' इति कट्याम् ६ 'इन्द्रियं विपानम्' इति गुदे ७ ॐ शुक्रम्' इति वृषणयोः 'ॐ अंधस' इत्युर्वोः १ 'ॐ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयः ''इति जानुनोः ११ 'ॐ अमृतम्' इति पादयोः १ ' ॐ मधु' इति सर्वाङ्गे २ इति मंत्रन्यासं कृत्वा ध्यायेत्-ॐ श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी चतर्भुजौ दैत्यगुरूः प्रशान्तः।

तक्षाक्षसूत्रश्च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च विभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम १ इति ध्यात्वा जपेत्-ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसम्ब्रण व्यपिबत् क्षत्रवयः सोमं प्रजापतिः।

शुक्रः ध्यानम्–श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी चतुर्भुजों दैत्यगुरूः

प्रशान्तः तथा ऽससुत्रञ्च कमण्डलुश्च, दण्डश्च विप्रदवरदोऽस्तु मह्यम्॥

यह शुक्र परमतेजस्वी श्वेत वस्त्रों को धारण किये हुए हैं। श्वेत शरीर वाला है। श्वेत चमकीला मुकुट पहने हुए है। चार हाथ वाला है। दैत्यों का गुरु है शान्त है। रूद्राक्ष की माला पहने हुए है। हाथ में कमण्डल है, एक हाथ में दण्ड है। तत्काल वर देने वाला है। मुझे भी वरदायक फलदायक हो जावे। ऐसे तेजस्वी शुक्र का हम ध्यानपूर्वक आह्वान करते है।

आह्वान–

शुक्र हाटक नामाग्नि, समिधा–उदुम्बर

(उमटा) फल–खारक, मिश्री

सोमतुल्योदितिप्राज्ञो दानवानां च पुरोहितः त्राता च सर्वदैत्यानां शुक्रमावहयाम्यहम्॥1॥

भोभो भोजकटेजात शुक्रश्वेताश्ववाहनः। समागच्छश्चतुर्बाहु भृगुगात्रविभूषणः ॥2॥

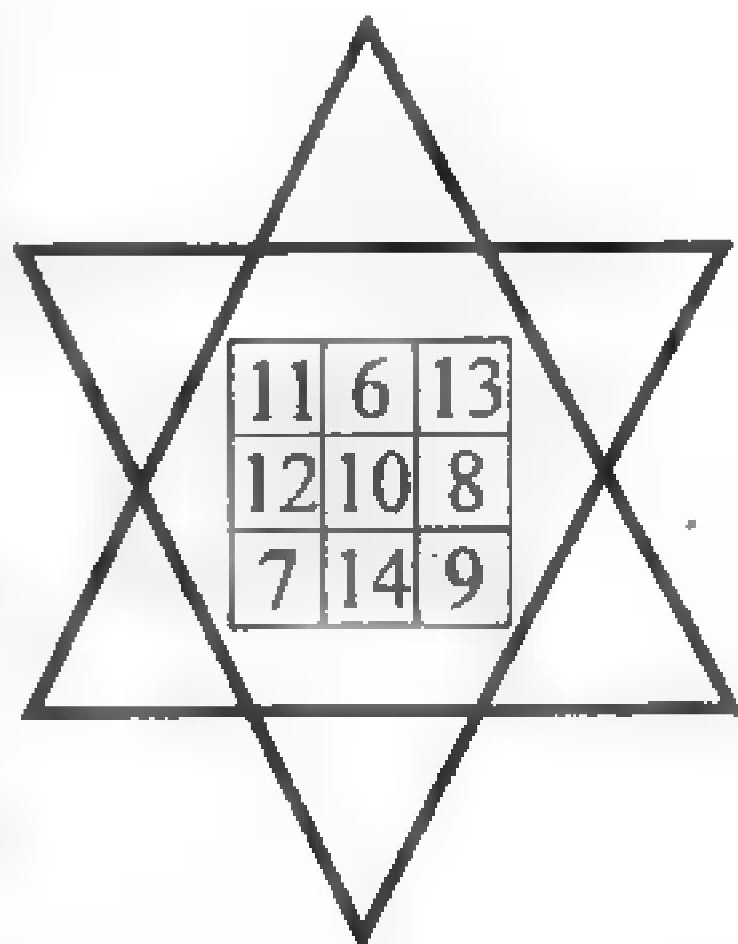
परिधाक्षा बलिहस्त कमण्डलु धरप्रदः। पूर्वपत्रेति शुक्रश्च प्राचयां शुक्रं निधापयेत्॥3॥

ॐ शुक्रज्योतिश्चचित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च।

ज्योतिष्मांश्च शुक्रश्च ऋतपाश्चातय ठं हा:॥17॥ 80॥

1. शुक्र ग्रह का वैदिक मन्त्र–ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसम्ब्रह्मणा व्यपि वत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ठं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु ॥19/75॥पूर्वे शुक्रं स्थापयामि–

2. शुक्र का यन्त्र–



3. तान्त्रिक मन्त्र–ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।' नमस्कार–

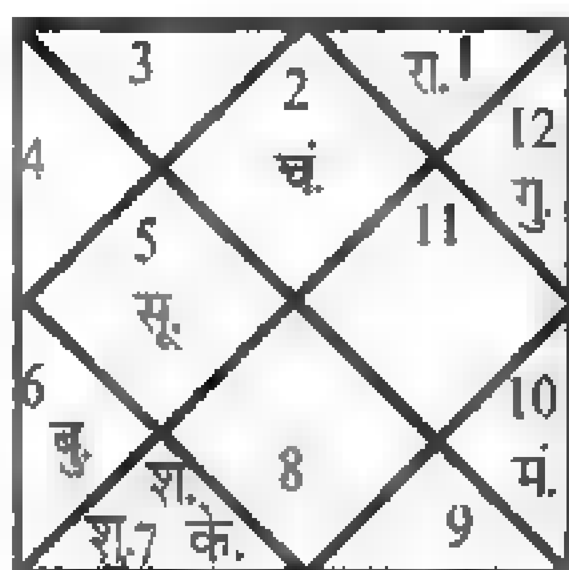
4. शुक्र गायत्री–ॐ भृगुवंशजाताय विद्महे श्वेतवाहनाय धीमहि तन्नः कविः प्रचोदयात्

विशेष–शुक्र के मन्त्रों के सोलह हजार (16,000) जाप से शुक्र प्रसन्न हो जाता है।

❑❑❑

दृष्टांत कुण्डलियां

भगवान श्रीकृष्ण





जन्म तिथि–ईसा से 5158 वर्ष पूर्व, भाद्रपद कृष्ण पक्ष अष्टमी, बुधवार रात्रि 12.00 जन्म नक्षत्र–रोहिणी, जन्म स्थान–नन्दगांव (मथुरा), उत्तर प्रदेश, जन्म समय– 12.00 रात्रि

चंद्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति और शनि यह पांच ग्रह उच्च के होने से राजयोग हुआ। शुक्र व सूर्य स्वगृही है। इस प्रकार सातों ग्रह उत्तरोत्तर श्रेष्ठ स्थिति में हैं।

नभश्चराः पंच निजोच्चसंस्था।

यस्य प्रसूतौ स तु सार्वभौम॥

–बृहद् योगरत्नाकर/पृ.66

भगवान श्रीकृष्ण चंद्र प्रधान होने के कारण षोडश कला अवतार थे। यह कुंडली भी इस बात को पुष्ट करती है। प्रायः जन्मपत्रिका के प्रारंभ में अनिष्ट निवारण एवं शुभदर्शन हेतु भगवान् श्रीकृष्ण की कुंडली प्रस्तुत की जाती है। इस कुंडली के पांचों पंच यहां पुरुष योग के साथ सभी प्रकार के राजयोग संयुक्त रूप से सम्मिलित हैं।

दूसरे घर का अधिपति पंचम में होने से वाणी में जादू था।

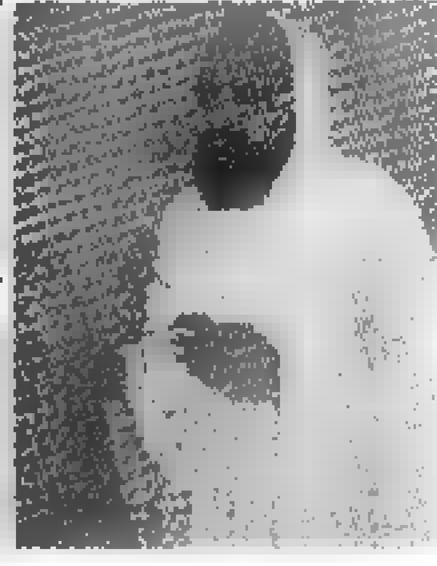
संत कबीर

3
2 चं.
1
12 बु. सू. रा. शु.
4 श. गु.
5
11 मं.
6 के.
8
10
7
9



जैनाचार्य विजय सूरी जी

3
2
1
12
4 गु.
5 के.
11 रा. सू.
6
8
10 शु. मं. बु.
7 चं. श.
9



मुंशी प्रेमचंद

3 के.
2 चं.
श. 1
12 गु.
4 शु. बु. सू.
5 मं.
11
6
8
10
7
रा. 9



आचार्य रजनीश

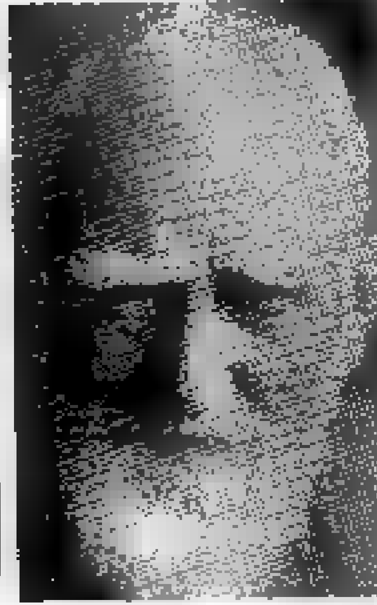
1	
2	
3	
4	गु.
5	
6	
7	के.
8	सू.
9	श. शु. मं. बु. चं.
10	
11	
12	रा.



जन्म तिथि–11.12.1921, जन्म स्थान–पूना, जन्म समय–17.15

जार्ज बर्नार्ड शॉ (नाटककार)

1	
2	चं.
3	श. बु.
4	शु. सू.
5	
6	के.
7	मं.
8	
9	
10	
11	
12	गु. रा.



जन्म तिथि–26.7.1856, जन्म समय–3.30 प्रातः जन्म स्थान डबलिन इंगलैण्ड

डोरोथी पार्कर

1	
2	
3	
4	बु. गु.
5	मं. सू.
6	श. के. शु.
7	
8	
9	चं.
10	
11	
12	रा.



सुप्रसिद्ध अमेरिकन कवियित्री

डॉ. जगदीशचन्द्र बोस (वैज्ञानिक)

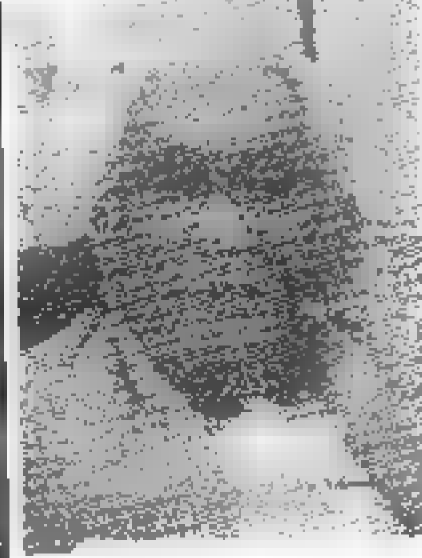
भाव	ग्रह
1	
2	गु.
3	
4	श.
5	के.
6	चं.
7	
8	सू.
9	शु. बु.
10	मं.
11	रा.
12	



जन्म तिथि-30.11.1858, जन्म समय-17.00, जन्म स्थान-पश्चिम बंगाल।

के. करुणाकरन

भाव	ग्रह
1	
2	के. चं. शु.
3	गु. बु. सू.
4	श.
5	
6	मं.
7	
8	रा.
9	
10	
11	
12	



जन्म स्थान-त्रिवेन्द्रम्, जन्म तिथि- 5.7.1918, जन्म समय-04.30

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी

भाव	ग्रह
1	के.
2	
3	सू.
4	बु. शु.
5	
6	मं.
7	रा.
8	
9	श. गु.
10	
11	चं.
12	



प्रमोद महाजन

3 2 स. 1
4 12
5 11
श.
6 मं. 10
चं. बु.
शु. सू. 8
7 के. गु. 9



जन्म तिथि-30.10.1948, जन्म समय-21.00, जन्म स्थान-हैदराबाद।

कु. हेलन केलर

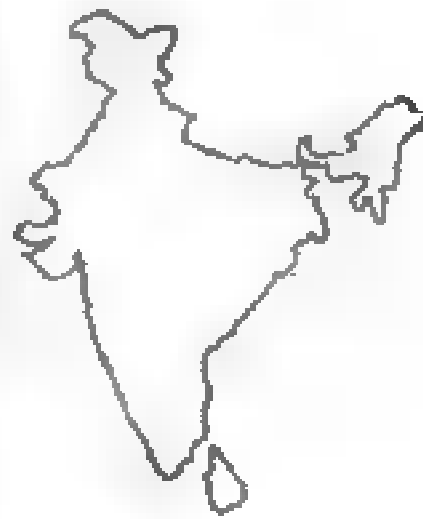
के. 3 सू. 2 श. 1
मं. शु. 12
4 बु. गु.
5 11
चं.
6 10
8
7 रा. 9



जन्म स्थान-अमेरिका, जन्म समय- 27.6.1988, जन्म समय-3.30 सुबह। अमे. सामा. कार्यकर्ता, जो जन्म के 19 माह से गूंगी, बहरी व अंधी हो गई थी।

स्वतंत्र भारत

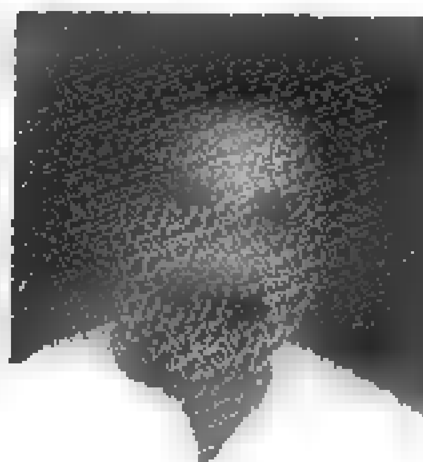
श. 3 मं. 2 1
चं. बु. 12
4 रा.
सू. 11
शु. 5
6 के. 10
8
7 गु. 9



समय-12.00, तिथि-15.8.1947, स्थान-दिल्ली। स्वतंत्र भारत की कुंडली में पूर्ण कालसर्प योग है।

आरिफ मोहम्मद खान

3
2
1
12 रा.
4
5
11 चं. गु.
6 श. के.
सू. शु. 8 बु.
10
7
मं. 9



जन्म स्थान-बुलन्दशहर, जन्म तिथि-18.11.1950, जन्म समय-18.15

विश्व कोकिला लता मंगेशकर

3
2 गु.
रा. 1
12
4 चं.
5 शु.
11
6 बु. सू.
के. मं. 7
8
श. 9
10



जन्म तिथि-28.9.1929, जन्म समय-23.00, जन्म स्थान-मुम्बई।

माइकल ऐंजलो एन्टोनी

3
2
चं. 1
12 रा.
4
5
11
6 सू. मं. बु. के.
गु. 8 श.
10
7 शु.
9



एक प्रसिद्ध अंग्रेजी फिल्म डायरेक्टर।

अभिनेता शत्रुघ्न सिन्हा

3 रा. | 2 | 1 | 12
4 मं. श. | 5 | 11
6 गु. | बु. शु. 8 सू. | 10 चं.
7 | 9



जन्म स्थान-पटना, जन्म तिथि-9.12.1945, जन्म समय-17.20

आशुतोष मुखर्जी

3 शु. सू. | 2 बु. | चं. के. 1 मं. | 12
4 | 5 | 11
6 श. | रा. 7 गु. | 8 | 9 | 10



जन्म तिथि-29.6.1864, जन्म समय-03.55, जन्म स्थान-कलकत्ता

उद्योगपति जे.आर.टाटा

3 मं. | 2 | गु. 1 | 12
शु. 4 बु. सू. | 5 रा. | 11 के.
6 | 8 | 10 श. चं.
7 | 9



जन्म स्थान-पेरिस, जन्म तिथि-27.07.1904, जन्म समय-12.39।

अभिनेत्री नर्गिस

3 2 रा. 1 12
4 5 11
श.
6 मं. 10
चं. बु.
शु. सू. 8
7 के. गु. 9



जन्म तिथि-1.6.1929, जन्म समय-05.52, जन्म स्थान-कलकत्ता। प्रसिद्ध अभिनेता सुनीलदत्त की धर्मपत्नी एवं संजयदत्त की माता, इनकी मृत्यु कैंसर के कारण 3.5.1980 को मुंबई में हुई।

सौरभ गांगुली

3 सू. 2 1
मं. शु. 12
4 बु. चं.
के. श. 11
5
6 10
8 रा.
7 गु. 9



जन्म तिथि-8.7.1972, जन्म समय-रात्रि 02.30, जन्म स्थान-कलकत्ता। 'बंगाल का टाईगर' नामक से विख्यात भारतीय टीम के कप्तान सौरभ गांगुली के पराक्रम भाव का स्वामी चंद्रमा उच्च राशि में स्वगृही शुक्र के साथ 'किम्बहुना योग' करके बैठा है। फलत: सौरभ की कीर्ति समग्र विश्व में अपनी सानी नहीं रखती।

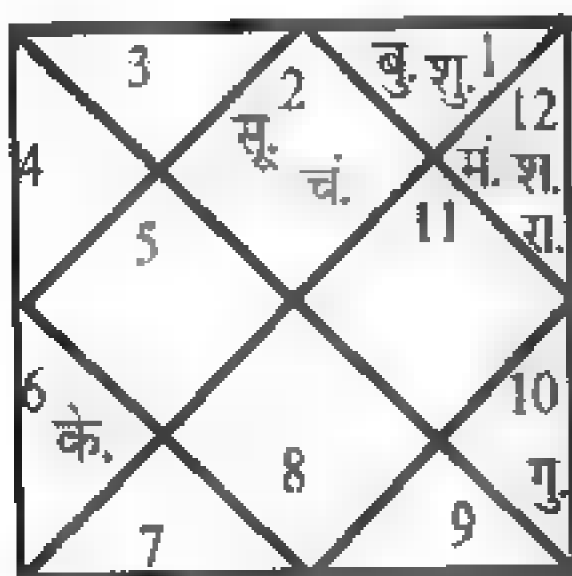
दिलीप कुमार

3 2 1
12
4 के.
5 11
चं. मं.
6 श. बु. 10
रा. शु. 8 सू.
7 गु. 9



जन्म स्थान-पेशावर (पाकिस्तान), जन्म तिथि-11.12.1922, जन्म समय - 16.001 पद्मनामक कालसर्पयोग तीन पत्नियों के होते हुए भी संतान नहीं।

महारानी विक्टोरिया

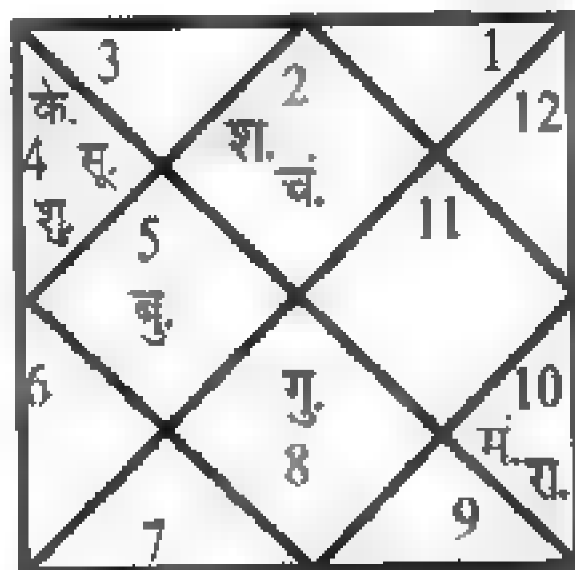




जन्म तिथि-24.5.1819, जन्म समय-4.04, जन्म स्थान-लंदन।

जातकतत्त्व श्लोक 118 पृ. 307 के अनुसार किसी कुंडली में सुखेश यदि सप्तम स्थान को छोड़कर अन्य केंद्र-त्रिकोण स्थान में गया तो **'बलवान् रोजयोग'** होता है। इस कुंडली में सुखेश सूर्य लग्न में उच्च के चंद्रमा के साथ बैठा है। गुरु भाग्य भवन में बैठकर पूरी ताकत से लग्न को देख रहा है। लग्नेश शुक्र स्वगृहाभिलाषी है। लाभ स्थान में मंगल स्वगृहाभिलाषी है। वहीं भाग्येश एवं दशमेश, शनि, गुरु के घर में गुरु-शनि ने घर में जाकर परस्पर स्थान परिवर्तन कर उत्तम राजयोग की सृष्टि की है। क्वीन विक्टोरिया का सिक्का ब्रिटिश राज्य में अमिट छाप छोड़ गया परंतु पंचम भाव पाप पीड़ित, पंचमेश द्वादश में होने से उनकी सन्तानें, उनकी गरिमा को कायम न रख सकीं।

मनीषा कोईराला





भारतीय फिल्मी दुनिया के क्षेत्र मे 'एम' (M) अक्षर से है प्रारंभ होने वाले नामों ने शुरू से ही बहुत तहलका मचा रखा है जैसे माधुरी, मीनाकुमारी, मधुबाला,

मुमताज, महिमा, मुकेश, महमूद, मोहम्मद रफी, महेन्द्र कपूर, माईकल जैक्सन, मनीषा भी इसमें अपवाद नहीं है।

16 अगस्त 1971 को काठमाण्डो (नेपाल) के राजपरिवार में मनीषा का जन्म वृषलग्न के अन्तर्गत हुआ। नेपाल के उत्थान एवं पतन में कोइराला परिवार की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि मनीषा के पांच चाचा है तथा यह विचित्र संयोग है कि पांचों चाचा नेपाल के प्रधानमंत्री पद पर आसन रह चुके हैं। यह दुनिया का अद्‌भुत आश्चर्य है एवं गिनिज बुक ऑफ रिकार्ड में इसका उल्लेख भी है। मनीषा उत्तम राजपरिवार में जन्मी एवं फिल्मी दुनिया में उतरी।

फिल्मी दुनिया में पदार्पण राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत हुआ। शुक्र ही मनीषा की कुण्डली में सबसे आश्चर्यजनक योग है। चन्द्र एवं शुक्र का परस्पर स्थान परिवर्तन योग। लग्नेश शुक्र चंद्रमा के घर मे ही पराक्रमेश चन्द्र उच्च का शुक्र के घर मे है यही से इन्हें अद्वितीय सुन्दरता, एवं सर्वोच्च कुशल अभिनेत्री के संयोग बनें।

मनीषा के सप्तम भाव में बृहस्पति स्वगृहाभिलाषी है। यह लग्न को देख रहा है फलतः मनीषा में अपने मूल वतन नेपाल के प्रति देशप्रेम कुट-कूट कर भरा हुआ है। वे परोपकारी भी है, दयालु भी है। इसका कारण यह बृहस्पति जो कुलदीपक योग एवं गजकेसरी जैसे उत्कृष्ट योगों की सृष्टि कर रहा है।

मनीषा की कुण्डली में एक और बहुत महत्वपूर्ण घटना यह है कि भाग्य का स्वामी मंगल उच्च का है। मंगल नेतृत्व शक्ति का स्वामी है। इसकी दृष्टि व्ययभाव, धनभाव एवं पराक्रम भाव में है। फलतः मनीषा खर्चीली स्वभाव की होगी, नशे करने वाली होगी, धन खूब कमायेगी एवं इनका बड़ा भारी नाम फिल्मी दुनिया में होगा। चूंकि सप्तमेश होकर मंगल उच्च मनीषा प्रेम विवाह करेगी पति करोड़पति-अरबपति होगा। विवाह विदेश में होगा, इस बात की संभावना अधिक है क्योंकि मंगल व्ययभाव (विदेश स्थान) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। मनीषा को राहु मे शुक्र की दशा ने अद्वितीय सफलता दी। सौदागर फिल्म से एक के बाद एक लगातार उत्तम फिल्में उन्हें मिलती रही और वे सफलता की बुलन्दियों को छूती रहीं।

26 नवम्बर, 2002 से कुछ प्रतिकूल समय की शुरूआत हुई जिसका प्रभाव 26 दिसम्बर 2002 तक रहेगा। गुरु में केतु कीर्ति को भंग करेगा। मनीषा अपनी नई फिल्म 'छोटी सी लव स्टोरी' के रीलीज के साथ ही उलझ गई। उसे राजनेताओं से लेकर अदालत के दरवाजे खटखटाने पड़े। उसकी व्यक्तिगत जीवन पर आरोप-प्रत्यारोप लगे। मनीषा की मानसिक शांति भंग हुई इसका सारा दोष केतु की अन्तर्दशा और शनि की साढ़े साती को जाता है। यह कुछ ऐसा ही समय है जो संजय दत्त एवं सलमान खान के जीवन में आया।

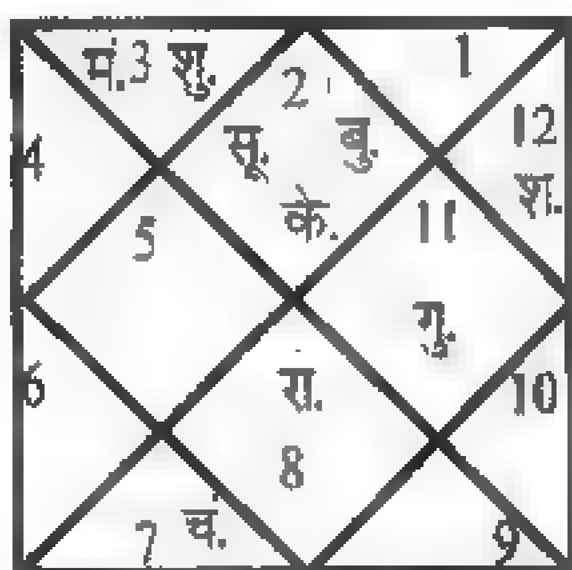
शनि के हिसाब से 2 अप्रैल 2003 तक शनि का गोचर मनीषा के लिए

मानसिक शांति भंग करने वाला एवं अशुभ रहेगा क्योंकि शनि की साढ़े साती इस समय तीसरे चरण पर होगी। मनीषा को सस्ती लोकप्रियता एवं व्यर्थ के विवादों से बचकर रहना चाहिए।

अंकविद्या के हिसाब से भी इनका भाग्यांक 7 एवं मूलांक 6 है। आने वाला वर्ष 2003 का मूलांक पांच है। मूलांक पांच का स्वामी बुध है जबकि सात का वरूण जो पांच का शत्रु है। फलतः यह वर्ष 2003 विवादास्पद रहेगा एवं चुनौतियों से भरा वर्ष होगा जबकि 2004 का मूलांक 6 होने से उत्तम उपलब्धियां भरा वर्ष होगा।

इस समय ये पुनः एक नई चेतना-शक्ति के रूप में फिल्मी चित्रपट पर उभरकर आयेगी। इन्हीं दिनों 3.7.2004 तक गुरु में शुक्र का अन्तर इन्हें अद्वितीय सफलता की ओर ले जायेगा। इन्हें विशेष रूप से शुद्ध हीरे से जड़ा हुआ शुक्र यंत्र धारण करना चाहिए। यह शुक्र ही इनके भाग्य के सितारे को बुलन्दी की ओर ले जायेगा।

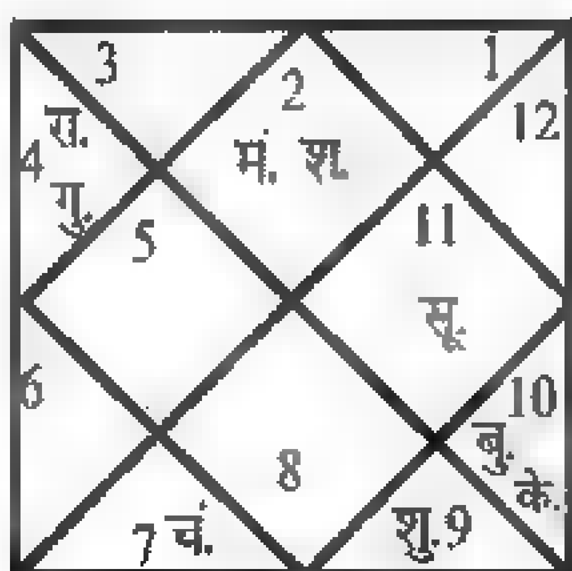
उद्योगपति राहुल बजाज





जन्म स्थान-कलकत्ता, जन्म तिथि-10.6.1930, जन्म समय-5.10

उद्योगपति नुस्ली वाडिया





जन्म तिथि-15.2.1944, जन्म समय-13.30, जन्म स्थान-मुम्बई।

मार्टिन लूथर

3
2 मं. रा.
गु. 1
12
4
5
11 चं. शु.
6
के. 8
10 सू. बु.
7
श. 9



जन्म तिथि-15.1.1929, जन्म समय-14.30 प्रातः, जन्म स्थान-अमेरिका। यह नीग्रो राजा लूथर है। जिसकी 4.4.1964 में हत्या हो गई।

टॉनी ब्लेयर

3 के.
2 मं. बु.
सू. 1
12 शु.
4 गु.
5
11
6
10
8
श. 7 चं.
रा. 9



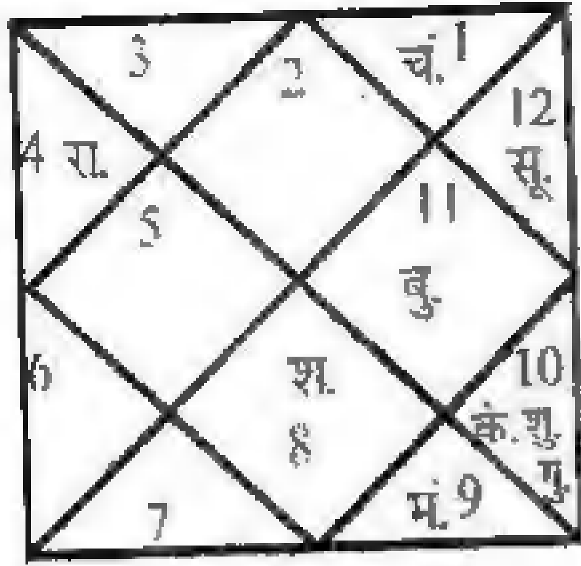
प्रधानमंत्री ब्रिटेन, जन्म तिथि-6.5.1955, जन्म स्थान-लंदन।

राजकवि मैथिलीशरण गुप्त

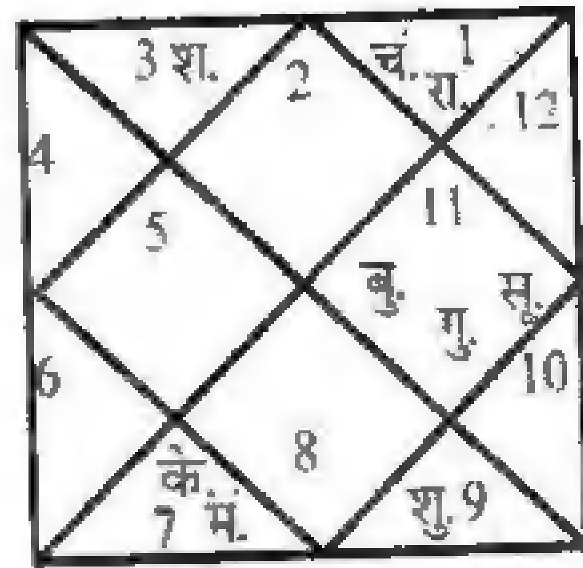
3 शु. श.
2
1
12
4 सू.
5 रा. बु.
11 के.
6 मं. गु. चं.
10
8
7
9



डोंगरे महाराज

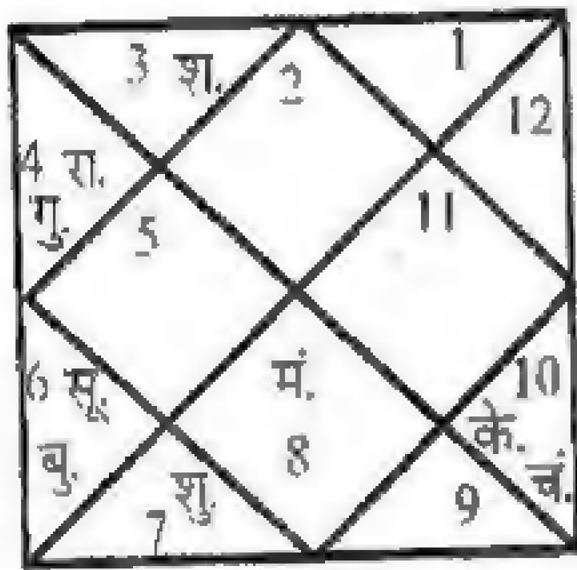


बी. सूर्यनारायण (ज्योतिषाचार्य)

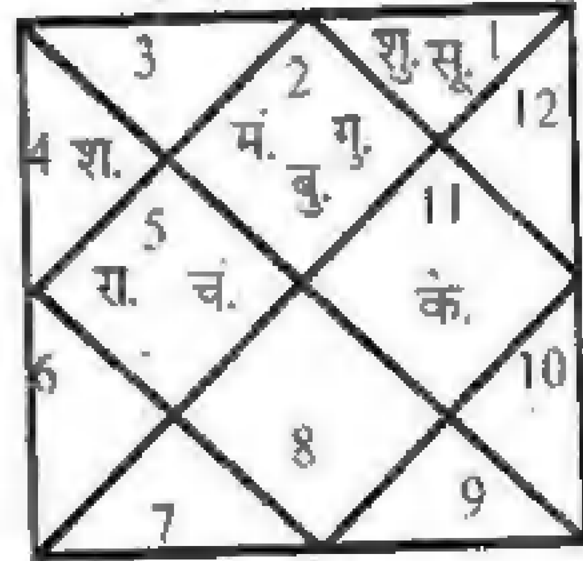


जन्म तिथि-12.2.1856, जन्म समय-दोपहर 12.30, जन्म-बैंगलोर

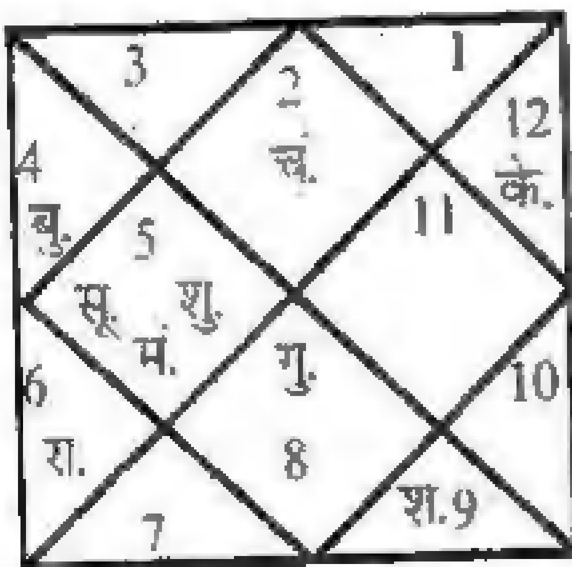
भक्तकवि दयाराम



पं. रामाचार्य

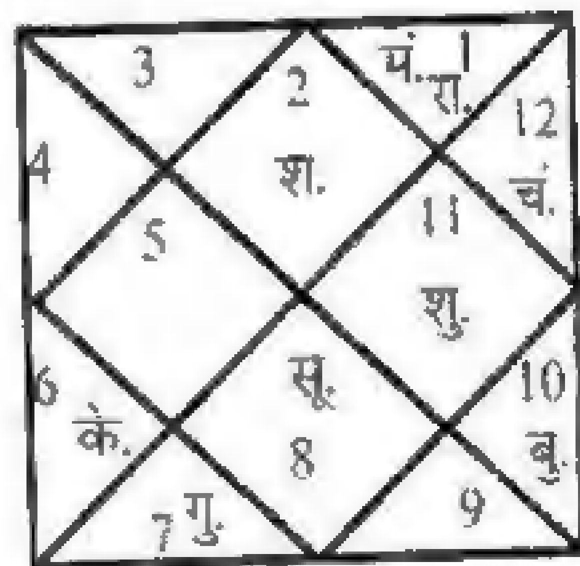


कु. प्रज्ञाभारती



प्रखर वक्ता एवं तेजस्वी संन्यासिन, शिष्या स्वामी सत्य मित्रानन्द गिरि हरिद्वार (उत्तर प्रदेश)

गोभक्त वीर जुगराज बोहरा



व्यक्ति बाल ब्रह्मचारी रहा। समाजसेवी एवं राजनीति में भी सक्रिय रहा।

पं. हरदेव शर्मा त्रिवेदी

3 बु. चं. सू. 4 शु. 5 गु. 2 रा. 1 12 11 6 के. 8 7 10 मं. श. 9

मीर गुलाम अलीखान

3 2 रा. 1 12 चं. 4 5 मं. 11 6 गु. बु. सू. के. शु. 7 8 10 श. 9

राजा विष्णु सिंह

3 2 मं. 1 12 श. 4 रा. 5 11 शु. 6 गु. चं. 8 7 9 10 सू. के. बु.

महाराजा त्रेवेन्कोर

3 2 गु. 1 12 रा. 4 श. 5 शु. मं. 11 6 के. सू. बु. 7 8 10 चं. 9

पूंजीपति रामकृष्ण डालमिया

3 2 मं. गु. रा. 1 12 शु. श. बु. 4 5 11 6 श. 7 के. 8 10 चं. 9

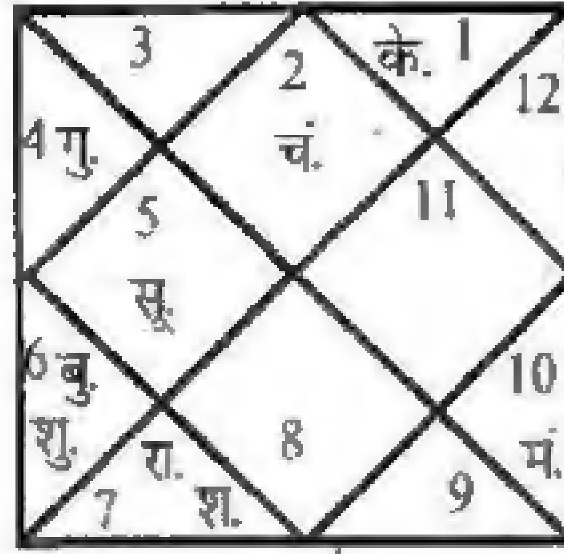
जन्म तिथि-सन् 1909, इस्ट-30.04, जन्म स्थान-नरसिंह गढ़। धनेश बुध उच्च के शुक्र के साथ 'नीचभंग राजयोग' करके बैठा है। भाग्येश शनि उच्चाभिलाषी होकर केन्द्र-त्रिकोण संबंध स्थापित करके 'कुबेर योग' बना रहा है।

महारानी दरभंगा

3 2 गु. 1 12 रा. 4 श. 5 मं. शु. 11 6 के. बु. सू. 7 8 10 चं. 9

जन्म तिथि-25.9.1857।

संत ज्ञानेश्वर



जन्म संवत-1332 माह-श्रावण कृष्ण अष्टमी, रोहिणी नक्षत्र, जन्म समय-रात्रि 12.00

चंद्रमा, मंगल, बुध और बृहस्पति उच्च होने से राजयोग हुआ। उच्च का गुरु उच्च का बुध, उच्च का मंगल-तीन ग्रह उच्च के, सूर्य स्वग्रही-इन चार ग्रहों के प्रभाव से यह कुंडली '**अंशावतार योग**' की कुंडली बनती है। यह कुंडली भगवान् श्रीकृष्ण की कुंडली से काफी अंशों में समानता लिए हुए है। क्योंकि संत ज्ञानेश्वर को श्री कृष्ण भगवान का ही अवतार या स्वरूप माना गया है।

❑❑❑